हिन्दी आलोचना साहित्य

Course Code: M23HD02DE

Discipline Specific Elective Course
Postgraduate Programme in
Hindi Language and Literature
Self Learning Material

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

हिन्दी आलोचना साहित्य

Course Code: M23HD02DE

Semester-III

Discipline Specific Elective Course
MA Hindi Language and Literature
Self Learning Material

(with Model Question Paper Sets)

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

उपन्यास एवं कहानी

Course Code: M23HD02DE
Semester- III
Discipline Specific Elective Course
MA Hindi Language and Literature
for PG Programmes

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

Academic Committee

Dr. Jayachandran R.
Dr. Pramod Kovvaprath
Dr. P.G. Sasikala
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. R. Sethunath
Dr. Vijayakumar B.
Dr. B. Ashok

Development of Content

Dr Majida M.
Dr Shenuja Mol

Review and Edit

Dr. Radhika R.

Linguistics

Dr. Reshma P.P.

Scrutiny

Dr. Sudha T.
Dr. Indu G. Das
Dr. Krishna Preethy A.R.
Christina Sherin Rose K.J.

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Jobin J.

Co-ordination

Director, MDDC :
Dr. I.G. Shibi
Asst. Director, MDDC :
Dr. Sajeevkumar G.
Coordinator, Development:
Dr. Anfal M.
Coordinator, Distribution:
Dr. Sanitha K.K.

Scan this QR Code for reading the SLM on a digital device.

Edition:
January 2025

Copyright:
© Sreenarayanaguru Open

ISBN 978-81-985080-3-4
9 788198 508034

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.m

Visit and Subscribe our Social Media Platforms

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. Major universities across the country typically employ a format that serves as the foundation for the PG programme in Hindi Language and Literature. Given Hindi's status as a widely spoken language throughout India, its pedagogy necessitates a particular focus on language skills and comprehension. To address this, the University has implemented an integrated curriculum that bridges linguistic and literary elements. The learner's priorities determine the endorsed proportion of these elements. Both the Self Learning Materials and virtual modules are designed to fulfil these requirements.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P.

01-05-2025

Contents

BLOCK 01 हिन्दी आलोचनाः स्वरूप और विकास..... 02

इकाई 1: हिन्दी आलोचनाः स्वरूप और विकास, आलोचना की परिभाषा, सफल आलोचना के भेद, आलोचक के गुण..... 03

इकाई 2: हिन्दी साहित्य में प्रचलित आलोचना की प्रणालियाँ, सैद्धांतिक आलोचना, स्वच्छंदतावादी आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना..... 15

इकाई 3: भारतेन्दु युग की हिन्दी आलोचना - भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट..... 22

इकाई 4: द्विवेदी युगीन हिन्दी आलोचना - महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकुन्द गुप्त, श्याम सुंदरदास, मिश्रबंधु..... 28

BLOCK 02 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनका युग..... 36

इकाई 1: शुक्लजी और उनका युग- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, गुलाबराय, बाबू श्यामसुंदरदास, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी 37

इकाई 2: स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना- जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा..... 44

इकाई 3: ऐतिहासिक समीक्षा- हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ रामकुमार वर्मा, शांतिप्रिय द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी 52

इकाई 4: सैद्धांतिक समीक्षा-गुलाबराय, नयी समीक्षा, यथार्थवाद, बिंबवाद, प्रतीकवाद..... 58

BLOCK 03 मनोविश्लेषणात्मक पद्धति और नगेन्द्र..... 65

इकाई 1: मनोविश्लेषणात्मक पद्धति और नगेन्द्र..... 66

इकाई 2: मार्क्सवादी समालोचना पद्धति रामविलास शर्मा, शिवदान सिंह चोहान..... 74

इकाई 3: हिन्दी में कथा समीक्षा - मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, नामवर सिंह, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, कृष्णदत्त पालीवाल 81

इकाई 4: नई समीक्षा-मिथक, फंतासी, कल्पना, प्रतीक, बिंब..... 97

BLOCK 04 समकालीन हिन्दी आलोचना..... 105

इकाई 1:आधुनिक साहित्य और नयी कविता के आलोचक-नामवर सिंह, इन्द्रनाथ मदान, मुक्तिबोध..... 106

इकाई 2: बच्चन सिंह, अज्ञेय..... 114

इकाई 3: मलयज, रमेश कुंतल, नेमीचंद्र जैन..... 119

इकाई 4: मैनेजर पांडेय, सुधीश पचौरी..... 126

MODEL QUESTION PAPER SET..... 133

BLOCK 01

हिन्दी आलोचनाः स्वरूप और विकास

Block Content

Unit 1: हिन्दी आलोचनाः स्वरूप और विकास, आलोचना की परिभाषा, सफल आलोचना के भेद, आलोचक के गुण

Unit 2: हिन्दी साहित्य में प्रचलित आलोचना की प्रणालियाँ, सैद्धांतिक आलोचना, स्वच्छंदतावादी आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना

Unit 3: भारतेन्दु युग की हिन्दी आलोचना- भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट

Unit 4: द्विवेदी युगीन हिन्दी आलोचना - महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकुन्द गुप्त, श्याम सुंदरदास, मिश्रबंधु

इकाई 1

हिन्दी आलोचना: स्वरूप और विकास, आलोचना की परिभाषा, सफल आलोचना के भेद, आलोचक के गुण

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी आलोचना के स्वरूप को समझता है
- हिन्दी आलोचना के महत्व को समझता है
- आलोचना के विभिन्न परिभाषाओं को जानता है
- हिन्दी आलोचना में प्रचलित प्रणालियों से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

अन्य गद्य विधाओं के समान आलोचना साहित्य का भी आरंभ भारतेंदु युग में हुआ है। इस समय प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं से आलोचना साहित्य का वास्तविक आरंभ हुआ था। इससे पहले संस्कृत काव्यशास्त्र को आधार बनाकर रीतिकाल में कुछ रीति ग्रन्थ लिखे गए थे। लेकिन हिंदी आलोचना का विकास संस्कृत काव्यशास्त्र की परंपरा से नहीं हुआ बल्कि पाश्चात्य समीक्षा साहित्य से प्रेरणा ग्रहण करके हुआ। भारतेंदु युग में आलोचना केवल निंदा स्तुति तक सीमित रह गई थी। इसके बाद पं.महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रयत्न से हिंदी आलोचना का स्वरूप सुव्यवस्थित बन गया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने हिंदी आलोचना को शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक धरातल प्रदान किया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

गुण दोष विवेचन, आलोचना शब्द की व्युत्पत्ति, आलोचना का विकास, शुक्ल पूर्व आलोचना, शुक्ल युगीन आलोचना, शुक्लोत्तर युगीन आलोचना, आलोचना की परिभाषा, आलोचना के भेद, आलोचक के गुण

Discussion / चर्चा

1.1.1 हिन्दी आलोचना का स्वरूप

किसी रचना का समग्र रूप से विश्लेषण एवं मूल्यांकन करना आलोचना है। अर्थात आलोचक रचना के किसी एक पक्ष पर ध्यान देने के बजाय रचना के सभी पक्षों को उजागर करता है। प्राचीन काल की आलोचना में केवल गुण दोष विवेचन किया जाता था, लेकिन वर्तमान संदर्भ में आलोचना का क्षेत्र विकसित हो गया है। आज वह केवल गुण दोष विवेचन तक सीमित नहीं रह गया है। आलोचक गुण दोष विवेचन के साथ ही साथ रचना की विशेषताओं एवं उपलब्धियों पर विचार करता है, उसके अभावों का मूल्यांकन करता है, तत्कालीन अन्य रचनाओं से उसकी तुलना करता है और प्रत्येक काल विशेष में रचित रचनाओं में उसका स्तर निर्धारित करने का काम भी करता है। साथ ही रचना की बारीकियों को पाठकों के सामने उद्घाटित करता है, रचना की उत्कृष्टता या दोष पर निर्णय प्रकट करता है, पाठक और रचना के बीच की दूरी को कम करता है तथा सभी सूक्ष्म तंतुओं से उसे परिचित कराता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि आलोचना रचनाकार और पाठक के बीच की कड़ी है। पाठक रचना से अधिक आलोचना को पढ़कर आस्वादन कर पाता है। इसलिए आलोचक को पाठक और रचयिता के बीच की सेतु मान सकते हैं। भक्तिकाल के उदय की व्याख्या को लेकर साहित्येतिहासकारों में मत वैभिन्न देखा जाता है।

▶ किसी रचना का गुण दोष विवेचन करना आलोचना है।

1.1.2 'आलोचना' शब्द की व्युत्पत्ति

'आलोचना' शब्द 'लुच' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'देखना'। लुचधातु से बने 'लोचन' के साथ 'आ' प्रत्यय जोड़ने पर 'आलोचना' शब्द बना जिसका अर्थ है 'वस्तु या पदार्थ को चारों ओर से समग्र रूप से देखना'। 'आलोचना' के लिए अंग्रेजी में 'क्रिटिसिज्म' शब्द का प्रयोग होता है। Criticism शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द Kritikos से बना है जिसका अर्थ है 'विवेचन करना या निर्णय लेना'। आलोचना के लिए हिन्दी में 'समालोचना' और 'समीक्षा' शब्दों का भी प्रयोग होता है। 'समालोचना' शब्द का अर्थ है 'संयक रूप से देखना, जानना और परखना'। अर्थात साहित्यिक कृति का निष्पक्ष होकर व्याख्या और मूल्यांकन करना समालोचना है। 'समीक्षा' शब्द का अर्थ है सम दृष्टि से देखना। अर्थात किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना देखना और विवेचन करना 'समीक्षा' है। इस प्रकार आलोचना, समालोचना, और समीक्षा इन तीनों शब्दों की व्याख्या करें तो इनका अर्थ एक जैसा ही निकलता है। लेकिन गहराई से देखने पर इन तीनों में अंतर है। साहित्य के क्षेत्र में कृति को निष्पक्ष दृष्टि से उसके गुण-दोषों को उजागर करना, स्वतंत्र रूप से अपना अभिमत व्यक्त कर पाठकों के समक्ष कृति को रखना ही आलोचना, समालोचना या समीक्षा है।

▶ आलोचना के लिए हिन्दी में 'समालोचना' और 'समीक्षा' शब्दों का भी प्रयोग होता है।

1.1.3 आलोचना का विकास

- संस्कृत साहित्य में आलोचना का मुख्य उद्देश्य काव्य की गुणवत्ता का निर्धारण करना था।

आधुनिक हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं की तरह आलोचना का आरंभ भी भारतेंदु युग में ही हुआ है। इससे पहले आलोचना का स्वरूप संस्कृत काव्यशास्त्र में मिलता था। संस्कृत में आलोचना के लिए टीका, व्याख्या, काव्य-सिद्धान्तनिरूपण, भाष्य आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता था। इस काल में आलोचना का मुख्य उद्देश्य काव्य की गुणवत्ता का निर्धारण करना था। इससे आधुनिक आलोचना विधा के बीज अंकुरित हुए जो आगे चलकर भारतेंदु युग में आलोचना के रूप में विकसित हुआ। आज हिंदी आलोचना का स्वरूप काफी विकसित हो चुका है।

- सूरदास की 'साहित्य लहरी' और नंददास की 'रसमंजरी' संस्कृत साहित्य को आधार बनाकर लिखित आलोचनाएँ हैं।

भक्तिकाल में भी आलोचना केवल काव्यगत गुण-दोषों तक ही सीमित थी। तत्कालीन आलोचना टीकाओ के रूप में मिलता है। जैसे 'मानस' की विविध टीकाएँ, कृष्ण साहित्य की पद्यानुबद्ध विवरणात्मक आलोचनाएँ आदि। सूरदास की 'साहित्य लहरी' और नंददास की 'रसमंजरी' संस्कृत साहित्यग्रंथों को आधार बनाकर लिखित आलोचनाएँ हैं। लेकिन इसमें नायिका भेद के स्थान पर कृष्ण-प्रेम ही व्यक्त होता है। नाभादास के 'भक्तकाल' में समीक्षात्मक कथन मिलते हैं। लेकिन इसका प्रमुख उद्देश्य भक्त कवियों के चरित्रों को व्यक्त करना है।

- रीतिकाल में 'बिहारी सतसई' की टीकाओं, कुलपति मिश्र, श्रीपति, चिंतामणी और सोमनाथ द्वारा लिखी गई वचनिका-वार्ता, तिलक आदि में आलोचना का रूप मिलता है।

रीतिकाल में लक्षण-ग्रन्थों के रूप में रस, अलंकार, छंद, नायक-नायिका भेद आदि में समालोचना का रूप मिलता है। संस्कृत से चली आई साहित्यशास्त्र की परंपरा रीतिकालीन कवियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी। रीतिकालीन आचार्यों ने साहित्यशास्त्र की रचना भी की और उसका पालन भी किया। केशव, चिंतामणि, मतिराम, देव, बिहारी आदि ने अलंकार और रस को प्रमुखता दी। 'बिहारी सतसई' की टीकाओं, कुलपति मिश्र, श्रीपति, चिंतामणी और सोमनाथ द्वारा लिखी गई वचनिका-वार्ता, तिलक आदि में आलोचना का रूप देखने को मिलता है। हिंदी में वार्ता-ग्रंथों, भक्तमालों और उनके टीका-ग्रंथों के रूप में आलोचना की जो प्राचीन परंपरा मिलती है। रीतिकाल में केशवदास की 'कविप्रिया' और 'रसिकप्रिया' में काव्यशास्त्र प्रणाली को आधार बनाया है। फिर भी इनमें सूक्ष्म आलोचना का अभाव मिलता है। आलोचना का वास्तविक विकास आधुनिक काल में विभिन्न साहित्यिक आंदोलनों के सूत्रपात और विकास के साथ हुआ है।

आधुनिक हिंदी आलोचना के विकास को तीन कालों में बाँटा जा सकता है-

1. शुक्ल पूर्व आलोचना
2. शुक्ल युगीन आलोचना
3. शुक्लोत्तर आलोचना

1.1.3.1 शुक्ल पूर्व आलोचना

शुक्ल पूर्व आलोचना को भारतेंदु युग और द्विवेदी युग में बाँटा जा सकता है।

1.1.3.1.1 भारतेंदु युगीन आलोचना

▶ 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगज़ीन', 'हिन्दी प्रदीप', 'भारत मित्र', 'ब्रह्मण', 'आनंद कादम्बिनी' आदि पत्रिकाओं में समीक्षाएँ प्रकाशित होती थी।

हिंदी साहित्य में आलोचना का आरंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र (सन् 1850-85) से माना जाता है। इसी समय की पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अन्य गद्य विधाओं के साथ हिंदी आलोचना के नए और आधुनिक रूप का जन्म हुआ। इस काल की आलोचना पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों, टिप्पणियों और निबंधों से विकसित हुई है। भारतेंदु द्वारा सम्पादित 'कविवचन सुधा' और 'हरिश्चन्द्र मैगज़ीन' में समीक्षा के स्तम्भों में पुस्तकों की समीक्षाएँ प्रकाशित होती रहती थीं। 'हिन्दी प्रदीप', 'भारत मित्र', 'ब्रह्मण', 'आनंद कादम्बिनी' आदि में भी पुस्तकों की समीक्षाएँ प्रकाशित होती थी जिससे इस विधा को गति मिली। यद्यपि आरंभ में ये समीक्षाएँ परिचयात्मक एवं साधारण कोटि की थीं तो भी धीरे-धीरे उनमें परिष्कार आ गया।

▶ भारतेंदु को आधुनिक हिंदी साहित्य का प्रथम आलोचक मानते हैं।

भारतेंदु युग की प्रमुख साहित्यिक विधा नाटक थी और आलोचना का प्रारंभ भी नाटक की विवेचना से हुई। भारतेंदु ने अपने 'नाटक' नामक लेख में नाटक पर विचार करते समय उसकी प्रकृति, समसामयिक जीवन रुचि, स्वाभाविकता, यथार्थता और प्राचीन नाट्यशास्त्र की उपयोगिता तथा नए नाटकों की आवश्यकता का जो विवेचन किया, उसे हिंदी आलोचना का प्रथम उन्मेष मानना चाहिए। इसलिए भारतेंदु को हिंदी साहित्य का प्रथम आलोचक माना जा सकता है। भारतेंदु के कार्य को बद्री नारायण चौधरी 'प्रेमघन'और बालकृष्ण भट्ट ने आगे बढाया।

1.1.3.1.2 द्विवेदी युगीन आलोचना

▶ द्विवेदी युग में 'सरस्वती', 'माधुरी', 'वीणा', 'विशाल भारत', 'साहित्य समालोचक', 'मर्यादा' आदि पत्रिकाओं में समीक्षाएँ प्रकाशित होती थी।

हिंदी आलोचना के विकास में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान सराहनीय है। उन्हीं का अनुकरण करते हुए द्विवेदी युग के अन्य लेखक भी आलोचना की ओर अग्रसर हुए। द्विवेदी युगीन हिंदी आलोचना में धीरे-धीरे अधिक तर्क शक्ति, विचार क्षमता और विवेचना शक्ति आ गई। भारतीय और पाश्चात्य साहित्य सिद्धांतों के अध्ययन और चिंतन के फलस्वरूप उनकी आलोचना दृष्टि वैज्ञानिक होने लगी। दिवेदी युग में हिंदी आलोचना की कई महत्वपूर्ण पद्धतियाँ विकसित हुई। इस युग में 'सरस्वती' के अतिरिक्त 'माधुरी', 'वीणा', 'विशाल भारत', 'साहित्य समालोचक', 'मर्यादा' आदि पत्रिकाओं ने आलोचना के विकास में पर्याप्त योगदान दिया। द्विवेदी युग के अन्य प्रमुख आलोचक थे - मिश्र बंधु, पं. पद्म सिंह शर्मा 'पं. कृष्ण बिहारी मिश्र आदि। इन सारे आलोचकों के प्रयास से हिन्दी आलोचना का काफ़ी विकास हुआ।

1.1.3.2 शुक्ल युगीन आलोचना

▶ हिंदी साहित्य का इतिहास' और 'चिंतामणि' शुक्ल जी के प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथ हैं।

हिंदी आलोचना को आलोचना शास्त्र के रूप में व्यवस्थित और समृद्ध करने का श्रेय आचार्य रामचंद्र शुक्ल को है। आचार्य शुक्ल ने सैद्धांतिक आलोचना को भारतीय साहित्य चिंतन परम्परा और पाश्चात्य साहित्य परम्परा के समन्वय से समृद्ध किया। उन्होंने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' और 'चिंतामणि' के निबंधों के साथ ही सूरदास, जायसी और तुलसीदास के काव्य की व्यवस्थित मूल्यांकन की। शुक्लजी ने उपन्यासों और कहानियों पर भी विचार किया। उन्होंने अपने समकालीन लेखकों से सामाजिक-राष्ट्रीय जीवन का चित्रण करने का आग्रह किया। उनके सहवर्ती आलोचकों में विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, कृष्ण शंकर शुक्ल, बाबू गुलाब राय, पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी, आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय आदि प्रमुख है।

1.1.3.3 शुक्लोत्तर युगीन आलोचना

शुक्लोत्तर आलोचना विविध पद्धतियों और अलग-अलग दिशाओं में अग्रसर हुए। अब तक चली आ रही आलोचनात्मक पद्धतियों से हटकर मार्क्सवादी आलोचना, दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक आलोचना, शैलीवैज्ञानिक आलोचना और नई आलोचना जैसी नवीन पद्धतियों का विकास हुआ। अब आलोचना केवल कविता-केंद्रित आलोचना न रहकर उपन्यास, कहानी, नाटक, रंगमंच, निबंध, रेखाचित्र आदि सभी गद्य विधाओं को साथ लेकर बढ़ने व पनपने लगी। इस काल में आलोचना को आगे ले जाने का चुनौतीपूर्ण कार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी और डॉ नगेन्द्र ने की। इन तीनों के अलावा डॉ देवराज और अज्ञेय भी इस समय के प्रमुख आलोचक थे। इस प्रकार विभिन्न विचारधाराओं एवं पद्धतियों को अपनाते हुए हिन्दी आलोचना आगे बढ़ती जा रही है।

▶ नन्ददुलारे वाजपेयी, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी और डॉ. नगेन्द्र शुक्लोत्तर युग के प्रमुख आलोचक थे

1.1.4 आलोचना की परिभाषा

अनेक विद्वानों ने 'आलोचना' को परिभाषित करने का प्रयास किया है। उनमें कुछ निम्नलिखित है-

▶ भारतीय विद्वानों के अनुसार दिया गया परिभाषा

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार- 'साहित्य जीवन की व्याख्या है और आलोचना साहित्य की व्याख्या है।'

डॉ. श्याम सुंदर दास के अनुसार- 'साहित्य क्षेत्र में ग्रंथ को पढ़कर उसके गुणों और दोषों का विवेचन करना और उस संबंध में अपना मत प्रकट करना आलोचना है।'

डॉ. श्याम सुंदर दास की और एक परिभाषा यों है- 'साहित्य को यदि हम जीवन की व्याख्या मानें तो आलोचना को उस व्याख्या की व्याख्या मानना पड़ेगा।'

बाबू गुलाबराय के शब्दों में- 'साहित्य और साहित्यकार के रहस्य को उद्घाटित करना आलोचना है।'

आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार-'सत्य, शिवं, सुंदरम का समुचित अन्वेषण, पृथक्करण और अभिव्यंजना ही आलोचना है।'

डॉ. भगीरथ मिश्र के अनुसार- 'आलोचक का कार्य कवि और उसकी कृति का यथार्थ मूल्य प्रकट करना है।'

भारतीय विद्वानों के अलावा पाश्चात्य आलोचकों ने भी आलोचना को परिभाषित किया है-

Encyclopaedia Britannica – "Criticism is the art of judging the qualities and values of an aesthetic object whether in literature or the fine arts."

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार- 'आलोचना का अर्थ वस्तुओं के गुण-दोषों

की परख करना, चाहे वह परख साहित्यिक क्षेत्र की हो अथवा ललित कला के क्षेत्र की।'

आई.ए रिचर्डस ने मूल्य निर्धारण को आलोचना की प्रमुख विशेषता मानते हुए कहा- "Criticism evaluates literary experiences after judicious analysis."

अर्थात 'आलोचना साहित्यिक अनुभूतियों के विवेकपूर्ण विवेचन के उपरांत उसका मूल्यांकन करती है।'

मैथ्यू आर्नल्ड ने आलोचना का मुख्य गुण 'तटस्थता' के आधार पर आलोचना को परिभाषित करते हुए कहा है- "The quality of real criticism is that it should display intellectual ability with complete impartiality."

अर्थात 'वास्तविक आलोचना में यह गुण रहा करता है कि उसमें समग्र निष्पक्षता से बौद्धिक सामर्थ्य का प्रदर्शन किया जाए।'

टी.एस. इलियट के अनुसार- 'आलोचना का उद्देश्य किसी वस्तु के मूल्य का निर्णय करना है।'

▶ पाश्चात्य आलोचकों के द्वारा दिया गया परिभाषा

मिडिल्टन मरे के शब्दों में- 'कला जीवन की सजगता है तथा आलोचना कला की सजगता है।'

एडिसन ने कहा है 'समालोचक का धर्म कलाकारों का दोष निकालना नहीं है, बल्कि उनका कर्तव्य है उनकी कृति का सौंदर्योद्घाटन करना।'

ड्राइडन के अनुसार' आलोचना वह कसौटी है जिसकी सहायता से किसी रचना का मूल्यांकन किया जाता है। वह उन विशेषताओं का लेखा प्रस्तुत करती है जो साधारण तथा किसी सभ्रांत पाठक को आनंद प्रदान कर सकें।'

▶ आलोचना के माध्यम से किसी कृति का मूल्यांकन कर सकते हैं

इन परिभाषाओं की ओर दृष्टिपात करने पर कह सकते हैं कि आलोचना के माध्यम से किसी कृति का मूल्यांकन कर सकते हैं तथा उस पर निर्णय प्रदान कर सकते हैं। किसी साहित्यिक कृति को पढ़कर हमारे मन में उस कृति के प्रति क्या विचार उत्पन्न होता है उसका प्रस्फुटन आलोचना के माध्यम से होता है। आलोचक न केवल उस कृति के गुण दोषों का विवेचन करता है बल्कि उसकी विशेषताओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है। आलोचना एक ऐसा माध्यम है जो साहित्य और पाठक के संबंध को सामान्य भावभूमि पर प्रतिष्ठित करता है तथा साहित्य को समझने का मार्ग प्रदर्शित करता है।

1.1.5 आलोचना के भेद

1.1.5.1 शास्त्रीय आलोचना (Classical Criticism)

इस आलोचना के अंतर्गत आलोचक काव्य शास्त्र के नियमों को आधार

▶ शास्त्रीय आलोचना में काव्यशास्त्र के सिद्धान्तों की कसौटी पर कृति की आलोचना करता है।

बनाकर आलोचना करता है। अर्थात प्राचीन आचार्यों द्वारा निर्धारित किए गए शास्त्रीय लक्षणों के आधार पर कृति की आलोचना करता है। आलोचना की इस प्रणाली में आलोचक न तो व्याख्या करता है और न ही अपने मन पर पड़े प्रभावों को प्रस्तुत करता है। वह व्यक्तिगत रुचि को कृति के मूल्यांकन का आधार नहीं बनाता, अपितु काव्यशास्त्र के सिद्धान्त की कसौटी पर किसी कृति की जांच परख करता है।

1.1.5.2 निर्णयात्मक आलोचना (Judgmental Criticism)

▶ आलोचना के क्षेत्र में निर्णयात्मक आलोचना का महत्त्व कम है।

इस आलोचना पद्धति में आलोचक निष्पक्ष भाव से आलोच्य कृति के विषय में अपना निर्णय देता है। वह कभी शास्त्रीय सिद्धान्तों को आधार बनाता है तो कभी व्यक्तिगत रुचि को। इसके अंतर्गत आलोचक कृति का महान- लघु, सुन्दर-असुन्दर, उत्तम-मध्यम-अधम सामान्य आदि श्रेणियों में विभाजन करता है। इसे नैतिक आलोचना माना जाता है क्योंकि यह न्यायाधीश की तरह साहित्यक कृतियों पर निर्णय देता है। इसलिए आलोचना के क्षेत्र में निर्णयात्मक आलोचना का महत्त्व कम है।

▶ आलोचक न्यायाधीश की भांति अपना निर्णय सुनाता है

कुछ विद्वानों ने इस आलोचना पद्धति का खण्डन किया है। उनका तर्क है कि आलोचक का कार्य कृति की व्याख्या कर उसके सौन्दर्य का उद्घाटन करना है जिससे सामान्य पाठकों को उस कृति का अध्ययन करने में सहायता मिल सके, न कि न्यायाधीश की भांति निर्णय करना। हिन्दी में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की आलोचना निर्णयात्मक आलोचना कही जाती है। बाबू गुलाबराय ने कहा है कि यदि निर्णय शास्त्रीय सिद्धान्तों के आधार पर किया गया हो तो उचित है, अन्यथा व्यक्तिगत रुचि-अरुचि के आधार पर किया गया निर्णय युक्ति-संगत नहीं हो सकता।

1.1.5.3 तुलनात्मक आलोचना (Comparative Criticism)

▶ हिंदी के पहले तुलनात्मक आलोचक है- पद्म सिंह शर्मा

तुलनात्मक आलोचना में काव्य प्रवृत्तियों, विभिन्न युगों के कवियों एवं विभिन्न भाषा के कवियों की तुलना की जाती है। इसका प्रारंभ उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ था। इसमें आलोचक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होत्ती है। शास्त्रीय आलोचना में आलोचक तट स्थ रहता है जबकि तुलनात्मक आलोचना में आलोचक आलोच्य रचनाओं से अपने मन पर पड़े प्रभाव को भी अभिव्यक्त करता है। हिंदी के पहले तुलनात्मक आलोचनाकार के रूप में पद्म सिंह शर्मा को मानते हैं। उन्होंने बिहारी की तुलना पूर्ववर्ती रचनाकारों से करके उस पर लगे अश्लीलता के आरोप को मिटाने का प्रयास किया।

1.1.5.4 सैद्धांतिक आलोचना (Speculative Criticism)

▶ सैद्धान्तिक आलोचना के उदाहरण

इसमें साहित्य रचना से संबंधित आधारभूत सिद्धांतों का निर्माण किया जाता है। अर्थात एक ही प्रकार के बहुत सी कृतियों को आधार बना कर कुछ सिद्धान्त निश्चित कर लिए जाते हैं। रीति ग्रन्थ या लक्षण ग्रन्थ सैद्धान्तिक आलोचना के ग्रन्थ हैं। आलोचक अपनी प्रतिभा के आधार पर तथा प्राचीन पद्धति ग्रन्थों के आधार पर काव्य रचना सम्बन्धी मूलभूत सिद्धान्तों का निर्माण करता है और उसी के आधार पर किसी कृति की आलोचना करता है।

▶ आधुनिक काल के सैद्धान्तिक आलोचनात्मक ग्रंथ

सैद्धान्तिक आलोचना एक प्रकार से शास्त्रीय है। सिद्धान्त निर्माण करने वाले आलोचक को परम्परा से प्राप्त सिद्धान्तों के साथ नवीन सिद्धान्तों का निर्माण करना चाहिए। संस्कृत में सैद्धान्तिक आलोचना पर्याप्त विकसित थी। भरतमुनि का 'नाट्यशास्त्र', मम्मट का 'काव्यप्रकाश', विश्वनाथ का 'साहित्य-दर्पण', आनन्दवर्द्धन का 'ध्वन्यालोक' आदि ऐसे ग्रन्थ हैं। हिन्दी में आचार्य शुक्ल का 'रस मीमांसा', डॉ. नगेन्द्र का 'रस सिद्धान्त', बाबू गुलाबराय का 'काव्य के रूप', भगीरथ मिश्र का 'भारतीय काव्यशास्त्र' आदि सैद्धान्तिक आलोचना के प्रमुख ग्रन्थ माने जा सकते हैं।

1.1.5.5 प्रभाववादी आलोचना (Impressionistic criticism)

▶ प्रभाववादी आलोचना को आत्मप्रधान आलोचना भी कहते हैं।

इस आलोचना पद्धति में आलोचक रचना के अध्ययन से अपने मन पर पड़े प्रभाव को व्यक्त करता है, कृति का विश्लेषण या विवेचन नहीं करता। इसलिए इसे आत्मप्रधान आलोचना भी कहते हैं। प्रभाववादी आलोचना का सबसे बड़ा दोष यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी रुचि-भिन्नता के कारण एक ही रचना के बारे में अलग-अलग राय व्यक्त करता है। इसलिए आलोचना में प्रामाणिकता नहीं रहती। ऐसा लगता है कि आलोचक अपनी रुचि को पाठकों पर थोपने का प्रयास करते है।

▶ प्रभाववादी आलोचना में आलोचक अपने मन पर पड़े प्रभाव को ही व्यक्त करता है।

प्रभाववादी आलोचना तभी उपादेय बन सकती है जब उस पर कुछ नियन्त्रण लगा दें। व्यक्तिगत रुचि के आधार पर किसी कृति की निन्दा अथवा प्रशंसा से बचते हुए रचना के मार्मिक और प्रभावशाली पक्ष का उद्घाटन करना ही सच्ची प्रभाववादी आलोचना है। हिन्दी में श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी प्रभाववादी आलोचक हैं।

1.1.5.6 ऐतिहासिक आलोचना (Historical Criticism)

▶ ऐतिहासिक आलोचना में लेखक युगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में रचना की समीक्षा करता है।

ऐतिहासिक आलोचना के अंतर्गत लेखक की युगीन परिस्थितियों, आंदोलनों और प्रवृत्तियों को विश्लेषित कर उनके आलोक में कृति का आकलन करता है। आधुनिक युग में ऐतिहासिक आलोचना का पर्याप्त विकास हुआ है। समालोचना की इस पद्धति ने समीक्षा को एक नई दिशा दी है। अन्य प्रणालियों के आलोचक भी किसी-न-किसी रूप में ऐतिहासिक आलोचना का आधार ग्रहण करने लगे हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों की रचना इसी प्रणाली पर की गई है। इस आलोचना पद्धति में यह त्रुटि रहती है कि इसमें युगीन परिस्थितियों के विश्लेषण को इतना अधिक विस्तार मिल जाता है कि कवि और उसकी कृतियों की उपेक्षा हो जाती है।

1.1.5.7 मनोवैज्ञानिक आलोचना (Psychological Criticism)

▶ मनोवैज्ञानिक आलोचना में मन के सन्दर्भ में कृति का विश्लेषण करता है।

मनोवैज्ञानिक आलोचना साहित्य को सामाजिक कार्य के स्थान पर वैयक्तिक कर्म मानती है और मन के सन्दर्भ में ही कृति का विश्लेषण करता है। इसके अनुसार किसी भी साहित्यिक रचना की परख करने से पूर्व रचनाकार की मानसिक स्थिति का अध्ययन करना अनिवार्य है। मनोवैज्ञानिक आलोचक की सफलता रचनाकार की मानसिक प्रक्रिया का अध्ययन करते हुए सही मूल्यांकन करने पर निर्भर है। इस

प्रकार की आलोचना बीसवीं शताब्दी की देन है और आजकल हिंदी में मनोवैज्ञानिक आलोचना ज्यादा मात्रा में की जाती है।

1.1.6 आलोचक के गुण

आलोचक का दायित्व काव्यास्वादन में पाठक की सहायता करना, कृति के गुण दोषों का विवेचन करना आदि होता है। विवेक पूर्ण आलोचक ही पाठकों का सहज पथ प्रदर्शन करता है। सफल आलोचक बनने के लिए आलोचक में कुछ गुणों का होना अत्यंत आवश्यक है। वे निम्नलिखित हैं।

1.1.6.1 विस्तृत ज्ञान

- आलोचक को विषय का विस्तृत ज्ञान होना चाहिए

आलोचक को विषय का व्यापक, गंभीर एवं सूक्ष्म ज्ञान होना चाहिए ताकि वह पाठकों को विषय के मर्म से परिचित करा सके। उसे काव्यशास्त्र, सौंदर्य शास्त्र, दर्शन, मनोविज्ञान, इतिहास आदि की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। इन सभी के ज्ञान से वह रचना का संयक ज्ञान हासिल करके उसकी आलोचना कर सकते हैं। इसके अभाव में रचना में वर्णित ऐसे प्रसंगों के वर्णन में वह असफल हो जाएगा।

1.1.6.2 निष्पक्षता

- आलोचक को निष्पक्ष एवं तटस्थ होना चाहिए

आलोचक की सफलता उसकी निष्पक्षता एवं तटस्थता पर निर्भर करता है। उसे सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर कृति की समीक्षा करनी चाहिए। अनावश्यक निंदा एवं स्तुति उसकी असफलता का प्रमाण है। उसे वैचारिक संकीर्णताओं से मुक्त होकर न्यायाधीश के समान कृति का नीर क्षीर विवेचन करना चाहिए। इसके लिए उसका उन्नत चरित्रवान होना अत्यंत आवश्यक है।

1.1.6.3 सहज प्रतिभा

- आलोचक को सहज प्रतिभावान होना चाहिए

सहज प्रतिभा के अभाव में आलोचक अपने कार्य में सफल नहीं हो पता। उसका सहज प्रतिभा से युक्त होना एवं काव्य एवं शस्त्र का ज्ञानी होना अत्यंत आवश्यक है। सहज प्रतिभा आलोचक को रचना का विवेचन सतर्कता एवं प्रभावशाली ढंग से करने में सहायक सिद्ध होता है।

1.1.6.4 सहृदयता

- सहृदयता कुशल समीक्षक के लिए सबसे आवश्यक गुण है

सहृदयता कुशल समीक्षक के लिए सबसे आवश्यक गुण है। आलोचक में कृतिकार व उसकी कृति के प्रति पूर्वाग्रह का अभाव होना चाहिए। द्वेष, ईर्ष्या आदि से रहित होकर कृति में व्याप्त गुणों को स्वीकार करने की शक्ति आलोचक में होना चाहिए। कवि की अंतरात्मा के साथ तादात्म स्थापित करने की संवेदना आलोचक का मुख्य गुण है। मुक्त हदय से काव्यकृति का रसास्वादन करते हुए उसकी आलोचना करने वाले आलोचक ही सफल आलोचक कहलाने योग्य है।

1.1.6.5 सामाजिक दायित्व

- आलोचक पुस्तकों से पाठकों को परिचित कराने का सामाजिक कार्य करता है

समाज के प्रति आलोचक का एक दायित्व है। पुस्तकों से पाठकों को परिचित कराना एक सामाजिक कार्य है। पुस्तकों को पढ़ने की प्रवृत्ति किसी समाज के सभ्य और सुसंस्कृत होने की निशानी है। इसलिए पुस्तक समीक्षा करनेवाले लेखक का दायित्व महत्वपूर्ण है। पुस्तकों का चयन करने से लेकर समीक्षा पूर्ण करने तक उसे अपने कार्य के इस सामाजिक पहलू को ध्यान में रखना चाहिए। उसे यह विचार करना चाहिए कि समाज की उन्नति के लिए किस तरह की पुस्तकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं की तरह आलोचना का विकास भी आधुनिक काल में हुआ। आधुनिक काल से पहले आलोचना का स्वरूप प्रमुखतः संस्कृत काव्यशास्त्र की पुनरावृति हुआ करती थी। लेकिन आज हिंदी आलोचना का जो स्वरूप है वह आधुनिक काल की देन। हिंदी आलोचना संस्कृत के काव्यशास्त्रीय चिंतन की पृष्ठभूमि को स्वीकार करते हुए नवीन सृजन, नवीन विचारधारा और नवीन सामाजिक सरोकारों से युक्त होकर चलती है। आरंभिक हिन्दी आलोचना केवल काव्यगत गुण-दोषों तक ही सीमित थी। बाद में अनेक आलोचना पद्धतियों का विकास हुआ और यह विधा इतनी समर्थ और सशक्त हुई कि रचना के समान उसे प्रतिष्ठा मिलने लगी। अनेक आलोचकों की उत्कृष्ट आलोचनाओं ने यह प्रमाणित किया कि आलोचना रचना की अनुवर्ती नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र विधा है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. हिन्दी आलोचना साहित्य की विकास यात्रा का परिचय दीजिए।
2. आलोचक में किन किन गुणों का होना आवश्यक माना गया है?
3. आलोचना के स्वरूप का परिचय देते हुए उसकी विभिन्न परिभाषाएँ लिखिए।
4. आलोचना के भेदों का परिचय दीजिए।
5. आलोचना की विकास यात्रा का परिचय दीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श - डॉ. सुधीश पचौरी
2. हिंदी आलोचना का विकास - नेदकिशोर नौसैनिक

3. हिन्दी समीक्षा स्रोत एवं सुधार - सत्यदेव मिश्र
4. हिन्दी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी
5. काव्यशास्त्र - डॉ. भागीरथ मिश्रा

Web Reference / अंतर्जाल संदर्भ

1. हिन्दी आलोचना एवं समकालीन विमर्श/द्विवेदी युगीन हिंदी आलोचना - विकिपुस्तक (wikibooks.org)
2. Hindi alochna ka vikas | Hindi alochna ka udbhav aur vikas | hindi aalochna | teachereducation360 | - YouTube
3. https://youtu.be/Ae_uPbUGD7w?si=XBpx9RMdAPjyfS5-
4. https://youtu.be/0QxZ9bz9eqE?si=lsfj3YmzbxpycTHi

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र : डॉ. हरदयाल
2. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - शिवकुमार शर्मा
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह
4. हिन्दी आलोचना - कशिश गोयल

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

हिन्दी साहित्य में प्रचलित आलोचना की प्रणालियाँ, सैद्धांतिक आलोचना, स्वच्छंदतावादी आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आलोचना की प्रणालियों को समझता है
- सैद्धांतिक आलोचना से परिचित होता है
- स्वच्छन्दतावादी आलोचना को जानता है
- मार्क्सवादी आलोचना से अवगण होता है

Background / पृष्ठभूमि

हिंदी आलोचना साहित्य का आरंभ भारतेंदु युग में हुआ था। इस काल की आलोचना मुख्यतः पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित पुस्तक समीक्षा के रूप में थी। भारतेंदु और उनके समकालीन लेखकों के प्रयास से हिंदी आलोचना का सूत्रपात हो गया तो द्विवेदी युग में इसका व्यापक विकास एवं उत्कर्ष होने लगा। पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनके समकालीन लेखकों ने हिंदी आलोचना को सही रास्ते की पहचान कराई। इस समय तुलनात्मक साहित्य का आरंभ हो गया। अनेक सैद्धांतिक आलोचनात्मक ग्रंथों की रचना भी इस समय हुई। इस तरह द्विवेदी युग में आलोचना का रूप और दिशा निश्चित हो गई।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आलोचना की प्रणालियाँ, सैद्धांतिक आलोचना, साहित्य का मानदंड, स्वच्छन्दतावादी आलोचना, छायावाद का साहित्यिक विश्लेषण, मार्क्सवादी आलोचना, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद

Discussion / चर्चा

1.2.1 हिन्दी साहित्य में प्रचलित आलोचना की प्रणालियाँ

आलोचना करते समय जिन पद्धतियों एवं मान्यताओं को स्वीकार किया जाता है उसी के आधार पर आलोचना के प्रकार निर्धारित किए जाते हैं। हिंदी साहित्य में अनेक

आलोचना पद्धतियाँ एवं प्रणालियाँ प्रचलित है। इनमें प्रमुख है-सैद्धांतिक आलोचना, स्वच्छंदतावादी आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना आदि।

1.2.1.1 सैद्धांतिक आलोचना

▶ सैद्धान्तिक आलोचना में साहित्यिक समीक्षा के सिद्धान्तों पर विचार किया जाता है।

सैद्धान्तिक आलोचना में साहित्यिक समीक्षा के सिद्धान्तों पर विचार किया जाता है। इसमें प्राचीन शास्त्रीय काव्यांगों, रस, अलंकार आदि का विवचेन मिलता है। साथ ही साहित्य की आधुनिक मान्यताओं तथा नियमों की विवचेना भी मिलती है। सैद्धान्तिक आलोचना में यह विचार किया जाता है कि साहित्य का मानदंड शास्त्रीय है या ऐतिहासिक। मानदंड का शास्त्रीय रूप, स्थिर और अपरिवर्तनशील होता है। किन्तु मानदंडों को ऐतिहासिक श्रेणी परिवर्तनशील और विकासात्मक होता है। दोनों प्रकार की सैद्धान्तिक आलोचनाएँ उपलब्ध हैं। किन्तु अब उसी सैद्धान्तिक आलोचना का महत्त्व अधिक है जो साहित्य के तत्वों और नियमों को ऐतिहासिक प्रक्रिया में विकासमान है।

▶ भारतेंदु हरिश्चंद्र का 'नाटक' हिंदी की पहली आलोचना है।

संस्कृत साहित्य में लिखित सारे काव्यशास्त्रीय ग्रंथ सैद्धांतिक आलोचना के अंतर्गत आते हैं। भरत मुनि का 'नाट्यशास्त्र' मम्मट का 'काव्य प्रकाश' आचार्य दंडी का 'काव्यादर्श' आदि सैद्धांतिक आलोचनात्मक ग्रन्थ हैं। भारतेंदुजी का 'नाटक', जिसे हिंदी की पहली आलोचना मानते हैं, भी सैद्धांतिक आलोचना के अंतर्गत आते हैं। आधुनिक काल के महान आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की आलोचना सैद्धांतिक आलोचना के उदाहरण हैं। उनकी 'चिंतामणि' में संकलित कुछ लेख 'रस मीमांसा', 'काव्य में रहस्यवाद' आदि सैद्धांतिक आलोचना के उत्तम उदाहरण हैं।

▶ सैद्धांतिक आलोचना के अन्य उदाहरण

डॉ. नगेन्द्र का 'रस सिद्धांत', बाबू गुलाब राय का 'काव्य के रूप', भगीरथ मिश्र का 'भारतीय काव्य शास्त्र' महावीर प्रसाद द्विवेदी का 'रसज्ञ रंजन', श्याम सुंदरदास का 'रूपक रहस्य', लाला भगवानदीन का 'अलंकार मंजूषा', कन्हैयालाल पोद्दार का 'काव्यकल्पद्रुम', 'रसमंजरी', 'अलंकार मंजरी', अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का 'रसकलश' आदि ग्रन्थ सैद्धांतिक अलोचना के उदाहरण हैं।

1.2.1.2 स्वच्छंदतावादी आलोचना

▶ स्वच्छंदतावादी आलोचना पद्धति का आरंभ

हिंदी साहित्य में छायावाद के साहित्यिक विश्लेषण के लिए स्वच्छंदतावादी आलोचना पद्धति का आरंभ हुआ। स्वच्छंदतावाद में रचनाकार किसी भी वाद या विचारधारा से मुक्त होकर अपने निजी विचारों को प्रस्तुत करता है। अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी में 'रोमांटिसिज्म' सम्पूर्ण यूरोपीय कला जगत में व्याप्त हो चुका था। इसका उदय प्रायः 'क्लासिसिज्म' अथवा 'अभिजात्यवाद' की निर्जीव और रूढ़ कला-पद्धतियों की प्रतिक्रिया में हुआ। इसमें वैयक्तिकता, कल्पना, मौलिकता, रचनाकार की स्वतंत्रता और नए प्रयोगों पर बल दिया गया। हिंदी में छायावाद के अभ्युदय के साथ ही आलोचना के क्षेत्र में स्वच्छंदतावादी प्रवृतियाँ उभरने लगी थी।

साहित्य और कलाओं के प्रति 'स्वच्छंदतावादी' दृष्टिकोण को प्रेरित करने वाली महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना फ्रांस की जन-क्रांति है। इस क्रांति में रूसो ने 'स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व' का नारा देकर व्यक्ति की स्वतंत्रता की मांग की। यह बंधनों से मुक्ति का आन्दोलन है। इसलिए स्वच्छंदतावाद किसी बंधे-बंधाये ढाँचे में विश्वास नहीं रखते। स्वच्छंदतावाद की प्रवृतियाँ और विशेषताएँ वर्ड्सवर्थ, कॉलरिज, शेली, कीट्स और बायरन की कविताओं में अभिव्यक्त हुई है। वर्ड्सवर्थ ने कविता को 'प्रबल मनोवेगों का सहज उच्छलन' कहकर भाव-प्रवणता पर विशेष बल दिया। लेकिन यह भावोच्छलन अनुशासनहीन नहीं होता है। इसके पीछे सूक्ष्म संवेदनशीलता का आग्रह है जो कल्पना से युक्त होकर रचनाकार की आंतरिक अनुभूति को ईमानदारी से उद्घाटित करती है।

▶ वर्ड्सवर्थ ने कविता को 'प्रबल मनोवेगों का सहज उच्छलन' माना।

भाव-प्रवणता के प्रभाव से स्वच्छंदतावादी आलोचना में वैयक्तिकता, आत्म सृजन, कल्पनाशीलता और स्वानुभूति को एक मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है। कॉलरिज ने कवि-कल्पना के महत्त्व को स्थापित करते हुए इसे सृजनकारिणी 'आदि शक्ति' तथा मस्तिष्क की सबसे अधिक प्राणवान क्रिया का दर्जा दिया। इसलिए स्वच्छंदतावादी आलोचना में रचनाकार की अंतर्वृतियों का अध्ययन अनिवार्य माना गया हैं। इसके अतिरिक्त जड़ता, कृत्रिमता, रूढियों तथा अप्रासंगिक होती हुई लेखन परम्पराओं से विद्रोह स्वच्छंदतावाद की मूलभूत विशेषता है।

▶ स्वच्छंदतावादी आलोचना में जड़ता, कृत्रिमता, रूढियों तथा अप्रासंगिक होती हुई लेखन परम्पराओं से विद्रोह की प्रवृत्ति पायी जाती है।

स्वच्छंदतावादी आलोचकों ने उदात्त चरित्रों की गाथा के स्थान पर साधारण मानव के सामान्य अनुभवों, सांस्कृतिक मूल्यों तथा अपने परिवेश को महत्त्व दिया। शैली और शिल्प की प्रयोगशीलता और विविधता व्यक्ति-स्वातंत्र्य का ही एक रूप है जिसकी गुंजाइश अभिजात्यवादी अनुशासन में नहीं थी। भाषा के स्तर पर स्वच्छंदतावादी रचनाकारों ने जनभाषा के प्रयोग को आवश्यक माना। स्वच्छंदतावादी आलोचना का दृष्टिकोण पूरी तरह से रसवादी है और रस में वे मानवतावादी यथार्थ को महत्व देते हैं। सौन्दर्य चेतना भी स्वच्छंदतावाद का मूल तत्व है। प्रकृति के एकाधिक रूपों के उन्मुक्त सौन्दर्य के प्रति उनका आकर्षण सहज था। हिंदी साहित्य में मूलतः स्वच्छंदतावादी आलोचना, प्रगतिवादी आलोचना के विरोध में उभर कर आई। इन आलोचकों में आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. नगेन्द्र, शांतिप्रिय द्विवेदी, अज्ञेय, देवराज आदि प्रमुख थे।

▶ आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ. नगेन्द्र, शांतिप्रिय द्विवेदी आदि प्रमुख स्वच्छंदतावादी आलोचक हैं।

1.2.1.3 मार्क्सवादी आलोचना

हिंदी साहित्य में मार्क्सवादी समीक्षा का आरंभ स्वच्छन्दतावादी समीक्षा पद्धति के विरोध में हुआ। मार्क्सवादी समीक्षा पद्धति के मूल में सामाजिक चिन्तन एवं सामाजिक विकास की भावना विद्यमान है। इसमें साहित्य को समाजवादी यथार्थ की अभिव्यक्ति का साधन माना गया है। आलोचक कृति का मूल्यांकन सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से करता है। सामान्यतः यह एक प्रकार की सामाजिक चेतना है जो एक विशेष आर्थिक संरचना से जुड़ी होती है।

▶ मार्क्सवादी आलोचना का आरंभ

▶ मार्क्सवाद का समय 1818 से 1883 तक माना गया है।

मार्क्सवाद आधुनिक युग की लोकप्रिय विचारधाराओं में से एक है। पश्चिम में इसका आरंभ और उत्कर्ष मोटे तौर पर 1818 से 1883 तक माना गया है। इसके संस्थापक है कार्ल मार्क्स। उनके चिंतन का मुख्य क्षेत्र अर्थव्यवस्था और दर्शन था। मार्क्सवाद में मार्क्स के साथ फ्रेडरिक एंगेल्स का नाम भी उल्लेखनीय है। इन दोनों के अलावा रूसी क्रांति के जनक लेनिन, रूसी चिंतक प्लेखानोव आदि अनेक विचारकों ने मार्क्सवाद को विशेष योगदान दिया है। उत्पादन के साधनों पर सामाजिक स्वामित्व द्वारा वर्गविहीन समाज की स्थापना मार्क्सवाद का लक्ष्य है।

▶ मार्क्सवाद के अनुसार समाज का बुनियादी आधार आर्थिक है।

मार्क्स के चिंतन की केंद्रीय पद्धति द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के नाम से जाना जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार संसार के प्रत्येक वस्तु में परस्पर विरोधी तत्व विद्यमान है और उनमें आपस में द्वंद चलता रहता है। समाज में यह द्वंद्व पूंजीपति और सर्वहारा वर्ग अर्थात शोषक और शोषित के बीच होता है जो भौतिक उन्नति का कारण बन जाता है। मार्क्सवाद के अनुसार समाज का बुनियादी आधार आर्थिक है। आर्थिक ढाँचे में बदलाव लाने पर संपूर्ण समाज में बदलाव आ जाता है। समाज दो वर्गों में विभाजित है - एक पूँजीपति वर्ग और दूसरा पूँजीहीन सर्वहारा वर्ग। पूँजीपति वर्ग आर्थिक उत्पादन के साधनों का स्वामी है तथा पूँजीहीन वर्ग साधनों में अपना श्रम लगाता है। इन दोनों के बीच का संघर्ष निरंतर चलता रहता है। इनके बीच का अंतर बढ़ जाता है तो यह संघर्ष तीव्र एवं व्यापक होता है। यह संघर्ष सशस्त्र एवं रक्त क्रांति के रूप में भी हो सकता है या रक्तहीन क्रांति के रूप में।

▶ हिंदी साहित्य में मार्क्सवादी या प्रगतिवादी आलोचना का आरंभ 1936 में हुआ था।

मार्क्स और एंगेल्स ने कला की सोद्देश्यता पर बराबर बल दिया है। उनका कहना था कि वर्ग संघर्ष का चित्रण करके जनमानस को संघर्ष के लिए तैयार करना कला का लक्ष्य होना चाहिए। ऐसा करते हुए कला को स्पष्ट रूप से शोषित वर्ग का पक्ष लेना चाहिए। इनके अनुसार सच्ची कला का जन्म वर्गहीन समाज में ही संभव है। मार्क्सवाद को केंद्र में रखकर हिंदी साहित्य में मार्क्सवादी या प्रगतिवादी आलोचना का आरंभ 1936 में हुआ था। मार्क्सवादी आलोचना का लक्ष्य जीवन का भौतिक विकास है। मार्क्सवाद साहित्य का मूल्यांकन भी सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से करता है। मार्क्सवादी साहित्य लोककल्याणवादी है जो शोषण से मुक्त वर्गहीन साम्यमूलक समाज के निर्माण में प्रेरणा दे। मार्क्सवादी साहित्य का प्रधान लक्ष्य है उपदेश और शिक्षा देना। यह आनंद के स्थान पर लोककल्याण को प्रमुखता देते हैं। कवियों का मूल्यांकन करते समय प्रगतिवादी समीक्षक यह देखता है कि कवि अपने काव्य में किस वर्ग विशेष की हितचिंता करते हैं।

हिंदी मार्क्सवादी आलोचना स्वच्छंदतावादी आलोचना के विरोध में खड़ी है। प्रगतिवादी आलोचकों ने रहस्यवाद का विरोध किया। आँखों के सामने जो प्रत्यक्ष जगत है वे उस पर विश्वास करते थे। उनके लिए पारलौकिक जगत की कोई सत्ता नहीं थी। प्रगतिवादी आलोचकों ने व्यक्ति के स्थान पर समाज को अधिक महत्व दिया है। मार्क्सवाद की दृष्टि में साहित्य का परम लक्ष्य जीवन का भौतिक विकास है। वे साहित्य का मूल्यांकन

▶ हिंदी के प्रसिद्ध मार्क्सवादी आलोचक

सामाजिक उपयोगिता की दृष्टि से करते हैं। हिंदी काव्य चेतना को समाजोन्मुखी बनाने में प्रयोगवादी आलोचना का महत्वपूर्ण योगदान है। मार्क्सवादी समीक्षा ने हिंदी समीक्षा को स्वस्थ, वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ तथा जनकल्याणकारी बना दिया। हिंदी के प्रगतिवादी आलोचकों में डॉ रामविलास शर्मा, शिवदान सिंह चौहान, डॉ नामवर सिंह, प्रकाश चंद्र गुप्त आदि का नाम उल्लेखनीय है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आधुनिक हिंदी आलोचना साहित्य का आरंभ भारतेंदु युग में हुआ। द्विवेदी युग में आलोचना का और अधिक विकास हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी और उनके परवर्ती लेखकों के प्रयास से हिंदी आलोचना का काफी उत्कर्ष हुआ। इस विकास यात्रा के बीच आलोचना को अनेक प्रकारों में विभाजित किया है। प्रस्तुत इकाई में इन प्रकारों पर प्रकाश डाला गया है। आलोचना करते समय जिन पद्धतियों एवं मान्यताओं को स्वीकार किया जाता है उसी के आधार पर आलोचना के प्रकार निर्धारित किए जाते हैं। सैद्धांतिक आलोचना, स्वच्छंदतावादी आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना आदि।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. सैद्धांतिक आलोचना का परिचय दीजिए।
2. स्वच्छंदतावादी आलोचना का परिचय दीजिए।
3. आलोचना के विभिन्न प्रकारों का परिचय दीजिए।
4. मार्क्सवादी आलोचना के भेदों का परिचय दीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी समीक्षा: स्त्रोत एवं सुत्रधार- सत्यदेव मिश्र
2. आलोचना और आलोचना: बच्चन सिंह
3. हिंदी आलोचना का विकास- नंदकिशोर नौसैनिक

Web Reference / अंतर्जाल संदर्भ

1. https://hi.m.wikibooks.org/wiki/
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Criticism_of_Marxism
3. https://youtu.be/grcWyqroTH0?si=A9b9y9_u15ulgk80

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिंदी साहित्य का इतिहास- डॉ नगेंद्र : डॉ हरदयाल
2. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - शिवकुमार शर्मा
3. हिन्दी आलोचना - कशिश गोयल
4. आलोचना और आलोचना - बच्चन सिंह

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

भारतेन्दु युग की हिन्दी आलोचना- भारतेन्दु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भारतेंदु युगीन आलोचना से परिचित होता है
- भारतेंदु युगीन आलोचना की प्रवृत्तियों को समझता है
- भारतेंदु युगीन अन्य लेखकों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- आलोचना साहित्य के विकास में भारतेंदु युग के योगदान को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

भारतेंदु युग में गद्य साहित्य का सर्वतोमुखी विकास हुआ। इस युग में नाटक, उपन्यास, निबंध, आलोचना, अनुवाद आदि सभी गद्य विधाओं पर रचनाएँ की गयी। यह जन-जागरण का युग भी था। इस युग में राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक क्षेत्र में समस्त भारतीय जन-मानस में एक नई चेतना जागृत हुई थी। उस समय के वैचारिक अभिव्यक्ति का उपयुक्त माध्यम गद्य ही था। अतः गद्य की अनेक विधाओं का विकास हुआ। साहित्य का उपयोगितावादी दृष्टिकोण स्वीकार किया जाने लगा। साहित्य में सुरुचि, नैतिकता और बौद्धिकता को प्रधानता मिलने लगा। भारतेंदु युग की आलोचना में इन्हीं तीन तत्वों को प्रमुखता दी गयी। राष्ट्र-प्रेम इस काल के साहित्य की प्रधान विशेषता थी। अतः आलोचना में भी राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाया गया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

भारतेंदु युगीन आलोचना, पत्र-पत्रिकाएँ, राष्ट्रीयता, लक्षण-ग्रंथों की परंपरा, टीकाओं के रूप में आलोचना, इतिहास ग्रंथों रूप में लिखित आलोचना, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र

Discussion / चर्चा

1.3.1 भारतेन्दु युग की हिन्दी आलोचना

- हिन्दी आलोचना का आरंभ पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हुआ

भारतेन्द्र युगीन हिन्दी आलोचना का आरंभ पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हुआ। 'हिन्दी प्रदीप', 'ब्रह्मण', 'आनंद कादम्बिनी', 'हरिश्चंद्र मैगज़ीन', 'कविवचन सुधा' आदि पत्रिकाओं में गंभीर आलोचनाएँ प्रकाशित होती थी। पत्र-पत्रिकाओं में पुस्तक समीक्षा के रूप में प्रकाशित होनेवाली आलोचनाओं के अतिरिक्त इस युग में तीन प्रकार की आलोचनाओं का अस्तित्व स्वीकार किया जा सकता है।

1. रीतिकालीन लक्षण-ग्रंथों की परंपरा में लिखित सैद्धान्तिक आलोचना।
2. ब्रजभाषा एवं खड़ीबोली गद्य में लिखी गई टीकाओं के रूप में प्रचलित आलोचना।
3. इतिहास ग्रंथों में कवि-परिचय के रूप में लिखी गई आलोचना।

1.3.1.1 लक्षण-ग्रंथों की परंपरा में लिखित सैद्धान्तिक आलोचना

- भारतेन्दु युग में रचित उल्लेखनीय पिंगाल ग्रंथ

इसके अन्तर्गत पिंगल, अलंकार, रस, नाटक आदि पर लक्षण-ग्रंथों की रचना की गई। ज्वालास्वरूप कृत 'स्त्रपिंगल', उमरासिंह कृत 'द्वन्द्व महोदधि', जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' कृत 'छन्द प्रभाकर' आदि इस युग में रचित उल्लेखनीय पिंगाल ग्रंथ हैं। लछिराम कृत 'रावणेश्वर कल्पतरु' बिहारी लाल कृत 'अलंकारादर्श' तथा मुरारीदान कविराज कृत 'जसवंत जसो भूषण' आदि भी इस काल के महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक ग्रंथ हैं। रस ग्रंथों में कृष्णलाल-कृत 'रससिन्धुविलास', साहबप्रसाद सिंह-कृत 'रसरहस्य' और प्रतापन्-ारायण सिंह कृत 'रसकुसुमाकर' आदि उल्लेखनीय हैं। सम्पूर्ण काव्यशास्त्र को दृष्टि में रखकर लिखे गए लक्षण ग्रंथों में जानकीप्रसाद का 'काव्यसुधाकर' उल्लेखनीय है। नाट यशास्त्र संबंधित सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृति भारतेन्दु का 'नाटक' है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें प्राचीन नाट्य शास्त्र की जानकारी के साथ ही साथ प्राचीन जटिल शास्त्रीय नियमों से छुटकारा पाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

1.3.1.2 टीकाओं के रूप में प्रचलित आलोचना

- स्टीकाओं की परंपरा में लिखित आलोचनाओं को महत्वपूर्ण स्थान है

भारतेंदु युग में टीकाओं की परंपरा में लिखित आलोचनाओं का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। सरदार कवि की 'कवि प्रिया' और 'रसिकप्रिया' इसी प्रकार की रचनाएँ हैं। 'बिहारी सतसई' पर लल्लू लाल जी द्वारा रचित टीका 'बालचंद्रिका' इसका उत्तम दृष्टांत है। दुर्गा दत्त कवि और जॉर्ज ग्रियेर्सन ने इसका संशोधन करके पुनः प्रकाशित किया था। इसलिए इन रचनाओं को भी आलोचना साहित्य के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है।

1.3.1.3 इतिहास ग्रंथों रूप में लिखित आलोचना

भारतेंदु युग में इतिहास ग्रंथों की भी रचना हुई थी। इनमें प्रमुख है 'शिवसिंह सरोज'

▶ भारतेंदु युग में रचित इतिहास ग्रंथ

जिसका लेखक है शिवसिंह सेंगर। ग्रियर्सन द्वारा रचित 'माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान' की रचना भी आलोच्य युग में हुआ था।

1.3.2 भारतेंदु युगीन समालोचक

▶ भारतेंदु और उनके समकालीन लेखक

भारतेंदु और उनके समकालीन लेखक पत्र पत्रिकाओं में निरंतर पुस्तक समीक्षाएँ लिखा करते थे। इन पुस्तक समीक्षाओं से हम आधुनिक समालोचना का आरंभ मान सकते हैं। भारतेंदु के अलावा बालकृष्ण भट्ट, पं बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' प्रताप नारायण मिश्र आदि आलोच्य युग के प्रमुख आलोचक थे। इस युग के समालोचक किसी न किसी पत्र पत्रिका का संपादक भी रहे हैं। इसलिए वे समालोचना के विकास में काफी योगदान दे पाए हैं।

1.3.3 भारतेंदु हरिश्चंद्र

▶ हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के युग प्रवर्तक

भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के युग प्रवर्तक मानते हैं। जिस प्रकार उन्होंने गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं का नवीकरण किया उसी प्रकार उन्होंने आलोचना साहित्य का भी नवीकरण किया। 1867 ई. में उन्होंने 'कवि वचन सुधा' नामक पत्रिका निकला जो गद्य के विकास का एक महत्वपूर्ण चरण था। 1873 ई. में उन्होंने 'हरिश्चंद्र मैगजीन' नामक मासिक पत्रिका अरंभ की और आठ अंकों के बाद उसका नाम बदलकर 'हरिश्चंद्र चन्द्रिका' कर दिया। हिन्दी गद्य के विकास में इस पत्रिका की एक विशिष्ट भूमिका थी। इससे अनेक नए लेखकों को लिखने की प्रेरणा मिली।

▶ नाट्यशास्त्र संबंधी महत्वपूर्ण कृत्ति

भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने नाट्यशास्त्र संबंधी महत्वपूर्ण कृत्ति 'नाटक' (1883 ई.) की रचना कर आधुनिक हिंदी आलोचना का प्रारंभ किया। इसमें लगभग साठ पृष्ठों में नाटक का शास्त्रीय विवेचन और इतिहास प्रस्तुत किया है। यह संस्कृत नाट्यशास्त्र को आधार बनाकर लिखा गया है। किंतु इसमें प्राचीन नाट्य शास्त्र की जानकारी दी गयी है। साथ ही युग प्रवृत्ति का ध्यान रखकर प्राचीन जटिल शास्त्रीय नियमों से छूट लेने की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है।

▶ 'आधुनिक भारतीय रंगमंच का पहला नाट्यशास्त्र'

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक संबंधी विवेचन को हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में पहला व्यवस्थित प्रयास मान सकते हैं। इसमें वे संस्कृत काव्यशास्त्र का भी विस्तार से उपयोग करते हैं। उनकी आलोचना दृष्टि अपनी परम्परा पर केन्द्रित होने पर भी आधुनिक प्रभावों के लिए पूरी तरह से खुली है। उनकी आलोचना दृष्टि व्यापक है। संस्कृत और हिन्दी के साथ वे यूरोपीय नाटकों की चर्चा भी विस्तारपूर्वक करते हैं। 'नाटक' की इन विशेषताओं के कारण ही देवेन्द्र राज अंकुर ने उन्हें 'आधुनिक भारतीय रंगमंच का पहला नाट्यशास्त्र' कहकर उनके महत्त्व को रेखांकित किया है।

▶ आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रथम आलोचक

भारतेन्दु ने नाटक पर विचार करते समय उसकी प्रकृति, समसामयिकता, जन रूचि एवं प्राचीन नाट्यशास्त्र की उपयोगिता पर विचार किया है। उन्होंने बदली हुई जनरूचि के अनुसार नाट्य-रचना में परिवर्तन पर बल दिया है। साथ ही उन्होंने अपने समकालीन

लेखकों को आलोचना की ओर प्रवृत्त भी किया। ऐसी दशा में उन्हें आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रथम आलोचक कहना अनुचित न होगा।

1.3.4 बालकृष्ण भट्ट

- 'हिंदी प्रदीप' नमक पत्रिका का संपादन

बालकृष्ण भट्ट भारतेंदु युग के आलोचकों में अग्रणी थे। उन्होंने 'हिंदी प्रदीप' नामक पत्रिका का संपादन किया। प्रस्तुत पत्रिका में उनकी आलोचनाएँ निरंतर प्रकाशित होती रहती थी। इनमें प्रमुख है 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है', 'सच्ची कविता', खड़ी बोली का पद्य', 'सच्ची समालोचना' आदि। उन्होंने 'नीलदेवी', 'संयोगिता स्वयंवर', 'एकांतवासी' आदि कृतियों पर व्यावहारिक आलोचनाएँ लिखी।

- हिंदी का पहला व्यावहारिक आलोचना

भट्ट जी संस्कृत साहित्य में विशेष रुचि रखते थे और संस्कृत कवियों एवं आचार्यों की आलोचना करते थे। उन्हें 'सैद्धांतिक विवेचन का उपयोग व्यावहारिक आलोचना में करने वाले' आलोचक मानते हैं। क्योंकि वे समीक्षा के मानदंड का उल्लेख सिद्धांतों के रूप में पहले देते हैं और फिर उसी के आधार पर कवि का मूल्यांकन करते हैं। भट्टजी द्वारा लिखित 'संयोगिता स्वयंवर' की व्यावहारिक आलोचना को हिंदी का पहला व्यावहारिक आलोचना मानते हैं

- बालकृष्ण भट्ट जी की शैली व्यंग्य-प्रधान है

भट्ट जी कवि परिचय में तटस्थ, गंभीर और विश्लेषणात्मक रहते हैं। लेकिन पुस्तकों की आलोचना में कहीं-कहीं मीठी व्यंग्योक्तियाँ भी करते हैं। उनकी शैली व्यंग्य-प्रधान है। उन्होंने नाटकों के साथ-साथ भारतन्दु युग के मौलिक और अनूदित उपन्यासों की भी समीक्षा की थी। 'हिन्दी प्रदीप' में 'उपन्यास' शीर्षक से उनका एक निबंध प्रकाशित हुआ था। उपदेशात्थकता को उन्होंने उपन्यास और नाटकों के लिए दोष माना है। उन्होंने लाल श्रीनिवासदास कृत 'परीक्षागुरु, ' बाबू गदाधर सिंह कृत 'बंग विजेता' और गोपालराम गहमरी कृत 'देवरानी जेठानी' की समीक्षा लिखी जिसे हम सफल आलोचना मान सकते हैं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक के रूप में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का योगदान अतुलनीय है। हिन्दी पत्रकारिता का यह युग हिन्दी गद्य-निर्माण का युग माना जाता है। भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता के केन्द्र में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं का विशेष योगदान रहा है। भारतेंदु युगीन आलोचना अपने युग की प्रायः सभी आलोचनात्मक प्रवृत्ति को समेटकर चलती है। इस समय आलोचना सफलता से अधिक संभावनाओं की नज़र से महत्वपूर्ण है। इस युग की आलोचना राष्ट्रीय नवजागरण की सक्रियता से विकसित थी। भारतेंदु युगीन आलोचना शैली में व्यंग्य और स्पष्टता साफ दिखाई देती है जो इस युग की सामान्य पहचान है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. भारतेंदु युगीन आलोचना पर लेख तैयार कीजिए।
2. भारतेंदु युगीन आलोचना की प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए।
3. हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में भारतेंदु हरिश्चंद्र का स्थान निर्धारित कीजिए।
4. भारतेंदु युगीन अन्य आलोचकों का परिचय दीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी समीक्षा: स्त्रोत एवं सुत्रधार- सत्यदेव मिश्र
2. आलोचना और आलोचना: बच्चन सिंह
3. हिंदी आलोचना का विकास- नंदकिशोर नौसैनिक

Web Reference / अंतर्जाल संदर्भ

1. https://www.jetir.org/papers/JETIR2111339.
2. https://jankriti.com/bhartendu-alochna-drishti/
3. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0
4. https://youtu.be/0QxZ9bz9eqE?si=lsfj3YmzbxpycTHi

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिंदी साहित्य का इतिहास- डॉ नगेंद्र : डॉ हरदयाल
2. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - शिवकुमार शर्मा
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह
4. हिन्दी आलोचना - कशिश गोयल

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

द्विवेदी युगीन हिन्दी आलोचना - महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकुन्द गुप्त, श्याम सुंदरदास, मिश्रबंधु

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- द्विवेदी युगीन आलोचना से परिचित होता है
- द्विवेदी युगीन आलोचना की प्रवृत्तियों को समझता है
- द्विवेदी युगीन आलोचकों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- आलोचना साहित्य के विकास में द्विवेदी युग के योगदान को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

आलोचना साहित्य के विकास में भारतेंदु हरिश्चंद्र के बाद आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का स्थान आता है। इस क्षेत्र में उनका योगदान अतुलनीय है। उनकी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से तत्कालीन लेखक आलोचना साहित्य को समृद्ध एवं संपन्न बनाने के प्रयास में लग गए। वे भारतीय एवं पश्चात्य आलोचना पद्धतियों को एक साथ समेटते हुए आगे बढ़ते थे। उनकी आलोचना दृष्टि वैज्ञानिक थी। साथ ही उनमें तर्क शक्ति और विचार क्षमता भारतेंदु युगीन लेखकों से अधिक थी। द्विवेदी जी की और एक विशेषताएँ यह थी कि वे साहित्य को उपयोगिता की दृष्टि से आंकते थे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, शास्त्रीय आलोचना, तुलनात्मक आलोचना, अनुसंधानपरक आलोचना, परिचयात्मक आलोचना, व्याख्यात्मक आलोचना, मिश्रबंधु, पद्मसिंह शर्मा, कृष्ण बिहारी मिश्र, लाला भगवानदीन, बाबू श्याम सुंदरदास, बालमुकुन्द गुप्त

Discussion / चर्चा

1.4.1 द्विवेदी युगीन हिन्दी आलोचना

भारतेंदु के बाद सम्पूर्ण हिंदी साहित्य पर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का सबसे अधिक प्रभाव रहा। आचार्य द्विवेदी हिंदी के प्रथम लोकवादी आचार्य थे और युग-बोध एवं नवीनता के पोषक थे। भारतेंदु से प्रवर्तित हिंदी आलोचना को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और बाबू श्यामसुन्दरदास ने नवीन ज्ञान-विज्ञान के आलोक में विकसित किया। आचार्य द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के संपादन के द्वारा आलोचना की भाषा का रूप सुस्थिर किया तो बाबू श्यामसुन्दरदास ने आलोचना के आवश्यक उपादान एकत्र करके उन्हें व्यवस्थित और संयोजित किया। भारतेंदु युग के समान द्विवेदी युग में भी आलोचना साहित्य का विकास एक हद तक पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से हुआ था। 'सरस्वती', 'माधुरी', 'वीणा', 'विशाल भारत', 'साहित्य समालोचक', 'मर्यादा' आदि इस समय के महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ थी जिनके माध्यम से आलोचना साहित्य का काफी विकास हुआ।

भारतेंदु युग में आलोचना केवल पुस्तक समीक्षा तक सीमित थी। लेकिन द्विवेदी युग तक आते-आते कई महत्वपूर्ण आलोचना पद्धतियाँ विकसित हुई। इनमें प्रमुख है-

1. शास्त्रीय आलोचना
2. तुलनात्मक आलोचना
3. अनुसंधानपरक आलोचना
4. परिचयात्मक आलोचना
5. व्याख्यात्मक आलोचना

1.4.1.1 शास्त्रीय आलोचना

रीतिकाल एवं भारतेंदु युग में लक्षण ग्रंथ प्रस्तुत करने की जो परंपरा थी उसी को द्विवेदी युग में और प्रश्रय दिय गया। जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' के 'काव्य प्रभाकर' तथा 'छन्द सारावली' और लाला भगवानदीन का 'अलंकार मंजूषा' इसका उदाहरण है।

1.4.1.2 तुलनात्मक आलोचना

▶ तुलनात्मक आलोचना का उत्कर्ष काल - द्विवेदी युग

हिंदी साहित्य में तुलनात्मक आलोचना का उत्कर्ष काल था द्विवेदी युग। 1907 ई में पद्म सिंह शर्मा ने बिहारी और देव की तुलना द्वारा इसका प्रारंभ किया। 1910 ई में मिश्रबंधुओं का 'हिन्दी नवरत्न' प्रकाशित हुआ। इसमें भी तुलनात्मक आलोचना को महत्व दिया गया था। आगे चलकर तुलनात्मक आलोचना की धूम मच गई। लाला भगवानदीन और कृष्णबिहारी मिश्र ने देव और बिहारी की तुलना करते हुए एक दूसरे

को बड़ा सिद्ध करने का प्रयास किया।

1.4.1.3 अनुसंधानपरक आलोचना

▶ द्विवेदी युग के प्रमुख अनुसंधानपरक आलोचक

अनुसंधानपरक आलोचना का विकास 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' के प्रकाशन से हुआ। मिश्रबन्धु विनोद में भी शोधपरक दृष्टि को महत्त्व दिया गया था और कवियों के वृत्त संग्रह के साथ उनकी कृतियों की सूचना तथा उनके काव्य का विवरण भी किया गया था। शोधपरक आलोना के उन्नायकों में श्यामसुंदर दास, जगन्नाथदास रत्नाकर और सुधाकर द्विवेदी उल्लेखनीय है। इन सभी का सम्बन्ध नागरी प्रचारिणी पत्रिका' से रहा है।

1.4.1.4 परिचयात्मक आलोचना

▶ हिंदी कालीदास की आलोचना' प्रसिद्ध परिचयात्मक आलोचना है

परिचयात्मक आलोचना का आरंभ भारतेंदु युग में ही हो चुका था। द्विवेदी युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' पत्रिका में निरंतर परिचयात्मक आलोचना करते थे। इसके द्वारा उन्होंने विषय विवेचन और भाषा संबंधी त्रुटियों की ओर ध्यान आकर्षित करते थे। उन्होंने 'समालोचना-समुच्चय' नाम से एक निबंध संग्रह प्रकाशित किया जिसमें ज्ञान-विज्ञान तथा प्राचीन काव्य से संबंधित उनके कई महत्वपूर्ण लेख संग्रहित हैं। उन्होंने अपनी आलोचना में उन्हीं कृतियों को महत्व दिया जो सामाजिक उत्थान और राष्ट्रीय विकास की भावना फैलने में समर्थ हो। द्विवेदी जी संस्कृत के कालिदास, भवभूति, भक्तिकाल के सूर-तुलसी तथा आधुनिक हिंदी के भारतेंदु तथा मैथिलीशरण गुप्त के प्रशंसक थे। उनका आलोचनात्मक ग्रंथ 'हिंदी कालीदास की आलोचना' हिंदी में आलोचना-साहित्य की किसी कवि पर पूरी तरह विचार करने वाली पहली पुस्तक मानी जाती है।

1.4.1.5 व्याख्यात्मक आलोचना

▶ व्याख्यात्मक आलोचना का प्रारंभ

व्याख्यात्मक आलोचना में आलोच्य विषय की उपयोगिता को ध्यान में रखकर नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय और सौंदर्यपरक मूल्यों के आधार पर विशद और गंभीर विवेचन किया जाता है। भारतेंदु युग में ही बालकृष्ण भट्ट ने 'हिंदी प्रदीप' में 'नील देवी', 'परीक्षा गुरु', 'संयोगिता स्वयंवर'आदि की गंभीर आलोचना करके इस पद्धति को प्रारंभ किया था। बालमुकुंद गुप्त ने 'हिंदी बंगवासी' में 'अश्रुमती' नामक बंगला नाटक के हिंदी अनुवाद की आलोचना द्वारा इस परंपरा को आगे बढ़ाया। आलोचना की इस गंभीर शैली का पूर्ण विकास आगे चलकर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने किया।

1.4.2 द्विवेदी युगीन हिन्दी आलोचक

▶ हिन्दी समालोचना को समृद्ध एवं संपन्न किया

हिंदी आलोचना को विकसित करने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने अठारह वर्षों तक 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन कर हिन्दी समालोचना को समृद्ध एवं संपन्न किया। तत्कालीन आलोचना का विकास मुख्यतः पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से हुआ था। 1902 ई. में पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने जयपुर से

'समालोचक' नामक पत्र निकाला था जिसमें मुख्यतः आलोचनात्मक लेख प्रकाशित होते थे। द्विवेदी युग में तुलनात्मक, परिचयात्मक एवं अध्यापकीय आलोचना का सूत्रपात हुआ। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी इस कालखंड के प्रमुख एवं प्रतिनिधि आलोचक थे। उन्हीं का अनुकरण करते हुए अन्य लेखक भी आलोचना की ओर अग्रसर हुए। इस समय के अन्य प्रमुख आलोचक थे - मिश्रबंधु, पद्मसिंह शर्मा, कृष्ण बिहारी मिश्र, लाला भगवानदीन, बाबू श्याम सुंदरदास, बालमुकुन्द गुप्त आदि।

1.4.2.1 आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

- आलोचना परिचयात्मक होने के साथ कृतियों के गुण-दोषों पर भी प्रकाश डालते हैं।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी आलोचना को नवीन सांस्कृतिक भूमि पर प्रतिष्ठित किया। द्विवेदीजी साहित्य को उपयोगिता की कसौटी पर आँकते थे। उन्होंने संस्कृत के कई लब्धप्रतिष्ठ कवियों की समालोचना की। 'विक्रमांकदेव चरित', 'नैषध चरित चर्चा' तथा 'कालिदास की निरंकुशता' आदि इनमें प्रमुख हैं। उनकी आलोचना परिचयात्मक होने के साथ कृतियों के गुण-दोषों पर भी प्रकाश डालते हैं। आचार्य द्विवेदीजी यथार्थ को काव्य के लिए आवश्यक मानते हैं। यथार्थ से उनका तात्पर्य कवि द्वारा अनुभूत सत्य से है। उनके अनुसार कवि को किसी दबाव में आकर अपने ऊपर कोई पाबंदी नहीं लगानी चाहिए।

- कविता का अतीत और भविष्य भाषा के अतीत और भविष्य से जुड़ा हुआ है

'कविता और भविष्य' नामक प्रसिद्ध निबंध में वे कविता के अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में बताते हैं। उनके अनुसार कविता का अतीत और भविष्य भाषा के अतीत और भविष्य से जुड़ा हुआ है। भावों की वृद्धि के साथ भाषा में भी परिवर्तन होता है। भाषा के साथ कविता में परिवर्तन लाने के लिए कवि को अपने अंतर्जगत की ओर देखना चाहिए। उन्हें किसानों एवं मजदूरों को अपने काव्य का नायक बनाना चाहिए। इस निबंध में द्विवेदी जी काव्य में भाव के अधिपत्य को स्वीकार करते हैं। साथ ही वह भाषा की उन्नति के साथ कविता की उन्नति को जोड़ते हैं। प्रस्तुत निबंध के द्वारा वे निम्न वर्ग के लोगों को नायक बनाने का उपदेश देते हैं।

- 'कवि कर्तव्य' नामक निबन्ध में द्विवेदीजी के कविता सम्बन्धी विचार मिलते हैं।

'कवि कर्तव्य' नामक निबन्ध से द्विवेदी के कविता सम्बन्धी विचारों का पता चलता है। उनका मत है कि गद्य और पद्य की भाषा पृथक-पृथक नहीं होनी चाहिए। साहित्य उसी भाषा में रचा जाना चाहिए, जिसे सभ्य समाज व्यवहार में लाता है। वे व्यावहारिक आलोचक थे। सरस्वती पत्रिका के संपादक के रूप में उनके अनेक आलोचनाएँ प्रकाशित हो चुके थे। वे हिन्दी के पहले व्यवस्थित समालोचक थे, जिन्होंने समालोचना की कई पुस्तकें लिखीं। 'नाट्यशास्त्र', 'विक्रमांकदेव चरितचर्या', 'हिंदी भाषा की उत्पत्ति और संपत्ति शास्त्र', 'काव्य मंजूषा', 'कविता कलाप', 'देवी-स्तुति', 'शतक गंगालहरी', 'ऋतु तरंगिणी', 'कुमारसंभव सार', 'देवी स्तुति- शतक', ' कान्यकुब्जावलीव्रतम' आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। द्विवेदी जी ने भाषा का परिष्कार किया। किन्तु वे गद्य का आदर्श रूप प्रस्तुत नहीं कर पाए। उनके संबंध में यही बताया जाता है कि 'उन्होंने

समालोचना का मार्ग तो दिखाया लेकिन सफल आलोचक नहीं बन सके।'

1.4.2.2 बालमुकुन्द गुप्त

भारतेंदु युगीन लेखक बालमुकुन्द गुप्त व्यावहारिक आलोचक थे। उन्होंने भी अपने समकालीन अन्य आलोचकों के समान पुस्तक समीक्षा के रूप में अपनी समीक्षाओं को प्रस्तुत किया है। वे कृतियों को उसकी समग्रता में न देखकर केवल उनके दुर्बल पक्षों के उद्घाटन तक ही अपने को सीमित रखते थे। कृतियों से पड़नेवाले सामाजिक प्रभाव को ही वे प्रमुखता देते हैं। उन्होंने हिंदी के अतिरिक्त बंगला पुस्तकों की भी समीक्षा की है। बालमुकुन्द की समीक्षाओं में मुंशी उदित नारायण लाला द्वारा अनूदित बंगला नाटक 'अश्नुमती', किशोरी लाल गोस्वामी के 'तारा उपन्यास', 'अधखिला फूल', 'तुलसी सुधाकर', 'प्रवासी' आदि प्रमुख हैं।

▶ समकालीन अन्य आलोचकों के समान पुस्तक समीक्षा के रूप में अपनी समीक्षाओं को प्रस्तुत किया है

1.4.2.3 बाबू श्याम सुंदरदास

द्विवेदी युगीन आलोचकों में बाबू श्याम सुंदरदास का प्रमुख स्थान है। इन्होंने आलोचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। बाबूजी सैद्धांतिक और व्यावहारिक आलोचना में माहिर थे। लेकिन वे दोनों का समन्वय नहीं कर सके। उनके सबसे प्रसिद्ध रचना है 'साहित्यालोचन'। इसके द्वारा उन्होंने विद्यार्थी और पाठक वर्ग के लिए आलोचना शास्त्र को सुलभ कर दिया। इस ग्रंथ में उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य सिद्धांतों का समन्वय करके साहित्य समीक्षा को उदार बनाया। स्नातकोत्तर छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बाबू श्यामसुंदर दास ने 'रूपक रहस्य' और 'भाषा रहस्य' नामक और दो ग्रन्थों की भी रचना की। उन्होंने कवियों की प्रामाणिक जीवनी अद्वितीय ढंग से प्रस्तुत की। उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना आदि नवीन विधाओं का भी विवेचन किया। नाटक पर उन्होंने 'रूपक रहस्य' की रचना की।

▶ सैद्धांतिक और व्यावहारिक आलोचना में माहिर

'कबीर ग्रंथावली की भूमिका', 'हिंदी साहित्य का इतिहास' तथा 'भारतेंदु हरिश्चंद्र' उनकी व्यावहारिक आलोचना के प्रतिनिधि ग्रंथ हैं। इनके अतिरिक्त बाबूजी ने पत्र-पत्रिकाओं में बहुत से आलोचनात्मक लेख भी लिखे। 'नागरी प्रचारिणी' पत्रिका में उनके लेख बराबर प्रकाशित होते रहे। प्राचीन पुस्तकों के शोध कार्य का विवरण भी इसी पत्रिका के माध्यम से देते रहे। इस प्रकार बाबूजी ने हिंदी के आलोचना शास्त्र को स्वतंत्र रूप से विकसित करने का प्रयत्न किया और इस दिशा में कार्य करने के लिये अध्यापकों और शोधार्थियों को प्रोत्साहित भी किया।

▶ हिंदी के आलोचना शास्त्र को स्वतंत्र रूप से विकसित करने का प्रयत्न किया

1.4.2.4 मिश्रबंधु

गणेश बिहारी मिश्र, शुकदेव बिहारी मिश्र और श्यामबिहारी मिश्र नामक तीन भाई 'मिश्रबन्धु' सम्मिलित नाम से आलोचना करते थे। उन्होंने 'हिंदी नवरत्न' नमक समालोचनात्मक ग्रंथ लिखा। इसमें हिंदी के प्राचीन एवं आधुनिक नौ कवियों की समीक्षा की गई है। ये कवि इस प्रकार हैं - तुलसीदास, सूरदास, देव, बिहारी, भूषण, मतिराम, केशवदास, कबीर, चंद्रवरदाई और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र। परवर्ती हिन्दी आलोचना में जिसे

▶ मिश्रबन्धुओं ने 'हिंदी नवरत्न' नमक समालोचनात्मक ग्रंथ लिखा।

तुलनात्मक आलोचना के रूप में जाना गया, उसके प्रवर्तन का श्रेय मिश्रबंधुओं को है। 'हिन्दी नवरत्न' में उन्होंने देव को श्रेष्ठ कवि घोषित किया। बिहारी समर्थक आलोचकों ने इसका प्रतिवाद किया, जिससे 'देव बड़े कि बिहारी' का झगड़ा प्रारम्भ हुआ। इससे हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना का सूत्रपात हुआ। इस बहस में पण्डित कृष्ण बिहारी मिश्र, लाला भगवानदीन, पण्डित पद्मसिंह शर्मा आदि विद्वानों ने भी हिस्सा लिया।

'हिंदी नवरत्न' में उन्होंने कवियों की जीवनियों के साथ उनके काव्यगत वैशिष्ट्य को भी उद्घाटित किया। इसमें जो सामग्री है वह आलोचक और इतिहासकार दोनों के लिए उपयोगी है। इन नौ कवियों का चयन मिश्रबंधुओ ने कवियों की परस्पर तुलना के द्वारा किया है। उनकी दूसरी रचना 'मिश्रबंधु विनोद' में पाँच हजार के लगभग कवियों एवं लेखकों का परिचायत्मक विवरण मिलता है। इनकी समीक्षा पद्धति की सर्वप्रमुख विशेषता श्रेणी विभाजन है जिसके मूल में शास्त्रीयतायुक्त काव्योत्कर्ष और तुलना है। दोषों की अपेक्षा उन्होंने गुणों की ही ज़्यादा चर्चा की है। मिश्रबंधु केवल आलोचक ही नहीं थे बल्कि सफल इतिहासकार भी थे।

▶ मिश्रबन्धुओं की दूसरी रचना है 'मिश्रबंधु विनोद'।

द्विवेदी युगीन आलोचना भारतेंदु कालीन आलोचना के समान प्रेरणा देने का कार्य ही अधिक करती थी। इस काल के प्रतिनिधि लेखक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी इतिवृत्तात्मकता को प्रधानता देने वाले थे। इसलिए तत्कालीन आलोचना को एक हद तक शुष्क और नीरस बता सकते हैं। फिर भी भारतेंदु द्वारा प्रारंभ किए गए कार्य को द्विवेदी जी ने आगे बढ़ाया। द्विवेदी युग में आलोचना का गंभीर रूप बाहर नहीं आया।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

द्विवेदी युग में आलोचना का रूप भरतेंदु युग से आधिक निखरा हुआ है। साथ ही इस समय आलोचना की कई नई पद्धातियाँ भी विकसित हुई। एक ओर जगन्नाथप्रसाद भानु और लाला भगवानदीन ने संस्कृत काव्यशात्र के अनुकरण कर सैद्धान्तिक आलोचना के ग्रन्थ लिखे तो दूसरी ओर पद्मसिंह शर्मा और मिश्र बन्धुओं ने 'हिन्दी नवरत्न' तथा 'मिश्रबन्धु विनोद' की रचना कर हिन्दी में पहली बार तुलनात्मक आलोचना की शुरुआत की। जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' जैसे आलोचकों ने पाश्चात्य समीक्षकों के आलोचनात्मक कृतियों का अनुवाद भी प्रस्तुत किया। द्विवेदी युग में बिहारी और देव को लेकर विवाद शुरू हुआ। पद्मसिंह शर्मा ने 'बिहारी सतसई की टीका' में बिहारी को श्रृंगार रस का सर्वश्रेष्ठ कवि माना है। तदुपरान्त कृष्ण बिहारी मिश्र ने 'देव और बिहारी' नामक पुस्तक लिखकर देव को श्रेष्ठ माना, वहीं लाला भगवान दीन ने 'बिहारी और देव' लिखकर इसका जमकर विरोध किया। संक्षेप में द्विवेदी युग में आलोचना का गंभीर एवं तात्वगक रूप बाहर नहीं आया।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. द्विवेदी युगीन आलोचना पर लेख तैयार कीजिए।
2. द्विवेदी युगीन आलोचना की प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए।
3. हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में महावीर प्रसाद द्विवेदी का स्थान निर्धारित कीजिए।
4. द्विवेदी युगीन आलोचकों का परिचय दीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी समीक्षा: स्त्रोत एवं सुत्रधार- सत्यदेव मिश्र
2. आलोचना और आलोचना: बच्चन सिंह
3. हिंदी आलोचना का विकास- नंदकिशोर नौसैनिक

Web Reference / अंतर्जाल संदर्भ

1. https://hindisarang.com/dwivedi-yugeen-hindi-aalochna/
2. https://www.studocu.com/in/document/kannur-university/literary-criticism
3. https://hi.m.wikibooks.org/
4. http://hindisahitya2010.blogspot.com/2011/11/blog-post_20.html?m=1

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिंदी साहित्य का इतिहास- डॉ नगेंद्र : डॉ हरदयाल
2. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - शिवकुमार शर्मा
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह
4. हिन्दी आलोचना - कशिश गोयल
5. आलोचना और आलोचना - बच्चन सिंह

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 02

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और उनका युग

Block Content

Unit 1: शुक्लजी और उनका युग- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, गुलाबराय, बाबू श्यामसुंदरदास, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

Unit 2: स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना- जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा

Unit 3: ऐतिहासिक समीक्षा- हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. रामकुमार वर्मा, शांतिप्रिय द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी

Unit 4: सैद्धांतिक समीक्षा-गुलाबराय, नयी समीक्षा, यथार्थवाद, बिंबवाद, प्रतीकवाद

इकाई 1

शुक्लजी और उनका युग- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, गुलाबराय, बाबू श्यामसुंदरदास, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- शुक्ल युगीन आलोचना से परिचित होता है
- शुक्ल युगीन आलोचना की प्रवृत्तियों को समझता है
- शुक्ल युगीन अन्य लेखकों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- आलोचना साहित्य के विकास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के योगदान को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

द्विवेदी युग में समालोचना केवल बहिरंग पक्ष तक सीमित थी। उसमें मानव के अंतःवृत्तियों का सूक्ष्म एवं विशद विश्लेषण करने की क्षमता नहीं थी। समालोचना की यह कमी आचार्य रामचंद्र शुक्ल की व्यावहारिक आलोचना से दूर हुई। इस युग में आलोचकों का ध्यान गुण-दोष कथन से आगे बढ़कर कवियों की विशेषताओं और उनकी अंतःवृत्ति की छानबीन की ओर गया। शुक्ल जी ने हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में अपना विशिष्ट व्यक्तित्व स्थापित किया। वे एक ऐसे आलोचक के रूप में प्रतिष्ठित हुए जिनमें सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक समीक्षा का उत्कृष्ट रूप दिखाई पड़ता है। आचार्य शुक्लजी और उनके सहयोगी लेखकों ने हिन्दी समालोचना को उसके उत्कर्ष तक पहुँचाया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

शुक्ल युग, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक आलोचना, बाबू गुलाब राय, बाबू श्यामसुंदरदास, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

Discussion / चर्चा

2.1.1 शुक्लजी और उनका युग

हिन्दी आलोचना में शुक्ल युग को सबसे महत्वपूर्ण युग माना जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्विवेदी युग में ही आलोचना जगत में प्रवेश कर चुके थे। उन्होंने अपनी अलौकिक प्रतिभा के बल पर हिन्दी आलोचना को सर्वोच्च शिखर तक पहुँचाया। शुक्ल जी ने आलोचना को वैज्ञानिकता प्रदान की। हिन्दी आलोचना के इस काल को उसके उत्थान का तृतीयकाल कहा जाता है। आचार्य शुक्लजी के समय में ही द्विवेदी युगीन नैतिकता और इतिवृत्तात्मकता के विरोध में छायावाद का उदय हो चुका था। नए युग और नई प्रवृत्ति के लिए नए प्रकार की आलोचना की आवश्यकता थी। नवीन साहित्य का मूल्यांकन पुरानी काव्यशास्त्रीय पद्धति पर करना सम्भव नहीं था। आचार्य शुक्लजी ने आलोचना का केन्द्र हिन्दी के भक्तिकाल को बना दिया, तथा स्वयं तुलसीदास, सूरदास व जायसी पर विस्तृत समीक्षाएँ लिखीं। उन्होंने कविता में अनुभूति को प्रधानता दी। शुक्लयुगीन हिन्दी आलोचना का अवलोकन दो भागों में बांट कर किया जा सकता है।

▶ कविता क्या है', 'काव्य में रहस्यवाद', 'रसमीमांसा' आदि शुक्लजी की प्रमुख सैद्धान्तिक आलोचनात्मक' रचनाएँ हैं।

1. सैद्धान्तिक आलोचना।
2. व्यावहारिक आलोचना

2.1.1.1 सैद्धान्तिक आलोचना

शुक्ल युग में भी कुछ लक्षण ग्रंथों की रचना तथा काव्यांगों का विवेचन हुआ। शुक्ल जी ने इस काल में आलोचना के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान दिया। उनकी आलोचनात्मक रचनाएँ 'कविता क्या है', 'काव्य में रहस्यवाद', 'रसमीमांसा' आदि सैद्धान्तिक आलोचना के उत्तम उदाहरण हैं। आचार्य शुक्ल के अलावा गुलाबराय की रचना 'नवरस', विश्वनाथ प्रसाद मिश्र की रचना 'काव्यांग कौमुदी', लक्ष्मी नारायण सुधांशु की रचना 'काव्य में अभिव्यंजनावाद', रमाशंकर शुक्ल रसाल की रचना 'आलोचनादर्श', डॉ रामकुमार वर्मा की रचना 'साहित्य समालोचना' आदि विशेष उल्लेखनीय है।

2.1.1.2 व्यावहारिक आलोचना

इस युग में शुक्ल जी ने व्यावहारिक आलोचना में 'तुलसीदास', 'तुलसी ग्रंथावली' आदि के द्वारा कवि के काव्यगुणों का परिचय करवाया। इसी तरह 'भ्रमर गीत सार' का भी शुक्ल जी ने सम्पादन किया। इस युग के अन्य व्यावहारिक आलोचनाओं में कृष्ण शंकर शुक्ल की रचना 'केशव की काव्य कला', विश्वनाथ प्रसाद मिश्र की रचना 'बिहारी की वाग्विभूति', रामकृष्ण शुक्ल की रचना 'प्रसाद की नाट्य कला', डॉ.रामकुमार वर्मा की रचना 'कबीर का रहस्यवाद', जनार्दन मिश्र की रचना 'विद्यापति',

भुवनेश्वर प्रसाद मिश्र की रचना 'मीरा की प्रेम साधना', रामनाथ सुमन का 'महाकवि हरिऔध', गुप्त जी की 'काव्यधारा' आदि उल्लेखनीय है।

शुक्ल युग से पूर्व हिंदी आलोचना में दोष-दर्शन, गुणकथन, निर्णय, तुलना आदि को प्रमुखता दी जाती थी। आचार्य शुक्ल ने अपनी आलोचना में विश्लेषण (Analysis), विवेचन (Interpretation) और निगमन (Induction) जैसे तत्वों को प्रमुखता दी जिनमें आलोचक की तटस्थता का तत्व भी निहित था। आलोच्य युग में लेखक विशेष के सामान्य गुण-दोष प्रकट करने के साथ ही उनकी रचना की मूल प्रवृत्तियों और उसमें निहित शाश्वत तत्वों की छानबीन भी की गयी। कृति को देशकाल सापेक्ष रखकर परखा गया और मानवीय मूल्यों को प्रमुखता दी गयी। इतना ही नहीं संस्कृत काव्य शास्त्रीय सिद्धांतों के प्रकाश में नये पश्चिमी काव्य शास्त्रीय सिद्धांतों को भी स्थान दिया गया। समीक्षा की इस नयी परिपाटी को जन्म देने का श्रेय आचार्य रामचन्द्र शुक्ल को है। इसीलिए इस युग को 'शुक्ल युग' के नाम से अभिहित किया गया।

▶ रामचन्द्र शुक्ल ने समीक्षा की नयी परिपाटी को जन्म दिया। इसीलिए इस युग को 'शुक्ल युग' के नाम से अभिहित किया गया

2.1.2 आचार्य रामचंद्र शुक्ल

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी समालोचना-साहित्य को सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होने अपने व्यापक और गंभीर अध्ययन, काव्यगुणों को पहचानने की अद्‌भुत क्षमता और विश्लेषण-बुद्धि के द्वारा हिन्दी-समालोचना को अभूतपूर्व उत्कर्ष प्रदान किया। उन्होंने अपने विवेचन के लिए हिन्दी के तीन बड़े कवियों गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास और जायसी को चुना। तुलसीदास उनके प्रिय कवि थे। अतः सर्वप्रथम उन्होंने 'तुलसी-ग्रंथावली' (1923) का संपादन किया। उसकी भूमिका में 'रामचरितमानस' तथा तुलसी के अन्य ग्रंथों के काव्यसौंदर्य का विस्तारपूर्वक उद्‌घाटन किया। तुलसीदास समस्त भारत में महान भक्त और कवि के रूप में विख्यात थे। पर उनके काव्यगुणों का सम्यक उद्‌घाटन शुक्ल जी के पूर्व किसी आलोचक के द्वारा नहीं हुआ था। उनकी यही भूमिका बाद में 'गोस्वामी तुलसीदास' (1933) शीर्षक से स्वतंत्र ग्रंथ के रूप में प्रकाशित हुई। इसी भांति उन्होंने 'जायसी-ग्रंथावली' (1925) और 'भ्रमरगीतसार' (1926) का संपादन कर इनकी लंबी भूमिकाओं में जायसी और सूरदास की काव्योपलब्धियों का सूक्ष्म विवेचन किया। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' (1929) उनके गंभीर अध्ययन और विश्लेषण-सामर्थ्य का प्रमाण है।

▶ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' शुक्लजी का प्रमुख इतिहास ग्रंथ है।

शुक्ल जी रसवादी, नीतिवादी और लोकमंगलवादी आलोचक हैं। वे तुलसी और जायसी जैसे कवियों के काव्यसौष्ठव का सम्यक उद्‌घाटन कर सके। लेकिन सूरदास, रीतिकवियों और आधुनिक कवियों के साथ पूरा न्याय नहीं कर पाये। उन्होने कवि-रूप में सूरदास की श्रेष्ठता को स्वीकार तो किया, लेकिन तुलसी के समकक्ष नहीं रखा। क्योंकि उनके अनुसार सूरदास ने 'लोकपक्ष' पर उतना ध्यान नहीं दिया, जितना तुलसीदास ने। उन्होंने कबीर को तो विवेचन के योग्य भी नहीं समझा।

▶ शुक्ल जी रसवादी, नीतिवादी और लोकमंगलवादी आलोचक हैं।

▶ शुक्ल जी की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ

'चिंतामणि', 'रस मीमांसा', 'काव्य में रहस्यवाद', 'अभिव्यंजनावाद', आदि शुक्ल जी की प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ हैं। चिंतामणि में संग्रहित निबंध, 'काव्य में लोक-मंगल की साधनावस्था' आदि उनके सैद्धांतिक आलोचनाएँ हैं। तुलसी, जायसी, सूर, छायावाद, रहस्यवाद आदि पर लिखित समीक्षा इनकी व्यावहारिक आलोचनाएँ हैं।

▶ सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक आलोचना के साथ गवेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक आलोचना का भी मार्ग प्रशस्त किया

'काव्य में रहस्यवाद' शुक्ल जी की पहली सैद्धांतिक आलोचना है। ये पहले समीक्षक है जिन्होंने कवियों की आंतरिक विशेषताओं पर प्रकाश डाला और प्राचीन रस पद्धति और पाश्चात्य समालोचना पद्धति का समन्वय किया। इन्होंने सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक आलोचना के साथ गवेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक आलोचना का भी मार्ग प्रशस्त किया। इनकी भाषा गंभीर और परिष्कृत साहित्यिक हिन्दी है। वस्तुतः आचार्य रामचंद्र शुक्ल का हिन्दी आलोचना में गौरवपूर्ण स्थान है। ये आलोचना के क्षेत्र में पथ प्रदर्शक आचार्य है। अपनी आलोचना से इन्होंने अनेक नये प्रतिमान स्थापित किये। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों में - 'आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसा गंभीर और स्वतंत्र समालोचक हिन्दी में तो क्या अन्य भारतीय भाषाओं में दूसरा न हुआ।'

2.1.3 बाबू गुलाब राय

▶ गुलाब राय के आलोचनात्मक ग्रंथ

बाबू गुलाब राय ने छात्रोपयोगी पुस्तकें लिखीं जिनका मुख्य उद्देश्य भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का विश्वसनीय और प्रामाणिक परिचय प्रस्तुत करना था। इसी दृष्टि से उन्होंने 'सिद्धान्त और अध्ययन' तथा 'काव्या के रूप' की रचना की। ये दोनों पुस्तकें पूर्णता और स्पष्टता के साथ विद्यार्थियों को काव्यांगों, रस, रीति, लक्षणा, व्यंजना, अलंकार आदि का सामान्य परिचय देता है। उन्होंने साहित्यिक सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया है। 'हिंदी काव्य विमर्श', 'साहित्य समीक्षा' आदि उनके व्यावहारिक आलोचनात्मक ग्रंथ हैं। उन्होंने 'साहित्य संदेश' नामक आलोचनात्मक पत्रिका का सम्पादन करके हिंदी आलोचना के प्रचार-प्रसार में काफी योगदान दिया।

2.1.4 बाबू श्यामसुंदर दास

▶ भारतीय और पाश्चात्य सिद्धांतों का समन्वय करके साहित्य समीक्षा को उदार बनाया

शुक्ल जी के समकालीन आलोचकों में बाबू श्यामसुंदर दास का प्रमुख स्थान है। उन्होंने द्विवेदी काल में आलोचना आरंभ की तो भी शुक्ल युग में ही उनकी प्रतिभा का उत्कर्ष हुआ था। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना है 'साहित्यालोचन'। इसके द्वारा उन्होंने विद्यार्थी और पाठक वर्ग के लिए आलोचना शास्त्र को सुलभ कर दिया। इस ग्रंथ में उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य सिद्धांतों का समन्वय करके साहित्य समीक्षा को उदार बनाया। स्नातकोत्तर छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बाबू श्यामसुंदर दास ने 'रूपक रहस्य' और 'भाषा रहस्य' नामक और दो ग्रन्थों की भी रचना की। उन्होंने कवियों की प्रामाणिक जीवनी अद्वितीय ढंग से प्रस्तुत की। उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना आदि नवीन विधाओं का भी विवेचन किया। 'रूपक रहस्य' नाटक पर आधारित रचना है।

▶ हिंदी के आलोचना शास्त्र को स्वतंत्र रूप से विकसित करने का प्रयत्न किया

'कबीर ग्रंथावली की भूमिका', 'हिंदी साहित्य का इतिहास' तथा 'भारतेंदु हरिश्चंद्र' उनकी व्यावहारिक आलोचना के प्रतिनिधि ग्रंथ हैं। इनके अतिरिक्त बाबूजी ने पत्र-पत्रिकाओं में बहुत से आलोचनात्मक लेख भी लिखे। 'नागरी प्रचारिणी' पत्रिका में उनके लेख निरंतर प्रकाशित होते थे। प्राचीन पुस्तकों के शोध कार्य का विवरण भी इसी पत्रिका के माध्यम से देते रहे। इस प्रकार बाबूजी ने हिंदी के आलोचना शास्त्र को स्वतंत्र रूप से विकसित करने का प्रयत्न किया और इस दिशा में कार्य करने के लिए अध्यापकों और शोधार्थियों को प्रोत्साहित भी किया।

2.1.5 पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

▶ उपन्यास को जनता के साहित्य के रूप में स्वीकृति दी

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने 'हिन्दी साहित्य विमर्श', 'विश्व साहित्य' जैसी पुस्तकों के द्वारा हिन्दी-साहित्य में तुलनात्मक आलोचना का मार्ग प्रशस्त किया। साथ ही 'हिन्दी कहानी साहित्य', 'हिन्दी उपन्यास साहित्य' जैसी पुस्तक से कथालोचना की गंभीर और व्यवस्थित शुरूआत की। उन्होंने उपन्यास को जनता के साहित्य के रूप में स्वीकृति दी। वे पहले आलोचक हैं जिन्होंने देवकीनन्दन खत्री के जादुई प्रभाव को स्वीकार किया। ये प्रेमचन्द की चमत्कारिक सफलता का रहस्य उनके पात्र और कथ्य को मानते हैं। क्योंकि वह पात्र हमारे समाज के ही व्यक्ति हैं और उनकी कथाओं में हमारे ही घरों के चित्र अंकित हैं। उनकी समस्याएँ हमारी ही समस्याएँ हैं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिंदी के युगद्रष्टा आलोचक हैं। एक गंभीर विचारक होने के कारण उन्होंने हिंदी समीक्षा को व्यवस्थित एवं उच्च भावभूमि पर प्रतिष्ठित किया। सबसे पहले शुक्लजी ने ही कवियों और उनकी कृतियों तथा साहित्य की सामान्य प्रवृत्तियों को सामाजिक पृष्ठभूमि में रखकर परखा। मूल रूप से उनका विवेच्य विषय काव्यालेचना ही रहा है। उन्होंने काव्य के अन्तर्गत आने वाले रस, भाव, मनोविकार, साधारणीकरण, रीति, अलंकार आदि को अपना आलोच्य-विषय बनाया उन्होंने इन विषयों का वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन और विश्लेषण किया है। आलोचना के सैद्धांतिक और प्रायोगिक-दोनों रूपों में शुक्ल जी ने पर्याप्त योगदान दिया है। पर उनका क्षेत्र सीमित रहा, उन्होंने प्राचीन कवियों, विशेषकर तुलसी, जायसी और सूर के विवेचन में तो उच्चकोटि की आलोचनात्मक क्षमता का परिचय दिया है। पर आधुनिक कवियों के प्रति वे अनौचित्य की सीमा तक अनुदार हो गये। बाद में उन्होंने छायावादी काव्य में कुछ अच्छाइयाँ भी देखीं, पर उनका मूल स्वर विरोधी ही रहा।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. शुक्ल युगीन आलोचना पर लेख तैयार कीजिए।
2. शुक्ल युगीन आलोचना की शैलियों का परिचय दीजिए।
3. हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का स्थान निर्धारित कीजिए।
4. शुक्ल युगीन आलोचकों का परिचय दीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी समीक्षा: स्त्रोत एवं सुत्रधार- सत्यदेव मिश्र
2. आलोचना और आलोचना: बच्चन सिंह
3. हिंदी आलोचना का विकास- नंदकिशोर नौसैनिक
4. आलोचना के प्रगतिशील आयाम शिव कुमार मिश्र

Web Reference / अंतर्जाल संदर्भ

1. https://hi.wikibooks.org/wiki/%
2. http://www.socialresearchfoundation.com/upoadreserchpapers/3/
3. https://ebooks.inflibnet.ac.in/hinp01/chapter/
4. https://youtu.be/w-Jh355klPE?si=i9MSIDghzuB1qA3U
5. https://youtu.be/qPZxIP0uSoc?si=PklQ0mowWrlxMn_e

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिंदी साहित्य का इतिहास- डॉ. नगेन्द्र
2. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह
3. काव्यशास्त्र - डॉ भागीरथ मिश्र
4. हिन्दी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी
5. हिंदी आलोचना एक संयक दृष्टि – डॉ हरेराम सिंह

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना- जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना से परिचित हो सकता है
- स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना की प्रवृत्तियों को समझ सकता है
- आलोचक जयशंकर प्रसाद के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है
- आलोचक सुमित्रानंदन पंत के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है।
- आलोचक सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है
- आलोचक महादेवी वर्मा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है

Background / पृष्ठभूमि

हिंदी साहित्य में छायावाद के अभ्युदय के साथ ही आलोचना के क्षेत्र में स्वच्छंदतावादी प्रवृतियाँ उभरने लगी थी। स्वच्छंदतावादी आलोचक किसी भी वाद या विचारधारा का पक्षधर न होकर अपने निजी विचारों को प्रकट करते थे। इन आलोचकों ने शुक्लजी के मत का खंडन किया। उनका उद्देश्य शुक्ल जी द्वारा छायावाद पर लगाए गए आरोपों को गलत साबित करना था। इन आलोचकों ने साहित्य की जड़ता, कृत्रिमता, रूढियों तथा अप्रासंगिक होती हुई लेखन परम्पराओं से विद्रोह किया। स्वच्छंदतावादी आलोचना में वैयक्तिकता, कल्पनाशीलता और स्वानुभूति को एक मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है। इसमें रचनाकार की अंतर्वृतियों का अध्ययन अनिवार्य मानते हैं। स्वच्छंदतावादी प्रभाव से हिंदी आलोचना बंधे-बंधाये ढाँचे से बाहर निकलकर नाना रूपों में प्रकट हुई।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना, पं.नंददुलारे वाजपेयी, नगेन्द्र, शांतिप्रिय द्विवेदी, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा

Discussion / चर्चा

2.2.1 स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना

छायावाद के साहित्यिक विश्लेषण के लिए स्वच्छंदतावादी समीक्षा पद्धति की शुरुआत हुई। इसके तत्वों का निर्माण छायावाद की प्रमुख विशेषताओं से हुआ। साथ ही अंग्रेजी के रोमांटिक क्रिटिसिज्म का भी इस पर प्रभाव पड़ा। इसमें शास्त्रीय मान्यताओं, परंपराओं, रूढ़ियों और कृत्रिमता से मुक्ति का प्रयास करते हुए आत्मानुभूति, कल्पना, सहजता और स्वच्छंदता के आधार पर रचनाओं का मूल्यांकन किया जाता है। स्वच्छंदतावादी आलोचकों ने प्राचीन सिद्धांतों से हट कर काव्य में सूक्ष्म-सौन्दर्य देखने का प्रयत्न किया। आलोचकों ने उपादेयता के आधार पर साहित्य का मूल्यांकन न कर आनंद को प्रधानता दी। इस समीक्षा में जीवन के प्रति एक ऐसा भावमय दृष्टिकोण है जो अनुभूति को केन्द्र में रखकर विकसित हुई है। शुक्ल जी ने समीक्षा के जो मानदंड निर्धारित किए वह भक्तिकालीन और रीतिकालीन साहित्य पर खरे उतरते थे। समाज से अधिक जुड़े आधुनिक साहित्य की समीक्षा के लिए नए मानदंडों की आवश्यकता थी। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी, डॉ नगेंद्र, शांतिप्रिय द्विवेदी आदि आलोचकों ने इस कमी को पूरा किया। इन्होंने पूर्व प्रचलित समीक्षा पद्धतियों के स्थान पर नवीन समीक्षा पद्धतियों को स्थापित किया। इन तीनों समर्थ आलोचकों ने शुक्लजी से टकराकर एक ओर उनकी श्रेष्ठता को स्वीकार किया तो दूसरी ओर अपने लिए नया मार्ग ढूँढ़कर हिन्दी आलोचना को आगे बढ़ाया। छायावाद के मूल्यांकन के प्रश्न पर इन आलोचकों ने आचार्य शुक्ल का विरोध किया।

▶ आचार्य नंददुलारे वाजपेयी को छायावाद के मूर्धन्य आलोचक माने जाते हैं।

छायावादी कविता को साहित्य जगत में प्रतिष्ठित करने का श्रेय आचार्य नंददुलारे वाजपेयी को है। वे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के बाद हिन्दी आलोचना को नई दृष्टि देने वाले आलोचक हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य में सौष्ठववादी समीक्षा पद्धति का प्रारंभ किया। इसके लिए इन्होंने पश्चात्य एवं भारतीय साहित्य चिंतन का समन्वय किया। इनकी समालोचना पद्धति में हम रसवादी और स्वच्छतावादी समीक्षा पद्धतियों का मिश्रण देख सकते हैं।

▶ वाजपयाजी ने शुक्लजी की सीमाओं को उद्घाटित किया।

वाजपेयी जी ने शुक्लजी की सीमाओं को उद्घाटित किया। उन्होंने छायावादी काव्य के संदर्भ में शुक्लजी के दृष्टिकोण को नवीन साहित्यिक संवेदना के लिए अनुपयुक्त माना। उनके अनुसार अपने पूर्वग्रह और द्विवेदीकालीन संस्कारों के कारण शुक्लजी छायावादी काव्य के साथ न्याय नहीं कर सके। नये छायावादी काव्य के मार्ग में पड़नेवाले समस्त अवरोधक तत्त्वों का वाजपेयीजी ने जबर्दस्त विरोध किया। उन्होंने प्रसाद, पंत और निराला की काव्य प्रतिभा से परिचित कराते हुए छायावादी कविता और उसके गौरव को प्रतिष्ठापित किया।

डॉ. नगेन्द्र स्वच्छंदतावादी सौष्ठववादी समीक्षा पद्धति के प्रमुख आलोचक हैं। उन्होंने हिन्दी-आलोचना को व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक दोनों दृष्टियों से संपन्न किया। छायावादी काव्य की अन्तर्मुखी साधना, सौन्दर्य चेतना और कलात्मकता के प्रति उनका विशेष आकर्षण था। उन्होंने समीक्षा का आरंभ छायावाद पर स्फुट निबंध से किया। 'हंस' पत्रिका में उनका पहला निबंध 'सुमित्रानंदन पंत' पर प्रकाशित हुआ था। 'सुमित्रानंदन पंत' नामक पुस्तक में उन्होंने पंत जी की कविताओं की सुंदर समीक्षा की है।

▶ डॉ. नगेन्द्र मूलतः रसवादी आलोचक हैं

धीरे-धीरे वे व्यावहारिक आलोचना से सैद्धांतिक आलोचना की ओर आकृष्ट हुए। 'रीतिकाव्य की भूमिका' तथा 'देव और उनकी कविता' में इसका स्पष्ट आभास मिलता है। अपनी व्यावहारिक आलोचनाओं के लिए उन्होंने विविध विषय चुने हैं- काव्य, उपन्यास, नाटक, रेखाचित्र आदि। उन्होंने मध्ययुग से आधुनिक युग तक के कृतिकारों की समीक्षा की है। किंतु वे मुख्य रूप से आधुनिक काव्य के आलोचक रहे हैं। उन्होंने मनोविश्लेषणात्मक समीक्षाएँ भी की है। लेकिन वे मूलतः रसवादी आलोचक हैं।

▶ 'रीतिकाव्य की भूमिका', 'रस सिद्धांत' और 'देव और उनकी कविता' डॉ. नगेन्द्र के प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथ हैं

'रस-सिद्धांत' नामक ग्रंथ में उन्होंने रस की सांगोपांग विवेचना करते हुए उसकी पुनःप्रतिष्ठा करने का पांडित्यपूर्ण प्रयास किया है। 'नई समीक्षा नए संदर्भ' में मूल्यों का विघटन, सांस्कृतिक संकट, आधुनिकता का प्रश्न आदि पर विचार किया गया है। उन्होंने हिंदी आलोचना को व्यावहारिक एवं सैद्धान्तिक दोनों दृष्टियों से परखने का प्रयास किया। छायावाद के शिल्पपक्ष की सूक्ष्मताओं को उजागर करने में डॉ नगेन्द्र का योगदान अतुलनीय है।

▶ 'रस सिद्धांत' में डॉ. नगेन्द्र ने रस का विवेचन कर उसकी पुनः प्रतिष्ठा का प्रयास किया है।

शांतिप्रिय दिवेदी की आलोचनात्मक रचनाएँ मुख्यतः छायावाद पर केंद्रित थी। वे छायावाद पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करने वाले समीक्षक थे। वे काव्य से जीवन की प्रेरणा प्राप्ति को महत्व देते हैं। उन्होंने संवेदनीयता को काव्य के उद्देश्य में स्थान दिया। द्विवेदी जी ने छायावादी काव्य के विकास में गांधीवाद और प्रथम विश्व युद्ध की परिस्थितियों को सहायक माना। उन्होंने 'छायावाद और उसके बाद' निबंध में साहित्य के विकास का अध्ययन किया है।

▶ शांतिप्रिय दिवेदी छायावाद के मर्मज्ञ आलोचक थे।

हिंदी के शीर्षास्थ आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने 'छायावाद' नामक अपने आलोचनात्मक ग्रंथ में छायावाद को अनेक प्रवृत्तियों का समुच्चय कहा है। इसके केंद्र में राष्ट्रीय जागरण की भावना है। इस पुस्तक में उन्होंने छायावाद के भाव और कलापक्ष की विविध प्रवृत्तियों का विवेचन करके छायावाद के ऐतिहासिक महत्त्व एवं काव्योत्कर्ष की व्याख्या की।हिंदी समालोचना के विकास में छायावादी कवियों का योगदान भी उल्लेखनीय है। छायावादी काव्य पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लगाये गये आरोपों के जवाब में छायावादी कवियों ने अपनी आलोचनाएँ लिखीं। उन्होंने आलोचना को नयी दिशा देने के लिये प्राचीन शास्त्रवादी साहित्यिक मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह लगाकर नये मूल्यों को प्रतिष्ठित किया।

▶ डॉ. नामवर सिंह ने 'छायावाद' नामक आलोचनात्मक ग्रंथ में छायावाद की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया है

2.2.2 जयशंकर प्रसाद

▶ 'काव्य और कला तथा अन्य निबंध' में जयशंकर प्रसाद कवि-कर्म की व्याख्या करते हैं।

प्रसाद जी ने 1936 ई. में 'हंस' पत्रिका के अनेक अंकों में काव्य की आलोचना विषयक निबंध लिखे जिसका संकलन बाद में 'काव्य और कला तथा अन्य निबंध' शीर्षक से हुआ। इन निबंधों में उन्होंने काव्य और कला, रहस्यवाद, नाटकों में रस का स्थान, रंगमंच, यथार्थवाद, छायावाद आदि के संबंध में अपने विचार प्रकट किये। 'काव्य और कला तथा अन्य निबंध' में प्रसादजी कवि-कर्म की व्याख्या एक आध्यात्मिक कर्म के रूप में करते हैं। उन्होंने अपने छायावाद संबंधी विवेचन में शुक्लजी के आक्षेपों का उत्तर दिया है। शुक्ल जी ने रहस्यवाद को एक विजातीय प्रवृत्ति माना। लेकिन प्रसाद जी ने रहस्यवाद का विवेचन भारतीय अद्वैतवाद की मानववादी धारा से जोड़कर किया। उन्होंने भारतीय काव्य का मूलाधार आत्मा की अनुभूति को माना। वे अनुकरण की प्रवृत्ति को पश्चिमी कला का मूल मानते हैं।

▶ 'चन्द्रगुप्त' और 'कामायनी' जैसी कृतियों की लम्बी भूमिकाएँ प्रसाद जी को सफल आलोचक सिद्ध करता है।

प्रसाद जी रस को काव्यात्मा मानने वाले आलोचकों में से थे। वे रस को आनंद से जोड़ने थे। अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि भारतीय काव्यशास्त्र के अन्य सम्प्रदायों को वे विवेक से जोड़ते हैं। प्रसाद जी भारतेन्दु युग के यथार्थोन्मुख प्रवृत्तियों पर भी टिप्पणी करते हैं। उनकी ये टिप्पणियाँ अपूर्ण है और उसमें कवि का पूर्वाग्रह भी देखा जा सकता है। लेकिन इन निबन्धों से उनकी सुगम्भीर

गवेषणात्मक प्रवृत्ति और विश्लेषणात्मक क्षमता का अनुमान लगाया जा सकता है। संस्कृति और इतिहास के क्षेत्र में उनकी गम्भीर पैठ का प्रमाण उनकी 'चन्द्रगुप्त' और 'कामायनी' जैसी कृतियों की लम्बी भूमिकाओं से भी मिलता है।

प्रसादजी ने छायावाद की आलोचना से संबंधित तीन महत्वपूर्ण कार्य किये-

1. छायावाद को भारतीय चिंतन परंपरा से विकसित माना।

2. छायावाद को मात्र शैली चमत्कार न मानकर उसका संबंध अनुभूति से जोडा।

3. छायावादी कविता के सौंदर्य में निहित शिवत्व के दर्शन कराये।

उनके समान साहित्य और दर्शन का समन्वय करने वाले आलोचक हिन्दी में बहुत कम है। यही कारण है कि उन्होंने अपने कुछ ही लेखों में जो आलोचनात्मक सामग्री प्रस्तुत की है, वह परिमाण में कम होने पर भी गुण और गरिमा में अप्रतिम है।

2.2.3 सुमित्रानंदन पंत

▶ पंतजी ने 'पल्लव' की भूमिका से आलोचना जगत में प्रवेश किया।

पंतजी ने 'पल्लव' की भूमिका में अपने काव्य संबंधी विचार प्रकट किए। उस भूमिका से पंतजी के गहन अध्ययन- मनन का पता चलता है। यह भी ज्ञात होता है कि शब्दों की विविध छायाओं को हृदयंगम करने की उनमें अतुल प्रतिभा है। इसमें उनके प्रभाववादी आलोचक का रूप प्रकट होता है। साथ ही ब्रजभाषा और खड़ी बोली के शब्द

सौकुमार्य पर विचार किया है। वे खड़ी बोली में काव्य रचने के समर्थक थे। पंतजी के विचार आत्मनिष्ठ हैं। 'वीणा' की भूमिका में उन्होंने रीतिकाल से-द्विवेदी युग तक की कविता की कमियाँ बताते हुए छायावादी कविताओं की वकालत की।

पंतजी के आलोचनात्मक विचारों को पढ़ने पर वह आलोचना से अधिक किसी कवि के हृदय पर पड़े प्रभावों की अभिव्यक्ति अधिक लगते हैं। उनके निर्णय इतने आत्मनिष्ठ लगते हैं कि उनको आलोचना की श्रेणी में रखना कठिन है। पंतजी की शैली आलोचनात्मक नहीं काव्यात्मक है।

- पंतजी ने 'वीणा' की भूमिका में रीतिकाल से-द्विवेदी युग तक की कविता की कमियाँ बताते हुए छायावादी कविताओं की वकालत की

2.2.4 सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

निराला जी की आलोचना दृष्टि अन्य छायावादी कवियों से अलग एवं निराला रहा है। वे विश्लेषणात्मक प्रतिभा से युक्त आलोचक थे। उनकी आलोचनात्मक रचनाएँ प्रायः स्फुट निबंधों के रूप में ही उपलब्ध है। उन्होंने साहित्यिक निबन्धों के अलावा दार्शनिक, सामाजिक, संस्मरणात्मक तथा भावात्मक निबन्ध भी लिखे हैं। छायावादी कवियों में साहित्येतर प्रश्नों पर सर्वाधिक विचार करने वाले आलोचक हैं निराला।

- साहित्येतर प्रश्नों पर सर्वाधिक विचार करने वाले आलोचक

सुमित्रानंदन पंत के 'पल्लव' के प्रकाशन के तुरंत बाद निराला ने 'पंत और पल्लव' शीर्षक से पंतजी की कविताओं की आलोचना की थी। निराला के अनुसार 'पल्लव' की पंक्तियाँ दूसरे कवियों की पंक्तियों का भावानुवाद है। उन्होंने अनेक उदाहरणों से दिखाया है कि पंतजी ने रवीन्द्रनाथ, वर्ड्सवर्थ और शेली की पंक्तियों और टुकड़ों का खुलकर उपयोग किया है। 'पंत और पल्लव' में निराला ने पंत की व्यावहारिक समीक्षा की थी। व्यावहारिक समीक्षा में निरालाजी ने पंतजी के गुणों को देख पाने की दुर्लभ दृष्टि का भी परिचय दिया है। दोष देखकर वे तीव्र आलोचना करते हैं तो गुण देखकर मुक्त कंठ से प्रशंसा भी करते हैं।

- निराला जी ने 'पंत और पल्लव' शीर्षक लेख से आलोचना की शुरुआत की।

निराला जी ने आलोचना की कोई स्वतंत्र पुस्तक नहीं लिखी। अपने विरोधियों को उत्तर देने के लिए समकालीन पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेख लिखे। उनका गद्य यथार्थवादी था। उन्होंने भाषा, छंद स्थानीयता, सार्वदेशिकता, समसामयिकता आदि के जो सवाल उठाए हैं, वे आज भी महत्वपूर्ण है। समालोचना के नाम पर उन्होंने काव्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन न करके कविता की व्यावहारिक समालोचना की है। कविता की आलोचना में निराला छायावादी कवियों में सबसे आगे हैं। उन्होंने 'हरिऔध' और गुप्त जी की काव्यभाषा की भी प्रशंसा की है। निराला जी की आलोचना देखकर ऐसा लगता है कि छायावादी कवियों में एकमात्र निराला ही आलोचकीय क्षमता से युक्त थे।

- भाषा, छंद स्थानीयता, सार्वदेशिकता, समसामयिकता आदि के जो सवाल उठाए हैं, वे आज भी महत्वपूर्ण है।

2.2.5 महादेवी वर्मा

1936 ई. में प्रकाशित 'सांध्यगीत' की भूमिका में महादेवी वर्मा ने छायावाद को परिभाषित करने का प्रयास किया है। इसमें उन्होंने छायावाद-रहस्यवाद की व्याख्या करके उसका समर्थन किया। 'साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध' उनके स्फुट

- 'सांध्यगीत' की भूमिका से महादेवी वर्मा ने आलोचना का आरंभ किया

लेखों का संग्रह है।उनके 'रहस्यवाद' शीर्षक निबन्ध में आधुनिक रहस्यवाद में बुद्धितत्व का योगदान स्वीकार करते हुए प्राचीन भारतीय साहित्य में उसकी स्थिति व्यक्त की गई है। 'गीतिकाव्य' नामक निबन्ध में गीत की परिभाषा देते हुए उसमें भावना और संगीत के संतुलन को अनिवार्य माना है। महादेवीजी इस बात का सख्त विरोध करती है कि छायावाद का स्रोत पश्चिम से है। उनके अनुसार छायावाद के भारतीय होने का प्रमाण यह है कि केवल अनुकरण काव्य को इतनी समृद्धि नहीं दे सकता। 'सामयिक समस्या' महादेवी के विवेचनात्मक गद्य है जिसमें उन्होंने समकालीन साहित्यिक समस्याओं पर विचार किया है। साथ ही इसमें वे छायावादी कवियों की यथार्थवादी रचनाओं की ओर इशारा करते हैं। उनके अनुसार प्रगतिवाद छायावाद के गर्भ से निकला है।

- महादेवी वर्मा ने अपने आलोचनात्मक विचारों में जनवादी यथार्थवादी चेतन का परिचय दिया है।

महादेवी जी का गद्य साधारण और सामान्य जीवन में विचरण करने वाले एक प्रबुद्ध और भावुक चिंतक का है। वे श्रमजीवी वर्ग को कलाओं का अधिक विश्वसनीय रक्षक मानते हैं। अपने वर्गगत संस्कारों को अनदेखा करने पर अस्वाभाविक और कृत्रिम साहित्य रचा जाता है। साथ ही साथ वे नारी स्वतंत्रता को भी प्रमुखता देती थी। महादेवीजी ने छायावाद की विशेषताओं की विवेचना करते हुए कहा है कि छायावाद ने स्थूल समस्याओं को भी अपना विषय बनाया है। प्रसाद, निराला और पंत की राष्ट्रीय कविताएँ छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह मानने नहीं देते। निराला की 'विधवा' पर लिखी गई विख्यात कविता इसका उदाहरण है। राष्ट्रीय भावना को लेकर लिखे गए 'जय-पराजय के गान' भी इसका प्रमाण है। इस प्रकार छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा ने अपने आलोचनात्मक विचारों में जनवादी यथार्थवादी चेतन का परिचय दिया है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

हिंदी छायावादी काव्यधारा के मूल्यांकन के लिए विकसित स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना को समय-समय पर अनेक समीक्षकों ने अपनी उत्कृष्ट समीक्षा प्रतिभा और गहरी साहित्यिक समझ से परिपक्व और परिष्कृत कर नई गरिमा प्रदान की। जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा ने अपने काव्यग्रंथों की भूमिकाओं एवं पत्र-पत्रिकाओं में लिखे निबंधों से छायावादी काव्य की समीक्षा करते हुए कविता के मर्म से लोगों को परिचित कराया। दूसरी ओर नन्ददुलारे वाजपेयी, शांतिप्रिय द्विवेदी एवं डॉ नगेन्द्र जैसे समर्थ आलोचकों ने अपनी समीक्षात्मक कृतियों से छायावादी काव्य को दृढ़ आधार प्रदान किया।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना पर लेख तैयार कीजिए।
2. स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना की प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए।
3. हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना का स्थान निर्धारित कीजिए।
4. हिंदी के प्रमुख स्वच्छंदतावादी आलोचकों का परिचय दीजिए।
5. समालोचना के विकास में छायावादी कवियों के योगदान पर लेख तैयार कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी समीक्षा: स्त्रोत एवं सुत्रधार- सत्यदेव मिश्र
2. आलोचना और आलोचना: बच्चन सिंह
3. हिंदी आलोचना का विकास- नंदकिशोर नौसैनिक

Web Reference / अंतर्जाल संदर्भ

1. प्रमुख स्वच्छंदतावादी आलोचक और आलोचना ग्रंथ सूची - HINDI SARANG
2. [PDF] स्वच्छंदतावादी समीक्षा : नएआयाम|Swachandtavadi Sameeksha Naye Aayam हिंदी Hindi Free Pdf
3. 2015.494163.Swachandtavadi-Sameexha.pdf
4. https://youtu.be/uxhNETTVWqY?si=8Q9VuEofWNlzs1w0
5. https://youtu.be/aUpJyJRejEY?si=mZCGw6JXuE18bFk4

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह
2. काव्यशास्त्र - डॉ भागीरथ मिश्र
3. हिन्दी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी
4. हिन्दी आलोचना - कशिश गोयल

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

ऐतिहासिक समीक्षा- हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ रामकुमार वर्मा, शांतिप्रिय द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- ऐतिहासिक समीक्षा से परिचित होता है
- ऐतिहासिक समालोचक हज़ारीप्रसाद द्विवेदी के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- ऐतिहासिक समालोचक डॉ रामकुमार वर्मा के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है
- ऐतिहासिक समालोचक शांतिप्रिय द्विवेदी के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- ऐतिहासिक समालोचक नंददुलारे वाजपेयी के बारे में समझता है

Background / पृष्ठभूमि

शुक्ल युग में हिंदी आलोचना के सैद्धांतिक और प्रायोगिक दोनों रूपों का पर्याप्त उत्कर्ष हुआ। लेकिन उनका क्षेत्र सीमित रहा। शुक्ल जी ने तुलसी, जायसी, सूर जैसे प्राचीन कवियों के विवेचन में उच्चकोटि की आलोच- ात्मक क्षमता का परिचय दिया। पर आधुनिक कवियों की खूबियों को देखने में वे असफल रहे। छायावाद को समझाने का प्रयास इसी काल के अन्य आलोचकों नंददुलारे वाजपेयी, शांतिप्रिय द्विवेदी, डॉ. नगेंद्र आदि ने किया। आगे चलकर इन्हीं आलोचकों ने हिंदी आलोचना को दिशा और गति प्रदान की।

Keywords / मुख्य बिन्दु

ऐतिहासिक समीक्षा, हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ रामकुमार वर्मा, शांतिप्रिय द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी

Discussion / चर्चा

2.3.1 ऐतिहासिक समीक्षा

हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में प्रचलित विभिन्न पद्धतियों में ऐतिहासिक समीक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। 'ऐतिहासिक' शब्द 'इतिहास' से बना है जिसका अर्थ है - इतिहास से सम्बन्धित। इस प्रकार इतिहास से सम्बन्धित आलोचना या समीक्षा ऐतिहासिक

आलोचना कहलाती है। इसमें साहित्यिक कृति को उसके ऐतिहासिक संदर्भ में समझने का प्रयास किया जाता है। यह आलोचना साहित्यिक कृति के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों, सांस्कृतिक परंपराओं और लेखक के व्यक्तिगत अनुभवों को ध्यान में रखते हुए की जाती है।

आधुनिक काल के आरंभ से ही ऐतिहासिक समीक्षा के दर्शन होते हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा मिश्रबंधुओं में ऐतिहासिक विवेचन की प्रवृत्ति पायी गयी है। ऐतिहासिक समीक्षक यह देखने का प्रयास करते हैं कि किसी रचना से साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास में कितना योगदान प्राप्त हुआ है। किसी भी साहित्यकार या रचना को युग और जाति से अलग करके नहीं देखा जा सकता। पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी ने अपने 'विश्व साहित्य' और 'हिंदी साहित्य विमर्श' नामक ग्रंथों में साहित्य और देशकाल के संबंध के बारे में चर्चा की है। लेकिन कवियों को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में रखकर विचार करने का प्रथम वैज्ञानिक प्रयास शुक्ल जी की समीक्षा में हुआ है। पर शुक्ल जी ने कवियों को साहित्य की धारा में रखकर नहीं देखा। वास्तव में ऐतिहासिक समीक्षा के समाजशास्त्रीय रूप का विकास परवर्ती काल में पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा ही हुआ।

▶ भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मिश्र बंधु आदि से ऐतिहासिक समीक्षा का प्रारंभ माना जा सकता है।

2.3.2 पं.हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

ऐतिहासिक समीक्षा के क्षेत्र में आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। 'हिन्दी-साहित्य की भूमिका' (1940) में उन्होंने आलोचना की ऐतिहासिक पद्धति की प्रतिष्ठा करते हुए बताया कि किसी रचनाकार का स्थान निर्धारण उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं जातीय पृष्ठभूमि के आधार पर करना चाहिए। इसके लिए आलोचक की अपनी जातीय परंपरा या सांस्कृतिक विरासत का पर्याप्त बोध होना चाहिए। द्विवेदी जी में बोध और पांडित्य का अद्‌भुत मिश्रण है। नवीन मानवतावाद और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के कारण उनके पांडित्य को हम आधुनिक कह सकते हैं। वे मुख्यतः शुक्ल-संस्थान के आलोचक हैं, पर अपने मानवतावादी दृष्टिकोण तथा ऐतिहासिक पद्धति के कारण शुक्ल जी से अलग हैं। मानवीय मूल्यों में इतनी गहन आस्था उनके पूर्व किसी आलोचक ने व्यक्त नहीं की थी। द्विवेदी जी की पहली पुस्तक 'सूर-साहित्य' (1936) में छायावादी भावुकता का प्राधान्य था, किंतु 'कबीर' (1942) में उनके दृष्टिकोण का प्रायोगिक रूप स्पष्ट हुआ। उन्होंने कबीर को सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और साहित्यिक परंपरा के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा। कबीर की भाषा की विशिष्टता पर भी सबसे पहले उन्हीं की दृष्टि गयी।

▶ हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की प्रमुख आलोचनात्मक रचनाएँ

'हिंदी साहित्य' (1952) में तथा अन्य स्थानों पर भी उन्होंने सूर, तुलसी आदि का मूल्यांकन मानवतावादी दृष्टि से किया। प्रेमचंद का आकलन भी इसी दृष्टि से हुआ। मनुष्यता को उन्होंने साहित्य और रस का पर्याय माना। द्विवेदी जी ने 'इतिहास के आलोक' निबंध में वर्तमान कविता के क्रम विकास का तथा 'छायावाद और उसके बाद'

▶ द्विवेदी जी ने काव्य को ही नहीं, काव्यशास्त्र को भी ऐतिहासिक दृष्टि से परखा और उसकी व्याख्या की

निबंध में साहित्य के विकास का अध्ययन किया है जिसमें उनके वैयक्तिक चिंतन की झलक है। द्विवेदी जी ने काव्य को ही नहीं, काव्यशास्त्र को भी ऐतिहासिक दृष्टि से परखा और उसकी व्याख्या की। उनकी सैद्धांतिक मान्यताएँ 'साहित्य का मर्म' में सामने आयीं। द्विवेदी जी का महत्व साहित्य के मूल्यों को बदलने तथा उन्हें नवीन मानवतावादी मूल्य से जोड़ने में है।

2.3.3 डॉ. रामकुमार वर्मा

- 'कबीर का रहस्यवाद' आलोचक के रूप में डॉ रामकुमार वर्मा के प्रसिद्धि का आधार है

डॉ. रामकुमार वर्मा के समालोचक स्वरूप का परिचय उनकी 'कबीर का रहस्यवाद' नामक पुस्तक में मिलता है। इसकी रचना उन्होंने तत्कालीन युग की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में की है। इसलिए हम उन्हें भी ऐतिहासिक समीक्षक के रूप में देखते हैं। कबीर-साहित्य के अनुशीलन ने ही उन्हें समालोचक बनाया था। 'कबीर का रहस्यवाद' में कबीर का प्रामाणिक जीवन प्रस्तुत करने का प्रयास हुआ है। उनके काव्य के आधार पर रहस्यवाद, आध्यात्मिक विवाह, हठयोग, सूफीमत तथा गुरु और विभिन्न चक्रों का भी अत्यन्त सुलझा हुआ विवरण इसमें मिलता है। आज कबीर के जीवन-दर्शन और साहित्य-समीक्षण को लेकर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वानों ने अध्ययन की दिशा को बहुत आगे बढ़ा दिया है। लेकिन किसी समय रामकुमर वर्मा का 'कबीर का रहस्यवाद' कबीर-विषयक समीक्षाओं में सर्वोपरि स्थान रखता था।

- डॉ. रामकुमार वर्मा के प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथ

इसके अलावा वर्माजी ने 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' भी लिखा है। इसमें सात प्रकरणों में हिन्दी भाषा की उत्पत्ति और विकास, सिद्ध-जैन साहित्य, चारणकाल और भक्तिकाल की प्रवृत्तियों और कृतिकारों का अत्यन्त विस्तृत विवेचन किया गया है। उन्होंने इस इतिहास ग्रन्थ से पूर्व किए गए साहित्येतिहासों का क्रमबद्ध विश्लेषण कर, इतिहास-ग्रन्थ से सम्बन्धित प्रायः समस्त उपलब्ध सामग्री का संकलन एक ही पुस्तक में कर दिया है। उनके पूर्व इस प्रकार का प्रयास किसी अन्य विद्वान ने नहीं किया था। इस ग्रन्थ का प्रकाशन सन् 1939 में हुआ और उन्हें इसी पर नागपुर विश्वविद्यालय ने पी-एच.डी. की उपाधि भी प्रदान की। 'साहित्य समालोचना' और 'आलोचनादर्श' उनकी अन्य आलोचनात्मक ग्रंथ हैं।

2.3.4 शांतिप्रिय द्विवेदी

- 'इतिहास के आलोक' और 'छायावाद और उसके बाद' द्विवेदी के प्रमुख निबंध हैं।

शांतिप्रिय द्विवेदी जी ने मुख्यतः छायावादी साहित्य पर ही विचार किया है। वे छायावाद पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करने वाले समीक्षक थे। वे काव्य से जीवन की प्रेरणा प्राप्ति को महत्व देते हैं। उन्होंने संवेदनीयता को काव्य के उद्देश्य में स्थान दिया है। द्विवेदी जी ने छायावादी काव्य के विकास में गांधीवाद और प्रथम विश्व युद्ध की परिस्थितियों को सहायक माना। 'हमारे साहित्य निर्माता', 'कवि और काव्य', तथा 'साहित्यिकी' उनके प्रमुख ग्रंथ हैं। द्विवेदी जी ने 'इतिहास के आलोक' निबंध में वर्तमान कविता के क्रम विकास पर विचार किया है और 'छायावाद और उसके बाद' निबंध में साहित्य के विकास का अध्ययन किया है।

1. पं.नंददुलारे वाजपेयी

पं.नंददुलारे वाजपेयी शुक्लोत्तर युग के प्रख्यात समालोचक थे। वे छायावाद के समर्थ आलोचक और स्वच्छंदतावादी समीक्षा पद्धति के प्रतिनिधि थे। उन्होंने एक ओर छायावाद को नवजागरण की परंपरा से जोड़कर देखा तो दूसरी ओर उसकी ऐतिहासिक-सामाजिक पृष्ठभूमि को भी उजागर किया। वाजपेयीजी ने द्विवेदी काल के उत्तरार्द्ध में आलोचना क्षेत्र में प्रवेश किया था। तब 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से उनकी आलोचनाएँ प्रकाशित होती रहती थीं। बाद में उन्होंने 'भारत' और 'आलोचन-ा' नामक पत्रिकाओं में तत्कालीन साहित्य विषयक अनेक लेख लिखे। बाजपेयी जी ने द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता तथा शुक्ल जी के प्रबंधकाव्यवाद, मर्यादावाद और नैतिकवाद से हिंदी समीक्षा को मुक्त किया। उन्होंने काव्य-शास्त्र के सिद्धांतों का विवेचन भी किया। उन पर पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धांतों का पर्याप्त प्रभाव था।

▶ पत्रिकाओं में तत्कालीन साहित्य विषयक अनेक लेख लिखे।

नंददुलारे बाजपेयी ज़्यादातर आलोचनात्मक लेख लिखते थे और बाद में उन लेखो का संकलन करके एक स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित करते थे। 'हिंदी साहित्य बीसवीं शताब्दी', 'प्रेमचन्द:एक साहित्यिक विवेचन', 'जयशंकर प्रसाद', 'आधुनिक साहित्य', 'महाकवि सूरदास', 'कवि निराला', 'नया साहित्य: नये प्रश्न' आदि इनकी प्रमुख आलोचना पुस्तकें हैं। 'नया साहित्य: नये प्रश्न' सैद्धांतिक समीक्षा की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें भारतीय एवं पाश्चात्य चिंतन परंपरा को प्रस्तुत किया है।

▶ 'नया साहित्य: नये प्रश्न' शांतिप्रिय द्विवेदी का प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथ है

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

ऐतिहासिक समीक्षा में कृति का महत्व युग विशेष के संदर्भ में देखा जाता है। आजकल आलोचना के क्षेत्र में ऐतिहासिक प्रणाली का अत्यधिक प्रचलन है। इस पद्धति से समीक्षा को एक नई दिशा मिली। अन्य आलोचना पद्धति के आलोचक भी किसी न किसी रूप में ऐतिहासिक आलोचना का आधार ग्रहण कर लेते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ.रामकुमार वर्मा, हज़ारीप्रसाद द्विवेदी, नन्ददुलारे वाजपेयी आदि ने साहित्य का अध्ययन युग तथा समाज की पृष्ठभूमि में किया है। इसी कारण इन्हें हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक आलोचना के प्रतिनिधि मानते हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. ऐतिहासिक आलोचना पर लेख तैयार कीजिए।
2. ऐतिहासिक समालोचक हज़ारीप्रसाद द्विवेदी का परिचय दीजिए।
3. हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में ऐतिहासिक आलोचना का स्थान निर्धारित कीजिए।
4. हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक आलोचकों का परिचय दीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह
2. काव्यशास्त्र - डॉ भागीरथ मिश्र
3. हिन्दी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्रः अधुनातन संदर्भ - डॉ.सत्यदेव मिश्र

Web Reference / अंतर्जाल संदर्भ

1. https://en-m-wikipedia-org.translate.goog/wiki/Historical_criticism?
2. https://www.dccp.co.in/blog/2024/01/%E0%A4%B6%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A5
3. https://youtu.be/poBJ8mhyj9U?si=KPyZzHniF7gGO8Km
4. https://youtu.be/1Z-6ywb085s?si=hnxhkVBrY8QwRzh

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी समीक्षाः स्त्रोत एवं सुत्रधार- सत्यदेव मिश्र
2. आलोचना और आलोचनाः बच्चन सिंह
3. हिंदी आलोचना का विकास- नंदकिशोर नौसैनिक

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

सैद्धांतिक समीक्षा-गुलाबराय, नयी समीक्षा, यथार्थवाद, बिंबवाद, प्रतीकवाद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- सैद्धांतिक समीक्षा से परिचित होता है
- हिंदी के सैद्धांतिक समीक्षकों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- नयी समीक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- यथार्थवाद के बारे में परिचित होता है
- बिंबवाद के बारे में समझता है
- प्रतीकवाद से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

सातवें दशक के बाद की आलोचना में काफी वैविध्य आ गया। हिंदी आलोचना नवीन मानदंडों और नवीन प्रवृतियों को आत्मसात करते हुए आगे बढने लगे। फलस्वरूप आलोचना की नवीन दृष्टियों और प्रवृतियों का विकास हो गया। नयी समीक्षा अनेक दृष्टियों और प्रवृतियों की समाहार वाली आलोचना है। इन दृष्टियों के आलोक में हिंदी आलोचना की प्रवृतियों में भी बदलाव आ गया जिनमें प्रमुख है यथार्थवाद, बिंबवाद, प्रतीकवाद आदि।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सैद्धांतिक समीक्षा, गुलाबराय, नयी समीक्षा, यथार्थवाद, बिंबवाद, प्रतीकवाद

Discussion / चर्चा

2.4.1 सैद्धांतिक समीक्षा

सैद्धान्तिक आलोचना में साहित्यिक समीक्षा के सिद्धान्तों पर विचार किया जाता है। इसमें प्राचीन शास्त्रीय काव्यागों, रस, अलंकार आदि और साहित्य की आधुनिक मान्यताओं तथा नियमों की विवचेना की जाती है। सैद्धान्तिक आलोचना में यह विचार किया जाता है कि साहित्य का मानदंड शास्त्रीय है या ऐतिहासिक। मानदंड का शास्त्रीय

रूप, स्थिर और अपरिवर्तनशील होता है। किन्तु मानदंडों को ऐतिहासिक श्रेणी मानने पर उनका स्वरूप परिवर्तनशील और विकासात्मक होता है। दोनों प्रकार की सैद्धान्तिक आलोचनाएँ उपलब्ध है। किन्तु अब सैद्धान्तिक आलोचना का महत्त्व अधिक है जो साहित्य के तत्वों और नियमों को ऐतिहासिक प्रक्रिया में विकासमान मानती है।

▶ सैद्धांतिक आलोचना को परिभाषित करने का प्रयास किया

भिन्न भिन्न आचार्यों ने सैद्धांतिक आलोचना को अपने अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है। इनमें प्रमुख है डॉ भागीरथ मिश्र। उन्होंने अपने 'काव्यशास्त्र' नामक ग्रंथ में सैद्धांतिक आलोचना की परिभाषा इस प्रकार दी है- 'सैद्धांतिक आलोचना के अंतर्गत आलोचक व्यक्तिगत श्रेष्ठ कवियों का अध्ययन करते हुए व्यापक सिद्धान्तों की खोज करता है। अतः कृतियों के अध्ययन और व्याख्या द्वारा इस प्रकार के सिद्धान्तों को खोजना या उनका संकेत करना सैद्धान्तिक आलोचना है। इस आलोचना के अन्तर्गत सिद्धान्त और काव्यशास्त्र के ग्रन्थ रखे जाते हैं।'

▶ आधुनिक काल के महान आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की आलोचना सैद्धांतिक आलोचना का उत्तम उदाहरण है

संस्कृत साहित्य में लिखित सारे काव्यशास्त्रीय ग्रंथ सैद्धांतिक आलोचना के अंतर्गत आते हैं। भरतमुनि का 'नाट्यशास्त्र' मम्मट का 'काव्य प्रकाश' आचार्य दंडी का 'काव्यादर्श' आदि सैद्धांतिक आलोचनात्मक ग्रन्थ हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र का 'नाटक', जिसे हिंदी की पहली आलोचना मानते हैं, भी सैद्धांतिक आलोचना के अंतर्गत आते हैं। आधुनिक काल के महान आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की आलोचना सैद्धांतिक आलोचना का उत्तम उदाहरण है। उनकी 'चिंतामणि' में संकलित कुछ लेख 'रस मीमांसा', 'काव्य में रहस्यवाद' आदि सैद्धांतिक आलोचना के उत्तम उदाहरण हैं।

▶ सैद्धांतिक आलोचना के उदाहरण हैं।

डॉ. नगेन्द्र का 'रस सिद्धांत', भगीरथ मिश्र का 'भारतीय काव्य शास्त्र' महावीर प्रसाद द्विवेदी का 'रसज्ञ रंजन', श्याम सुंदरदास का 'रूपक रहस्य', लाला भगवानदीन का 'अलंकार मंजूषा', कन्हैयालाल पोद्दार का 'काव्यकल्पद्रुम', 'रसमंजरी', अलंकार मंजरी', अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का 'रसकलश' आदि ग्रन्थ भी सैद्धांतिक अलोचना के उदाहरण हैं।

2.4.2 गुलाबराय (1888-1963)

▶ 'सिद्धांत और अध्ययन', 'काव्य के रूप', 'अध्ययन और आस्वाद' आदि गुलाबराय के प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथ हैं।

गुलाबराय ने शुक्ल जी की भांति भारतीय और पाश्चात्य काव्य- सिद्धांतों के सामंजस्य की पद्धति अपनायी। उन्होंने मुख्यतः व्याख्यात्मक पद्धति का अवलंबन लेकर व्यावहारिक समीक्षा के क्षेत्र में योगदान दिया। 'सिद्धांत और अध्ययन' (1946) तथा 'काव्य के रूप' (1947) उनकी प्रमुख काव्यशास्त्रीय रचनाएँ हैं और 'अध्ययन और आस्वाद' (1957) समीक्षात्मक निबंधों का संकलन है। उनकी समीक्षा-शैली में शुक्ल जी के समान गंभीरता और दृढ़ता नहीं मिलती, अपितु उन्होंने अधिकतर उदार एवं समन्वयात्मक दृष्टिकोण ही अपनाया है।

2.4.3 नई समीक्षा (New Criticism)

नई समीक्षा का आरंभ अंग्रेज़ी साहित्य में बीसवीं सदी में हुआ। टी. एस इलियट

को नई समीक्षा के जनक माने जाते हैं। उनके निबन्ध-संग्रह 'सेक्रेड वुड' (1920) से इसका अरम्भ हुअ।। ऐ ए. रिचार्डस का पुस्तक 'प्रिंसिपल्स ऑफ़ लिटरेरी क्रिटिसिज्म'(1924) में भी नई समीक्षा के तत्व मौजूद है। नई समीक्षा का नामकरण जे. ई. स्पिनगार्न ने 1911 ई. में THE NEW CRITICISM नामक लेख में किया। इस लेख से प्रेरित होकर 1922 ई. में THE FUGITIVE तथा 1939 में THE KEN-YAN REVIEW नामक दो प्रमुख पत्रिकाएँ निकाली गई जिनसे नई समीक्षा का स्वरूप विकसित हुआ। 1941 ई. में जॉन क्रो रैनसम ने NEW CRITICISM नामक एक पुस्तक लिखी जिसमें नई समीक्षा की पद्धति पर विस्तार से चर्चा की गई थी।

▶ टी. एस इलियट को नई समीक्षा के जनक माने जाते हैं। उनके निबन्ध-संग्रह 'सेक्रेड वुड' से इसका अरम्भ हुअ।

नई समीक्षा की शुरूआत इंग्लैण्ड और अमेरिका में हुई। नई समीक्षा ने आलोचना के केन्द्र से कलाकार को अपदस्थ कर कलाकृति को समीक्षा का केन्द्र बनाया। इन्होंने रचना को एक अखण्ड इकाई माना और उसके वस्तु और रूप के अलग-अलग अध्ययन का विरोध किया। कलाकृति में भाषा के महत्त्व को स्वीकार किया और परम्परा के प्रति लगाव दिखाया। नई समीक्षा में सर्जक का एक कुशल आलोचक होना अनिर्वाय है। साथ ही उन्हें विद्वान भी होना चाहिए। इन्होंने शुद्ध कविता पर बल दिया और कविता के नैतिक पक्ष को अस्वीकार किया।

▶ नई समीक्षा ने आलोचना के केन्द्र में कलाकार के बदले कलाकृति को रख दिया।

नई समीक्षा का आरंभ जिस युग में हुआ वह वैज्ञानिक विकास और औद्योगिकीकरण की तीव्र प्रगति का युग था। इससे नई समीक्षा भी प्रभावित हुए। नई समीक्षकों के अनुसार साहित्यिक रचना एक भाषिक कृति है और अपने इस मूल रूप में वह संप्रेषण की एक विधि है। इसका सम्बंध एक ओर कलाकार से होता है और दूसरी ओर पाठक और समाज से होता है। आलोचक की ज़िम्मेदारी कलाकृति के गूढ़ अर्थ का उद्घाटन करके लेखक के अर्थ को पाठक तक पहुँचाने की होती है। नई समीक्षा में कवि के युग और परिवेश पर ध्यान केंद्रित न करके कलाकृति को केंद्र में रखकर उसके कलात्मक सौंदर्य को परखा जाता है। इससे रचना की स्वतंत्र सत्ता प्रतिष्ठित हुई।

▶ आलोचक की ज़िम्मेदारी कलाकृति के गूढ़ अर्थ का उद्घाटना है।

2.4.4 यथार्थवाद

यथार्थवाद पाश्चात्य काव्यशास्त्र की एक प्रमुख अवधारणा है जिसका आरंभ उन्नीसवीं सदी के छठे दशक में हुआ था। इसका प्रारंभ स्वच्छंदतावाद के विरोध में हुआ। स्वच्छन्दतावादी कवि कल्पना पर बल देते थे और आदर्श सामाज की परिकल्पना प्रस्तुत करते थे। यथार्थवादी सिद्धान्त के अनुसार इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त ज्ञान ही सत्य है। वे सूक्ष्म की अपेक्षा स्थूल को, सुंदर के स्थान पर कुरूप को और आदर्श के स्थान पर यथार्थ को महत्व देते हैं।

▶ यथार्थवादी सिद्धान्त के अनुसार इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त ज्ञान ही सत्य है

▶ प्रेमचंद के 'गोदान' और 'कफन', फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' और श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' यथार्थवादी रचनाएँ हैं।

यथार्थवादी साहित्य पाठकों के सामने आम जीवन को प्रस्तुत करता है। इसके लिए वे ऐसे चरित्रों का निर्माण करते हैं जो वास्तविक जगत के हैं। यथार्थवादी साहित्य में चरित्र और घटनाएँ काल्पनिक होते हुए भी वास्तविक लगता है। हिन्दी साहित्य में भारतेंदु युग से ही यथार्थवाद की शुरुआत हो चुकी थी। 'गोदान' और 'कफन' में यथार्थवाद अपनी

चरम सीमा पर है। 'गोदान' का नायक होरी यथार्थवादी नायक का उत्तम उदाहरण है। फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' और श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' को हिन्दी साहित्य के उत्कृष्ट यथार्थवादी रचना मानते हैं।

▶ अतियथार्थवाद को विधिवत आंदोलन के रूप में स्थापित करने का श्रेय आन्द्रे ब्रेतों को दिया जाता है।

अतियथार्थवाद मूलतः एक कला आंदोलन है। यह यथार्थवाद का विस्तार नहीं वरन इसका विरोधी आंदोलन है। अतियथार्थवादियों का मत है कि 'हम सतही यथार्थ के स्थान पर गहन यथार्थ को प्रस्तुत करते हैं।' अतियथार्थवादियों के अनुसार यथार्थ वह नहीं है जिसे हम अपनी इंद्रियों से देख सकते हैं, बल्कि यथार्थ वह है जो यथार्थ के भीतर कहीं छिपा हुआ है। अतियथार्थवाद को विधिवत आंदोलन के रूप में स्थापित करने का श्रेय आन्द्रे ब्रेतों को दिया जाता है।

▶ सेमुअल बैकेट के नोबेल पुरस्कार प्राप्त नाटक 'वेटिंग फॉर गोदो' अतियथार्थवाद का उदाहरण है।

साहित्य में अतियथार्थवाद नाटक के क्षेत्र में सबसे अधिक परिवर्तन लाया। यूरोप में इसके असर से एक नए प्रकार के रंगमंच का उदय हुआ। सेमुअल बैकेट के नोबेल पुरस्कार प्राप्त नाटक 'वेटिंग फॉर गोदो' इसका उत्तम उदाहरण है। हिन्दी में भुवनेश्वर का 'ताम्बे के कीड़े' इसी तरह का नाटक है। काव्य में अतियथार्थवाद ने बिम्बवाद को एक नया उत्कर्ष प्रदान किया। संक्षेप में वर्तमान साहित्य अतियथार्थवाद से अत्यंत प्रभावित है।

2.4.5 बिम्बवाद

▶ एज़रा पाउण्ड भी बिम्बवाद के प्रशंसक थे।

बिम्बवाद बीसवीं सदी की अमेरिकी कविता का एक आंदोलन है जिसमें बिम्ब की परिशुद्धता तथा स्पष्ट भाषा को महत्वपूर्ण माना जाता है। बिम्बवाद को अंग्रेजी कविता के सबसे प्रभावशाली आंदोलनों में से एक माना जाता है। एक काव्य शैली के रूप में इसने बीसवीं सदी की शुरूआत में आधुनिकतावाद का पथ-प्रदर्शन किया। अंग्रेजी साहित्य में इसे पहला संगठित आधुनिकतावादी साहित्यिक आंदोलन माना जाता है।

▶ अंग्रेज़ी कवि टी. ई. ह्यूम को बिम्बवाद का प्रवर्तक माना जाता है।

अंग्रेज़ी कवि टी. ई. ह्यूम को बिम्बवाद का प्रवर्तक माना जाता है। एज़रा पाउण्ड भी बिम्बवाद के प्रशंसक थे। उनका कथन है - 'ऐसी कविता जिसमें चित्रकला और शिल्पकला मानो संवाद के लिये एकत्र हुए हों।' हिन्दी साहित्य में बिम्ब का नवीन अर्थ-प्रतिपादन रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना द्वारा हुआ। उन्होंने अर्थ-ग्रहण पर बिम्ब-ग्रहण को श्रेष्ठता दी।

2.4.6 प्रतीकवाद (Symbolism)

▶ वर्लेन, रिमबद, मलार्मे, बॉदलेयर, जर्मन कवि रिल्के आदि प्रमुख प्रतीकवादी विचारक हैं।

प्रतीकवाद फ़्रांसीसी कविता के सर्वाधिक महत्वपूर्ण आंदोलनों में से एक है। यह यथार्थवाद के बाद का साहित्यिक सिद्धांत है। वर्लेन (Verlaine), रिमबद (Rimbaud), मलार्मे(Mallarme), बॉदलेयर(Baudelaire), जर्मन कवि रिल्के (Rilke) आदि प्रमुख प्रतीकवादी विचारक हैं।

प्रतीकवाद भाषा के प्रति विशिष्ट दृष्टिकोण है जिसमें वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ से भिन्न ध्वन्यर्थ पर बल दिया जाता है। प्रतीकवादी विशेष प्रकार की काव्य भाषा का आग्रह

करते हैं। इन कवियों की दिलचस्पी आदिम जातीय धार्मिक विश्वासों एवं मध्ययुगीन ईसाइयत में विशेष रूप से थी। उनके अनुसार वस्तु अपने आप में नगण्य है, उसका मूल्य उसकी गूढ़ सांकेतिकता में निहित है। उनका उद्देश्य यथार्थ वस्तुओं के रूपों को प्रस्तुत करने की अपेक्षा विचारों को प्रतीकात्मक रूप देने में है। प्रतीकवाद एक प्रकार का काव्यात्मक रहस्यवाद है।

- केदारनाथ सिंह का 'अकाल में सारस' अज्ञेय की रचना 'बावरा अहेरी' मुक्तिबोध की रचना 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' धर्मवीर भारती का 'टूटा पहिया' आदि प्रतीकवादी रचना का उदाहरण है

हिन्दी के प्रतीकवादी कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रतीकों का समर्थ प्रयोग किया है। केदारनाथ सिंह का 'अकाल में सारस' अज्ञेय की रचना 'बावरा अहेरी' मुक्तिबोध की रचना 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' धर्मवीर भारती का 'टूटा पहिया' आदि प्रतीकवादी रचना का उत्तम उदाहरण है।

कविता में सौंदर्य को बढ़ावा देने के लिए प्रतीकों का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया जाता है। साधारण शब्द सूक्ष्म छायाओं एवं गूढ संकेतों को व्यक्त करने में असमर्थ है।इसलिए प्रतीकवादियों को ध्वनियों और संकेतों का सहारा लेना पड़ा। लेकिन इसमें दुरूहता, अस्पष्टता, दुर्बोधता आदि दोष आने लगे। इसलिए बीसवीं शताब्दी के मध्य में ही यह वाद साहित्य से ओझल हो गया।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

सैद्धांतिक समीक्षा में साहित्य संबंधी सामान्य सिद्धांतों पर विचार किया जाता है। ये सिद्धांत शास्त्रीय भी हो सकते है और ऐतिहासिक भी। शास्त्रीय सिद्धांतों का स्वरूप स्थिर और अपरिवर्तनशील होता है तो ऐतिहासिक सिद्धांतों का स्वरूप परिवर्तनशील और विकासात्मक होता है। हम देख सकते है कि हिंदी आलोचना आरम्भ से सामाजिक सरोकारों से जुड़ी हुई है। युगीन हलचलों, वैचारिक द्वंद्वों, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, नैतिक, राष्ट्रीय चिंताओं के सापेक्ष आलोचना के स्वरूप में भी व्यापक बदलाव आ गया है। इस प्रकार नवीन सृजन, नवीन विचारधाराओं और नवीन सामाजिक सरोकारों से टकराते हुए विविध दृष्टियों, प्रतिमानों और प्रवृतियों से युक्त होती चलती है। यथार्थवाद, बिम्बवाद, प्रतीकवाद आदि हिंदी साहित्य में प्रचलित महत्वपूर्ण आंदोलन हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. सैद्धांतिक समीक्षा पर लेख तैयार कीजिए।
2. बिम्बवाद का परिचय दीजिए।
3. हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में नई समीक्षा का स्थान निर्धारित कीजिए।
4. प्रतीकवाद का परिचय दीजिए।
5. यथार्थवाद का परिचय दीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी समीक्षा: स्त्रोत एवं सूत्रधार- सत्यदेव मिश्र
2. आलोचना और आलोचना: बच्चन सिंह
3. हिंदी आलोचना का विकास- नंदकिशोर नौसैनिक

Web Reference / अंतर्जाल संदर्भ

1. https://ebooks.inflibnet.ac.in/hinp16/chapt
2. http://ddugu.ac.in/ePathshala_Attachment
3. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%
4. https://youtu.be/jVTJBX5ZfiU

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास- बच्चन सिंह
2. काव्यशास्त्र - डॉ भागीरथ मिश्र
3. हिन्दी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी
4. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत - गणपतिचंद्र गुप्त

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 03

मनोविश्लेषणात्मक पद्धति और नगेन्द्र

Block Content

Unit 1: मनोविश्लेषणात्मक पद्धति और नगेन्द्र

Unit 2: हिन्दी साहित्य में प्रचलित आलोचना की प्रणालियाँ, सैद्धांतिक आलोचना, स्वच्छंदतावादी आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना

Unit 3: हिन्दी में कथा समीक्षा - मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, नामवर ससंह, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, कृष्णदत्त पालीवाल

Unit 4: नई समीक्षा-मिथक, फंतासी, कल्पना, प्रतीक, बिंब

इकाई 1

मनोविश्लेषणात्मक पद्धति और नगेन्द्र

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- मनोविश्लेषणवादी आलोचना से परिचय प्राप्त करता है
- नगेंद्र की मनोवैज्ञानिक आलोचना पद्धति के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- अलोचना और मनोविश्लेषण का संबन्ध पहचानता है
- नगेन्द्र की मनोवैज्ञानिक पद्धति के बारे में समझता है

Background / पृष्ठभूमि

शुक्लोत्तर युग में समीक्षा की अनेक नयी पद्धतियाँ अपनाई जाने लगीं। क्योंकि युगीन साहित्य को समझने के लिए आलोचना के पुराने मानदंड काफी नहीं थे। इन पद्धतियों में प्रमुख है स्वच्छंदतावादी, ऐतिहासिक, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणात्मक और नयी आलोचना। हिंदी साहित्य के विकास के साथ-साथ आलोचना के मूल्यांकन में भी प्रगतिशील परिवर्तन हुए हैं, किंतु अभी आलोचना को विभिन्न नए आयामों की आवश्यकता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

मनोविश्लेषणवादी आलोचना, ओडिपस कॉम्प्लेक्स, अभिजात्यवाद, अभिव्यंजनावाद, प्रभाववाद

Discussion / चर्चा

3.1.1 मनोविश्लेषणवादी आलोचना

- मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में की जाने वाली कृति की समीक्षा

मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में की जाने वाली किसी कृति की समीक्षा को मनोविश्लेषणवादी आलोचना कहलाती है।जाहिर है यह आलोचना पद्धति मनोविज्ञान से अनुशासित होती है। काव्य का चरम लक्ष्य मनोविश्लेषणवादी समीक्षा में सौंदर्य बोध एवं आनंदानुभूति है। किसी भी रचना द्वारा ग्रहण किए जाने वाले विशेष रूप का विश्लेषण आलोचक कवि के स्वभाव, तत्कालीन परिस्थितियों एवं प्रेरणा स्रोतों के माध्यम से करता है। कवि

के जीवन एवं उसकी कृतियों में संबंध स्थापित करना भी मनोविश्लेषणवादी आलोचना का लक्ष्य होता है। आलोचना की यह विशेषता साहित्यकारों के साहित्य के अध्ययन के लिए उपयोगी है जिससे साहित्य निर्माण की समस्या के अध्ययन में सहायता मिलती है। मनोविश्लेषणकारी आलोचना के अंतर्गत साहित्य का विश्लेषण फ्रायड़, एडलर, की विचारधारा के आधार पर करने का प्रचलन रहा है। मनोविश्लेषणवादी पद्धति का एक सबसे बड़ा दोष यह रहा है कि मनोविश्लेषण क्रम में आलोचक इतने तल्लीन हो जाते हैं की कृति उपेक्षित हो जाती है।

3.1.1.1 मनोविश्लेषणादी आलोचना की सैद्धांतिक अवधारणा

साहित्य, कला, और संस्कृति के विश्लेषण के लिए मानसिक प्रक्रियाओं और मनोविज्ञान का उपयोग करती है। यह आलोचना विशेष रूप से फ्रायड और उसके अनुयायियों द्वारा प्रस्तुत सिद्धांतों पर आधारित होती है। इसके कुछ प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं:

1. **अवचेतन (Unconscious)**

मनोविश्लेषण में अवचेतन को केंद्रीय स्थान प्राप्त है। यह विचार किया जाता है कि व्यक्ति की अधिकांश मानसिक क्रियाएँ और निर्णय अवचेतन मन से प्रभावित होते हैं। साहित्यिक कृतियों में पात्रों के कार्य, संवाद और स्थितियाँ अक्सर लेखक के या समाज के अवचेतन विचारों, इच्छाओं और संघर्षों को प्रकट करती हैं।

2. **सपने और प्रतीकात्मकता**

फ्रायड ने सपनों को अवचेतन की अभिव्यक्ति माना। आलोचना में यह देखा जाता है कि साहित्यिक कृतियों में प्रतीकात्मकता का प्रयोग अवचेतन इच्छाओं और द्वंद्वों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। ये प्रतीक कहीं न कहीं लेखक या पात्रों की मानसिक स्थिति को दर्शाते हैं।

3. **मनोवैज्ञानिक संघर्ष**

पात्रों के मानसिक संघर्षों को मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से समझा जाता है, जैसे ईच्छाएँ, भय, शंकाएँ, और तनाव। यह संघर्ष अक्सर व्यक्तित्व के तीन प्रमुख भागों-ईगो (ego), सुपरईगो (superego) और इड (id)-के बीच होते हैं।

4. **लिंग और यौनिकता (Gender and Sexuality)**

फ्रायड के सिद्धांतों में यौनिकता और लिंग के मुद्दे भी महत्वपूर्ण हैं। आलोचना में यह देखा जाता है कि कैसे पात्रों का यौनिक और लिंगीय व्यवहार उनकी मानसिक संरचना और समाज के अपेक्षाओं से प्रभावित होता है। विशेष रूप से 'ओडिपस कॉम्प्लेक्स' (Oedipus Complex) जैसी अवधारणाएँ इस दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण हैं।

5. **प्रक्षिप्त और पहचान**

मनोविश्लेषणात्मक आलोचना यह मानती है कि लेखक और पाठक अपनी मानसिक अवस्थाओं, अवचेतन विचारों और इच्छाओं को पात्रों और घटनाओं में प्रक्षिप्त (प्रक्षिप्तिकरण) करते हैं। इसके माध्यम से लेखक और पाठक दोनों अपने आंतरिक संघर्षों को बाहर व्यक्त करते हैं।

6. **स्मृति और समय**

- मनोविश्लेषणादी आलोचना के मुख्य पहलुएँ

साहित्य में समय और स्मृति की प्रस्तुति भी मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होती है। पात्रों की यादें, अतीत के अनुभव और समय की धारा उनके मान्-ासिक विकास को प्रभावित करती हैं, और यह कृतियों के अर्थ को गहरा करती है।

इन सब पहलुओं का उद्देश्य साहित्यिक कृतियों को एक गहरी, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समझना और पात्रों, घटनाओं और रचनात्मक प्रक्रियाओं के बीच अवचेतन मनोविज्ञान के अंतर्संबंध को उजागर करना है।

3.1.1.2 मनोविश्लेषण और आलोचना का संबंध

- मानव मानसिकता, अवचेतन प्रक्रियाओं, मानसिक संघर्षों और यौनिकता पर ध्यान केंद्रित करता है।

मनोविश्लेषण और आलोचना का संबंध साहित्यिक कृतियों के गहरे और सूक्ष्म विश्लेषण से है। मनोविश्लेषण एक मनोविज्ञानात्मक सिद्धांत है, जो मानव मानसिकता, अवचेतन प्रक्रियाओं, मानसिक संघर्षों और यौनिकता पर ध्यान केंद्रित करता है। आलोचना के संदर्भ में इसका उपयोग साहित्य, कला, और संस्कृति के विश्लेषण के लिए किया जाता है, ताकि कृतियों के भीतर छिपे मानसिक, सांस्कृतिक और मनोविज्ञानात्मक पहलुओं को उजागर किया जा सके। मनोविश्लेषणात्मक आलोचना का प्रमुख उद्देश्य यह है कि किसी कृति के पात्रों, घटनाओं और उनके व्यवहार के पीछे के मानसिक कारणों को समझा जाए। यह आलोचना उस कृति को एक मानसिक दृष्टि कोण से देखती है, जिससे पात्रों के अवचेतन द्वंद्व, इच्छाएँ, डर, और मानसिक संघर्ष स्पष्ट होते हैं।

आलोचना और मनोविश्लेषण का संबंध निम्नलिखित बिंदुओं में देखा जा सकता है:

1. **अवचेतन मन**

मनोविश्लेषणात्मक आलोचना में यह देखा जाता है कि कृतियों में पात्रों के विचार और क्रियाएँ अक्सर लेखक के या समाज के अवचेतन विचारों का परिणाम होती हैं। यह अवचेतन की भूमिका को समझने का एक साधन है, जिससे पाठक कृति में निहित मानसिक और भावनात्मक पहलुओं को समझ सकते हैं।

2. **प्रतीकात्मकता और मानसिक प्रक्रियाएँ**

मनोविश्लेषणात्मक आलोचना में यह देखा जाता है कि कैसे साहित्यिक कृतियाँ प्रतीकों और रूपकों के माध्यम से अवचेतन इच्छाओं, संघर्षों और भावनाओं को व्यक्त

करती हैं। लेखक के या पात्रों के भीतर की मानसिक प्रक्रियाओं को उजागर करना इस आलोचना का मुख्य उद्देश्य है।

3. **आंतरिक संघर्ष और व्यक्तित्व**

मनोविश्लेषणात्मक आलोचना पात्रों के आंतरिक संघर्षों-जैसे इड (id), ईगो (ego), और सुपरईगो (superego) के बीच के संघर्ष-को समझने का प्रयास करती है। यह साहित्यिक कृतियों में पात्रों के मानसिक द्वंद्व को विश्लेषित करती है और यह देखती है कि कैसे ये संघर्ष उनकी क्रियाओं और निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

4. **ओडिपस कॉम्प्लेक्स और यौनिकता**

▶ साहित्य में अक्सर पात्रों के रिश्तों, मानसिक स्थिति और संघर्षों को आकार देते हैं

फ्रायड के सिद्धांत के आधार पर, मनोविश्लेषणात्मक आलोचना में ओडिपस कॉम्प्लेक्स, यौनिक इच्छाएँ और मानसिक विकास के अन्य पहलुओं को कृतियों में पहचाना जाता है। ये तत्व साहित्य में अक्सर पात्रों के रिश्तों, मानसिक स्थिति और संघर्षों को आकार देते हैं।

इस प्रकार, मनोविश्लेषणात्मक आलोचना और साहित्य का संबंध गहरे मानसिक, अवचेतन और सांस्कृतिक तत्त्वों की पहचान और विश्लेषण से है, जिससे हम साहित्य को एक नए दृष्टिकोण से समझ सकते हैं।

3.1.1.3 नगेंद्र की मनोवैज्ञानिक पद्धति

▶ हिन्दी आलोचना के व्यावहारिक एवं सैध्दान्तिक दोनों दृष्टियों से व्याख्या किए हैं।

शुक्ल जी के परवर्ती आलोचकों में डॉ नागेंद्र का विशिष्ट स्थान है। भारतीय रस परंपरा तथा पाश्चात्य मनोविज्ञान, सौंदर्य शास्त्र और मनोविश्लेषण की सीमा रेखाओं पर उन्होंने काव्यानुभूति के प्रभाव बिंबों को ग्रहण किया एवं उसके आंतरिक एवं बौद्धिक संवेदनाओं का सूक्ष्म विश्लेषण किया। उनकी आलोचना काव्यात्मक हैइ स्वच्छन्दतावादी एवं सौष्ठवादी समीक्षा पद्धति के आलोचक नगेंद्र ने हिन्दी आलोचना के व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक दोनों दृष्टियों से व्याख्या की है। डॉ.नगेन्द्र ने अपनी प्रथम कृति 'सुमित्रानन्दन पन्त' (1937) के प्रकाशन के साथ की थी। छायावादी काव्य की अन्तर्मुखी विशेषताएं सौन्दर्यभावना (प्रकृति) मानव जगत के प्रति भावना, पुरातन परिवर्तन आत्मभिव्यंजना (व्यक्तित्व) करुणा की धारा, दुःखवाद, रहस्यवाद और शैली कला पर विचार किया गया है। डॉ.नगेन्द्र 'पंतजी' को सुन्दर कवि ही नहीं मानते हैं। उनका सुन्दर शिव और सत्य से शून्य नहीं है। उसका सूक्ष्म-से-सूक्ष्म क्रिया-कम्पन इसके हृदय में पुलक और प्राणों में स्पन्दन भर देता है। डॉ.नगेन्द्र छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह मानते हैं। अब तक डॉ.नगेन्द्र ने रवीन्द्रनाथ टैगोर, आचार्य शुक्ल, मैथलिशरण गुप्त, प्रसाद, पन्त, निराला, राहुल सांकृत्यायन, महादेवी वर्मा, दिनकर, बच्चन, अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर आदि अनेक कवियों और लेखकों की अनेक कृतियों की व्यावहारिक समीक्षाएं प्रस्तुत कर चुके हैं। इस प्रकार देखते हैं कि उनकी आलोचना कृति छायावाद से लेकर आधुनिक काल तक सम्मिलित रही है। उनके कुछ निबंधों में फ्रायडियन प्रभाव की झलक मिलती है। इसलिए उन्होंने मनोविश्लेषणात्मक व्याख्या की है।

वे पाश्चात्य आलोचक आई. ए. रिर्चड्स और क्रोचे से विशेष प्रभाव ग्रहण किया है। वे रस सिध्दान्त में फ्रायड दर्शन को साधन मानते हैं, बाधक नहीं, क्योंकि दोनों ही आनन्द के सिद्धान्त 'प्लेजर प्रिंसिपुल' को लेकर चलते हैं। डॉ. नगेन्द्र ने आलोचक की आस्था (1966ई.) निबन्ध संग्रह में संग्रहीत प्रथम तीन निबन्धों के अन्तर्गत अपनी साहित्यिक मान्यताओं को स्पष्ट किया है। इस संदर्भ में उन्होंने साहित्य-सम्बन्धी कई मूलभूत-प्रश्नों का समाधान करने की चेष्टा की है। साहित्य का स्वरूप, उसका प्रयोजन, उसमें अन्तर्निहित मूल्य, उसके तत्व और उपादान अनुभूति और अभिव्यक्ति का सम्बन्ध, उसमें निहित सत्य की युग-बद्धता आदि। डॉ.नगेन्द्र 'रस' को आस्तिकता पर आधारित न मानकर मानव संवेदना पर आधारित मानते हैं। डॉ.नगेन्द्र रस की अनुभूति आनन्द रूप को मानते हैं। डॉ.नगेन्द्र ने रस को व्यापक रूप में ग्रहण किया है। वह विभावानुभाव व्याभिचारि संयुक्त स्थायी' अर्थात परिपाक आवस्था का ही वाचक नहीं वरन उसमें काव्य की सम्पूर्ण भाव-सम्पदा का अन्तर्भाव माना है। काव्य की अनुचिंतन से प्राप्त रागात्मक अनुभूति के सभी रूप और प्रकार- सूक्ष्म और प्रबल, सरस और जटिल, क्षणिक और स्थायी संवेदन, स्पर्श, चित्त-विकार, भाव-बिम्ब संस्कार मनोदशा, शील सभी रस की परिधि में आ जाते हैं। एक ओर उन्होंने समस्त प्राचीन भारतीय काव्य सम्प्रदायों- अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य को रस के संदर्भ में देखा-परखा है तो दूसरी ओर पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सभी प्रमुख वादों- अभिजात्यवाद, स्वच्छन्दतावाद, आर्दशवाद, यथार्थवाद, अभिव्यंजनावाद, प्रभाववाद, प्रतीकवाद आदि को रस सिद्धांत की व्याप्ति के भीतर समेट लिया है। आपकी स्थापना है कि - 'रस-सिध्दांत एक ऐसा व्यापक सिद्धांत है जिसमें इन वादों का विरोध मिट जाता है, जो सभी के अनुकूल पड़ता है। और सभी का अपने स्वरूप में समन्वय कर लेता है।तात्पर्य यह है कि डॉ.नगेन्द्र ने रस का सम्बन्ध मानवीय अनुभूति से या मानव की रागात्मक चेतना से जोड़कर उसे कविता मात्र के मूल्यांकन का शाश्वत मानदण्ड बना दिया है। 'नयी कविता' के संदर्भ में विचार करते हुए वे कहते हैं- चालिस वर्ष पूर्व छायावाद ने भी रस का विरोध किया था, पर आज रस ही उसका प्राण सर्वस्व है, उसके प्रायः दो दशक बाद प्रगतिवाद ने उस पर प्रहार किया था, किन्तु आज उसका जितना भी अंश अवशिष्ट है वह रस के आधार पर ही जीवित है। इसलिए 'नयी कविता' का भी कल्याण इसी में है कि वह इन रसमय बन्धनों को स्वीकार कर लें।

▶ 'रस' को आस्तिकता पर आधारित न मान-ाकर मानव संवेदना पर आधारित मानते हैं

अतः कविवर सुमित्रानन्दन पन्त के शब्दों में- डॉ. नगेन्द्र रसचेता तथा रस-द्रष्टा है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

मनोविश्लेषणवादी आलोचना एक ऐसा दृष्टिकोण है, जिसमें साहित्य की कृतियों का विश्लेषण मनोविज्ञान और विशेष रूप से फ्रायड के सिद्धांतों के आधार पर किया जाता है। इस आलोचना में अवचेतन, मानसिक संघर्ष, प्रतीकात्मकता, यौनिकता, और आंतरिक द्वंद्वों जैसे पहलुओं को मुख्य रूप से देखा जाता है। मनोविश्लेषणात्मक आलोचक यह मानते हैं कि साहित्यिक कृतियाँ लेखक के मानसिक और अवचेतन विचारों, इच्छाओं और संघर्षों को व्यक्त करती हैं। इसमें यह भी देखा जाता है कि पात्रों के आंतरिक संघर्ष, जैसे इड (id), ईगो (ego) और सुपरईगो (superego) के बीच के द्वंद्व, उनके कार्यों को प्रभावित करते हैं। यह आलोचना कृतियों में प्रतीकों और रूपकों के माध्यम से अवचेतन की गहरी परतों को उजागर करने का प्रयास करती है। मनोविश्लेषणात्मक आलोचना के अंतर्गत साहित्य को एक मानसिक दृष्टिकोण से समझने की कोशिश की जाती है, जिससे हम कृतियों के गहरे और छिपे अर्थों तक पहुँच सकें। हालांकि, इसका एक दोष यह भी है कि आलोचक कभी-कभी कृति की वास्तविकता और उसके साहित्यिक गुणों को नजरअंदाज कर सकते हैं, और केवल मानसिक विश्लेषण पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. मनोविश्लेषणवादी आलोचना की सैद्धांतिक अवधारणा क्या है?
2. फ्रायड के सिद्धांतों के आधार पर मनोविश्लेषणात्मक आलोचना में किन पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है?
3. मनोविश्लेषणात्मक आलोचना में 'अवचेतन' का क्या महत्व है?
4. मनोविश्लेषणात्मक आलोचना में 'ओडिपस कॉम्प्लेक्स' का क्या स्थान है?
5. डॉ. नगेंद्र की मनोवैज्ञानिक पद्धति और उनके काव्यात्मक दृष्टिकोण के बारे में बताइए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श - डॉ. सुधीश पचौरी
2. विभक्ति और विखंडन - डॉ. सुधीश पचौरी
3. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार - कृष्णदत्त पालीवाल
4. हिंदी समीक्षा: स्रोत एवं सूत्रधार - सत्यदेव मिश्र

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. Contemporary Literary and Cultural Theory -Pramod K Nayar
2. आलोचना से आगे - डॉ. सुधीश पचौरी
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना - रामविलासार्मा
4. हिंदी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

मार्क्सवादी समालोचना पद्धति रामविलास शर्मा, शिवदान सिंह चोहान

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- मार्क्सवादी समालोचना के बारे में समझता है
- रामविलास शर्मा की समीक्षा दृष्टि का परिचय प्राप्त करता है
- शिवदान सिंह चोहान के बारे में जानता है
- मार्कसवादी अलोचना पद्धती के प्रमुख सूत्र को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

मार्क्सवादी साहित्यिक समालोचना, जिसे प्रगतिशील आलोचना भी कहा जाता है, 20वीं सदी के आरंभ में भारत में उत्पन्न हुई। इस समालोचना का मूल विचार यह था कि साहित्य को समाज, राजनीति और इतिहास के संदर्भ में देखा जाए। 1930 के आसपास जब भारत में स्वतंत्रता संग्राम तेज़ हुआ और सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों ने जोर पकड़ा, तो साहित्यकारों को यह महसूस हुआ कि साहित्य केवल आंतरिक सौंदर्य या आदर्शों पर नहीं, बल्कि समाज के यथार्थ पर आधारित होना चाहिए। साहित्य में इस बदलाव की शुरुआत उन समय के प्रमुख रचनाकारों और आलोचकों द्वारा की गई, जिन्होंने मजदूरों, किसानों, और गरीबों की समस्याओं को अपने लेखन का हिस्सा बनाया। इस समय के लेखक यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाते हुए समाज की सच्चाई को सामने लाने का प्रयास कर रहे थे। मार्क्सवादी आलोचना का उद्देश्य यह था कि साहित्य के मूल्यांकन के लिए सिर्फ रचनात्मकता और सौंदर्यशास्त्र का ही नहीं, बल्कि समाज और वर्ग संघर्ष का भी ध्यान रखा जाए। इस प्रकार, साहित्य को न केवल एक कला के रूप में, बल्कि समाज के बदलते राजनीतिक और आर्थिक संदर्भों में देखा जाता था।समाजवाद, मार्क्सवाद और यथार्थवाद जैसे विचारधाराओं ने इस आलोचना पद्धति को आकार दिया, और यह भारतीय साहित्य में नई सोच और दृष्टिकोण लेकर आई।

Keywords / मुख्य बिन्दु

किसान आंदोलन, मज़दूर आंदोलन, छात्र आंदोलन, युवा आंदोलन

Discussion / चर्चा

3.2.1 मार्क्सवादी समालोचना पद्धति

हिंदी में मार्क्सवादी साहित्यिक समालोचना ने ठोस ऐतिहासिक परिस्थितियों में अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व धारण कर लिया है। इसीलिए उसकी एक भिन्न संज्ञा प्रचलित हो गई है। उसे प्रगतिशील आलोचना का नाम दिया जाता है। कुछ लोग इसे प्रगतिशील-जनवादी समालोचना कहना ज्यादा पसंद करते हैं। विशुद्ध रूप से मार्क्सवाद पर आधारित एक स्वतंत्र समीक्षा प्रणाली के रूप में इसका आरंभ नहीं हुआ था। 1930 के आसपास जब राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन की अंतर्धाराओं के रूप में किसान आंदोलन, मज़दूर आंदोलन, छात्र आंदोलन, युवा आंदोलन, क्रांतिकारी देश-भक्ति के नेतृत्व वाले सशस्त्र आंदोलन आदि ज़ोर पकड़ने लगे तो साहित्य, कला, दर्शन और चिंतन के क्षेत्र में भी नई प्रवृत्तियाँ प्रकट हुई। ऐसी ही एक प्रवृत्ति के तौर पर साहित्य में यथार्थवादी चित्रण-अंकन का दौर सामने आया। स्वयं छायावादी, आदर्शवादी, सुधारवादी रचनाकारों ने अपने पुराने संस्कारों और रचनात्मक तौर-तरीकों से छुटकारा पाने का प्रयास आरंभ किए। सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में आविर्भूत इस नई यथार्थवादी प्रवृत्ति के साथ-साथ पत्रकारों, युवा समीक्षकों, सौंदर्यशास्त्रियों तथा कला-चिंतकों की नई पीढ़ी का अभ्युदय 1930 के आसपास वैचारिक आन्दोलन उत्पन्न करने लगा। इस दृष्टि से राधा मोहन गोकुल जी, राहुल सांकृत्यायन, गणेश शंकर विद्यार्थी, रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी, अख्तर हुसैन रायपुरी, शिवदान सिंह चौहान, प्रकाशचन्द्र गुप्त आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अप्रैल, 1933 के 'विश्वमित्र' (कलकत्ता) में 'साहित्य और क्रांति' शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ जिसके लेखक अख्तर हुसैन रायपुरी थे। 1930 के बाद हर स्तर पर बड़ी तेज़ी से परिवर्तन हो रहा था। भारत के मुक्ति संग्राम का यह नया उभार साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में भी नए प्रश्न उपस्थित कर रहा था। मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, ट्राटस्की, मैक्सिम गोर्की, कॉडवेल, राल्फ फाक्स आदि का साहित्य ब्रिटिश खुफिया पुलिस की नज़रों से बचाकर वितरित किया जा रहा था। समाजवाद और मार्क्सवाद की चर्चा को भगत सिंह की शहादत तथा भगत सिंह के स्वयं के लिखे निबंधों तथा वक्तव्यों से पर्याप्त बल मिला था। ठीक इसी मौके पर 1934 में 'विशाल भारत' पत्रिका (कलकत्ता) के माध्यम से बनारसीदास चतुर्वेदी ने एक परिसंवाद आरंभ किया। कुछ दिनों पहले निबंध की साहित्यिक विधा के क्षेत्र में युगांतरकारी महत्व का प्रश्न उपस्थित करने वाले सरदार पूर्ण सिंह सौंदर्य का नया अर्थ बता चुके थे। 'मज़दूरी और प्रेम' शीर्षक निबंध वस्तुतः एक जनवादी- प्रगतिशील सौंदर्यबोध का घोषणा-पत्र था। इस निबंध की सीमा सिर्फ इतनी थी कि लेखक मानववादी आदर्शों की शब्दावली की सीमा नहीं लाँघता। प्रेमचंद द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के प्रवक्ता बनकर तो नहीं आते, पर यथार्थवाद, वर्ग-संघर्ष, राष्ट्रीय स्वाधीनता और जनवाद का मुखर समर्थन करते हुए नए सौंदर्यबोध का निर्णायक प्रश्न बहस के बीच ले आते हैं। उल्लेखनीय है कि प्रगतिशील

लेखक संघ के पहले अधिवेशन (लखनऊ, 1936) के सभापति-पद से बोलते हुए उन्होंने जीवन में और साहित्य में सौंदर्य के नए प्रतिमान का सवाल बड़े ज़ोर-शोर से उठाया -

'हमें सुंदरता की कसौटी बदलनी होगी। अभी तक यह कसौटी अमीरी और विलासिता के ढंग की थी। हमारा कलाकार अमीरों का पल्ला पकड़े रहना चाहता था, उन्हीं की कद्रदानी पर उसका अस्तित्व अवलंबित था और उन्हीं के सुख-दुःख, आशा-निराशा, प्रतियोगिता और प्रतिद्वंद्विता की व्याख्या कला का उद्देश्य था। उसकी निगाह अंतःपुर और बंगलों की ओर उठती थी। झोंपड़े और खंडहर उसके ध्यान के अधिकारी न थे। उन्हें वह मनुष्यता की परिधि के बाहर समझता था। कभी इसकी चर्चा करता भी था, तो इसका मजाक उड़ाने के लिए। ग्रामवासी की देहाती वेशभूषा और तौर-तरीके पर हँसने के लिए, उसका शीन-काफ़ दुरस्त न होना या मुहाविरों का गलत उपयोग उसके व्यंग्य-विद्रूप की स्थायी सामग्री थी। वह भी मनुष्य है, उसका भी हृदय है और उसमें भी आकांक्षाएँ हैं, यह कला की कल्पना के बाहर की बात थी।'

▶ प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अधिवेशन (लखनऊ, 1936)

अपने इसी भाषण के अगले हिस्से में प्रेमचंद ने 'जीवन-संग्राम में सौंदर्य के उत्कर्ष' को देखने की नई दृष्टि को प्रस्तावित किया था।

1930 से 1940 के बीच हिंदी आलोचना के प्रस्थान-बिंदुओं को बदलने के संघर्ष में सृजनशील लेखकों ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई। गर्मी की तपती दोपहरी में पत्थर तोड़ने वाली औरत की श्रमशीलता में सौंदर्य देखने की दृष्टि निराला की ओर से सामने लाई गई। 'काव्य, कला तथा अन्य निबंध' में जयशंकर प्रसाद की ओर से अकिंचन तथा लघु लोगों के जीवन पर दृष्टिपात करनेवाली कला की व्याख्या की गई और 'यथार्थवाद' का प्रतिपादन किया गया। 'ग्राम्या' में पंत ने ग्राम जीवन के धूल भरे मैले से आँचल में लिपटी भारत माता की उदास प्रतिमा का चित्र प्रस्तुत कर उक्त नए सौंदर्य-बोध की ही पुष्टि की।

स्वतःस्फूर्त रूप में नयी आलोचना-दृष्टि के उद्भव की पृष्ठभूमि तैयार हो रही थी। वैचारिक द्वंद्व और मंथन की आवश्यकता थी। ऐसे मौके पर ही शिवदान सिंह चौहान, रामविलास शर्मा, प्रकाशचन्द्र गुप्त, अमृतराय, रामेश्वर शर्मा और चन्द्रबली सिंह जैसे मार्क्सवादी आलोचकों की पहली पीढ़ी हिंदी समीक्षा के क्षेत्र में सामने आई। इस पहली पीढ़ी के आलोचकों के आगे ठोस रूप में यथार्थवाद, स्वच्छंदतावाद तथा अतीत के क्लासिक मूल्य के साहित्य की विवेचना की समस्या अत्यंत गंभीर रूप में चुनौती उपस्थित कर रही थी। उल्लेखनीय है कि लगभग इन्हीं प्रश्नों से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जूझ रहे थे और महावीर प्रसाद द्विवेदी जूझ चुके थे क्योंकि रस सिद्धांत, अलंकारवाद, चमत्कारवाद नायक-नायिका भेद, दरबारी काव्य-परंपरा आदि के रूप में सामंती सौंदर्य मूल्य के विरुद्ध संघर्ष दरपेश था। उल्लेखनीय है कि इसी के साथ पूँजीवादी व्यक्तिवाद भी धीरे-धीरे क्रोचे के सौंदर्यशास्त्र के बहाने ताल ठोंक कर खड़ा हो रहा

▶ शिवदान सिंह चौहान, रामविलास शर्मा, प्रकाशचन्द्र गुप्त, अमृतराय, रामेश्वर शर्मा और चन्द्रबली सिंह आदि पहली पीटी के हिन्दी समीक्ष हैं

था। आलोचना की नयी कसौटी बनाने में मार्क्सवादी आलोचकों ने उपर्युक्त अंतर्विरोधों के बीच ही अपने दायित्व का निर्वाह किया है। पिछले 70 वर्षों के अंदर हिंदी की मार्क्सवादी आलोचना दो स्तरों पर समृद्ध होती रही है (1) प्रगतिशील रचनाकर्मियों के आलोचनात्मक अवदान; तथा (2) प्रगतिशील समालोचकों के कृतित्व द्वारा।

मार्क्सवादी आलोचकों की दूसरी पीढ़ी में नामवर सिंह, शिव कुमार मिश्र, ओमप्रकाश अग्रवाल, सुरेन्द्र चौधरी, कुँवर पाल सिंह, चन्द्रभूषण तिवारी, दूधनाथ सिंह, आनंद प्रकाश, मैनेजर पाण्डेय, विश्वनाथ त्रिपाठी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

अपने अतीत या अपनी परंपरा का मूल्यांकन कैसे करना चाहिए, रचनाकार के युग के द्वंद्व के संदर्भों से रचना की अंतर्भूमियों की पहचान किस प्रकार करनी चाहिए, वस्तु और रूप-विधान के बीच के द्वंद्वात्मक रिश्ते की पड़ताल कैसे करनी चाहिए, सकारात्मक और नकारात्मक तत्वों में फर्क किस प्रकार करना चाहिए, युग के सक्रिय प्रतिबिम्बन तथा रचनाकार की प्रतिभा के अंतःसंबंधों की छानबीन का क्या तरीका हो सकता है इस तरह के सभी प्रश्नों पर मार्क्सवादी आलोचकों ने सभी प्रश्नों पर विस्तार से विचार किया है। इसे पूरी तरह आत्मसात करने के लिए मार्क्सवादी आलोचकों की आलोचना कृतियों का अध्ययन आवश्यक है। अंत में आपको मार्क्सवादी आलोचना के कुछ प्रमुख सूत्रों से अवगत कराना आवश्यक है ताकि अन्य आलोचना पद्धतियों से उसके पार्थक्य को आसानी से समझा जा सके। वे सूत्र इस प्रकार हैं -

▶ मार्क्सवादी आलोचना के कुछ प्रमुख सूत्र

1. हर चीज़ को एक गतिमान प्रक्रिया के अंश के रूप में देखना चाहिए।
2. हर चीज़ के अंदर विकासशील और मरणशील, सकारात्मक और नकारात्मक, पुराना और नया - दो प्रकार के तत्व अवश्य होते हैं। अतः हर सामाजिक संवृत्ति तथा उसके परिणामों के अंदर मौजूद अंतर्विरोधों को समझना आवश्यक है।
3. हर चीज़ - चाहे वह कलाकृति या सौंदर्य मूल्य ही क्यों न हो अपने परिवेश तथा व्यापक संदर्भों से जुड़ी होती है - कोई भी साहित्यिक प्रवृत्ति कटी हुई पतंग की तरह निरपेक्ष नहीं होती। अतः साहित्य का मूल्यांकन सापेक्ष संदर्भों में ही करना चाहिए।

मार्क्सवादी आलोचकों में शिवदान सिंह चौहान, प्रकाशचंद्र गुप्त और डॉ. रामविलास शर्मा अग्रणी हैं।

3.2.2 डॉ. रामविलास शर्मा

▶ आदिकाव्य', 'साहित्य के स्थायी मूल्यों की समस्याः कालिदास', तथा 'भवभूति की करुणा' उनकी उल्लेखनीय आलोचनाएं हैं।

डॉ. रामविलास शर्मा ने छायावादी काव्य और उसमें विशेषकर निराला के साहित्य की व्याख्या से आलोचना-कार्य आरंभ किया। रामचंद्र शुक्ल और प्रेमचंद पर भी किया गया आलोचना कार्य महत्वपूर्ण उपलब्धियां है। इस दृष्टि से 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिंदी आलोचना', 'प्रेमचंद' और 'निराला की साहित्य साधना' (1968 ई.) हिंदी आलोचना की उपलब्धियां हैं। रामविलास शर्मा ने मार्क्सवादी साहित्य-सिद्धांतों का कोरा सैद्धांतिक प्रतिपादन ही नहीं किया बल्कि मार्क्सवादी दृष्टि से समूचे हिंदी साहित्य की

परंपरा की नयी व्याख्या प्रस्तुत की। इतना ही नहीं उन्होंने वाल्मीकि, कालिदास और भवभूति के साहित्य का भी विश्लेषण किया। 'आदिकाव्य', 'साहित्य के स्थायी मूल्यों की समस्याः कालिदास', तथा 'भवभूति की करुणा' उनकी उल्लेखनीय आलोचनाएं हैं।आपके आलोचक व्यक्तित्व की एक बहुत बड़ी विशेषता थी व्यापक और सजग दृष्टि। अपने समय के हर साहित्यिक विवाद की तरफ उनका ध्यान जाता था। और वे अपनी राय भी देते थे। जितनी लगन से वे प्राचीन और मध्ययुगीन काव्य का विवेचन करते थे, उतना ही ध्यान आधुनिक साहित्य और विषयों पर भी देते थे।

3.2.1.2 शिवदान सिंह चौहान

शिवदान सिंह चौहान ने मार्च 1937 ई. के 'विशाल भारत' में सबसे पहले "भारत में प्रगतिशील साहित्य की आवश्यकता" शीर्षक से एक लेख लिखा जिसमें उन्होंने प्रगतिशील साहित्य के सिद्धांतों को सूत्रबद्ध किया। उनके अनुसार प्रगतिशील शक्ति वह है जो न केवल संसार को स्पष्ट करती है बल्कि उसे परिवर्तित करने में भी सक्रीय रहती है। वे प्रगतिशीलता को वर्ग-गुट, देशकाल, पार्टी आदि की सीमाओं में बांधना उचित नहीं समझते थे। जो साहित्य जीवन के यथार्थ को गहराई और कलात्मक सच्चाई के साथ प्रतिबिम्बित करता है, वही प्रगतिशील साहित्य है। उनका मानना था कि प्रगतिशील कवि का मार्क्सवादी होना जरूरी नहीं कि मार्क्सवादी ही हो, वह गांधीवादी भी हो सकता है। 'आलोचना के सिद्धांत' और 'हिंदी साहित्य के अस्सी वर्ष' इनकी मुख्य रचनाएं हैं।चौहान जी 'हंस' और 'आलोचना' पत्रिकाओं के संपादक रहे। उनके आरंभिक निबंध 'प्रगतिवाद' (1946.ई.) में संकलित हैं। उनके आलोचनात्मक निबंधों के तीन संकलन 'साहित्य की परख' (1947 ई.), 'साहित्यानुशीलन', तथा 'आलोचना के मान' (1958 ई.) प्रमुख हैं जिनमें पुस्तक समीक्षाएं और सैद्धांतिक निबंध भी शामिल हैं।

▶ आलोचना के सिद्धांत' और 'हिंदी साहित्य के अस्सी वर्ष' इनकी मुख्य रचनाएं हैं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

मार्क्सवादी साहित्यिक समालोचना, जिसे प्रगतिशील आलोचना भी कहा जाता है, 1930 के आसपास शुरू हुई थी। उस समय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक आंदोलनों ने साहित्य में बदलाव की आवश्यकता को महसूस कराया। साहित्यकारों ने अपने लेखन में समाज की असली स्थिति को दिखाने का काम किया। प्रेमचंद ने भी कहा था कि साहित्य को सिर्फ अमीरों और उनके जीवन की समस्याओं तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि आम लोगों, जैसे मजदूरों और किसानों की समस्याओं को भी उठाना चाहिए। मार्क्सवादी आलोचना का मुख्य विचार यह था कि साहित्य को समाज और इतिहास के संदर्भ में देखना चाहिए।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. मार्क्सवादी आलोचना क्या है? इसे सरल शब्दों में समझाइए।
2. प्रेमचंद ने 'प्रगतिशील लेखक संघ' के अधिवेशन में क्या कहा था?
3. मार्क्सवादी आलोचकों के प्रमुख सिद्धांतों के बारे में बताइए।
4. हिंदी साहित्य में 1930 से 1940 के बीच क्या बदलाव आए थे?
5. आपके हिसाब से साहित्य का सही मूल्यांकन कैसे करना चाहिए?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी समीक्षा: स्त्रोत एवं सुत्रधार- सत्यदेव मिश्र
2. आलोचना और आलोचना: बच्चन सिंह
3. हिंदी आलोचना का विकास- नंदकिशोर नौसैनिक

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. Contemporary Literary and Cultural Theory -Pramod K Nayar
2. आलोचना से आगे - डॉ. सुधीश पचौरी
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना - रामविलास शर्मा
4. हिंदी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

हिन्दी में कथा समीक्षा - मोहन राकेश, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, नामवर सिंह, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, कृष्णदत्त पालीवाल

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कहानी-समीक्षा के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- मोहन राकेश का कथा समीक्षात्मक दृष्टि को समझता है
- अलोचक के रूप में कमलेश्वर को जानता है
- निर्मल वर्मा के बारे में समक्षता है

Background / पृष्ठभूमि

कहानी-समीक्षा एक विशेष प्रकार की आलोचना है जो हिंदी कहानी की संरचना, विषय, पात्रों और उनके समाजिक, मानसिक संघर्षों का विश्लेषण करती है। हिंदी कहानी की समीक्षा में साहित्य की अन्य विधाओं जैसे काव्य, नाटक, समाजशास्त्र और कला से भी आलोचनात्मक दृष्टिकोण लिया जाता है। शुरुआत में हिंदी कहानी आलोचना ने काव्यशास्त्र और नाट्यशास्त्र के प्रतिमानों से सहायता ली, क्योंकि उस समय कहानी की आलोचना के लिए कोई निर्धारित स्वरूप नहीं था।

कहानी में यथार्थ का चित्रण महत्वपूर्ण होता है, जिससे यह विधा अन्य साहित्यिक विधाओं से अलग होती है। छोटी कहानी (सलाईस ऑफ लाइफ) जीवन के छोटे लेकिन महत्वपूर्ण क्षणों का चित्रण करती है। एक अच्छी कहानी को एक कसे हुए ढांचे में प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें कोई भी अनावश्यक तत्व नहीं होता।

Keywords / मुख्य बिन्दु

काव्यालोचन, नाट्यालोचन, समाज-शास्त्र, चित्रकला, मूर्तिकला, हस्तशिल्प-कला, काष्ठकला, भित्तिचित्र कला, फोटोग्राफी

Discussion / चर्चा

3.3.1 कहानी समीक्षा का स्वरूप

कहानी-समीक्षा का स्वरूप निर्धारित करने के क्रम में इस बात पर ध्यान देना जरूरी है कि कहानी-साहित्य की अन्य विधाओं से जहाँ अलग होती है उस बिन्दु पर चिंतन किया जाए। प्रविधियों का विश्लेषण करने के बाद हिन्दी कहानी-समीक्षा के स्वतन्त्र स्वरूप निर्धारण की अपेक्षा है।

यह सही है कि भारतीय साहित्य-शास्त्र में नाट्यशास्त्र के प्रतिमान काव्यशास्त्र के भी प्रतिमान बन गये। मगर उसका एक सार्थक कारण यह भी है कि नाटक को काव्य का ही एक रूप माना गया है। हिन्दी में कहानियाँ लिखी जाने लगीं तो उसकी आलोचना के लिए साहित्य की अन्य विधाओं से प्रतिमान लेना ऐतिहासिक लाचारी का कार्य था। इसलिए काव्यालोचन के अनेक प्रतिमान हिन्दी कहानियों की आलोचना में उपयोग में लाये गये।संस्कृत में गद्य कथा की परम्परा थी और उसकी आलोचना के लिए आचार्यो ने कसौटियाँ भी बनाईं थी। दण्डी और वामन ने गद्य-प्रबन्धों के लिए प्रतिमान निर्धारित किये थे। मगर हिन्दी कहानी आलोचना ने उससे कोई सहायता नहीं ली। हिन्दी की कहानी-समीक्षा ने आरंभ से आज तक काव्यालोचन, नाट्यालोचन, समाज-शास्त्र, चित्रकला, मूर्तिकला, हस्तशिल्प-कला, काष्ठकला, भित्तिचित्र कला, फोटोग्राफी और इसी तरह उपयोगी तथा ललित कलाओं के विभिन्न क्षेत्रों से आलोचना के प्रतिमान लिए। इसलिए दो टूक शब्दावली में हिन्दी कहानी-समीक्षा की नितान्त व्यक्तिगत पूँजी का उल्लेख या निर्देश करना कठिन है।कथा के तत्त्व प्राचीनकाल से ही महाकाव्य, खण्डकाव्य, चम्पू, नाटक या गद्य प्रबन्धों में उपलब्ध है इसलिए कहानी में कथा-तत्त्वों की खोज हिन्दी कहानी समीक्षा की नितान्त निजी कसौटी नहीं बन पाती। इसी तरह कथावस्तु के आरम्भ, मध्य, चरमबिन्दु और अवसान जैसे तत्त्व भी काव्य और नाट क में भी मिलते हैं इसलिए इन्हें भी कहानी की नई और स्वतन्त्र कसौटी मानने में कठिनाई होती है।

▶ नाट्यशास्त्र के प्रतिमान काव्यशास्त्र के भी प्रतिमान बन गये।

3.3.2 हिन्दी कहानी समीक्षा : उद्भव और विकास

कहानी जीवन के किसी छोटे मगर महत्वपूर्ण अंश की यथार्थ की भूमि पर चित्रित करने वाली विधा है। यथार्थ की शर्त एक स्वतन्त्र कसौटी हो सकती है क्योंकि अन्य साहित्यिक विधाओं में यथार्थ तत्त्व नहीं है। जीवन के यथार्थ अनुभव को ही वास्तविकता या यथार्थ की जमीन पर कहानियों के ज़रिए चित्रित किया जा सकता है। या कल्पित अनुभव से कहानी का काम नहीं चलता। अन्य साहित्यिक विधाओं में यथार्थ अपरिहार्य तत्त्व नहीं है। छोटी कहानी को स्लाईस ऑफ लाइफ कहा गया है। जीवन में अनन्त विस्तार में छोटे-छोटे क्षण अनगिनत संख्या में आते हैं और चले जाते हैं। इन क्षणों के बीच कोई भी क्षण कहानी का विषय बन सकता है यदि उसमें ज्यादा

▶ छोटी कहानी को स्लाईस ऑफ लाइफ कहा गया है।

से ज्यादा गहाराई की सम्भावना हो। मन की कोई छोटी से छोटी तरंग या स्वभाव या कोई बारीक टुकड़ा भी कहानी का विषय बन सकता है। छोटी-छोटी बुनियाद पर कला का सुन्दरतम प्रारूप तैयार करना कहानी में ही सम्भव है। इसलिए न्यूनतम या अल्पतम सामग्री से साहित्यिक रचना का निर्माण केवल कहानी में ही सम्भव है। सामग्री की यह न्यूनता साहित्य की किसी अन्य विधा में दिखाई नहीं देती। इसलिए विषयवस्तु की सीमा तक बारीक कर देना भी कहानी की एक कसौटी बन सकती है। अतएव स्थापित मूल्यांकन, विश्लेषण और आलोचना के क्रम में विद्वान ऐसा मानते हैं कि कहानी में एक वाक्य या एक शब्द भी चरम बिन्दु तक पहुँचने के लिए अनावश्यक नहीं होना चाहिए। अर्थात कहानी की बनावट का ढाँचा इतना कसा-कसा होना चाहिए कि किसी भी प्रकार का ढीलापन बर्दाश्त नहीं किया जाए। तलवार की धार पर चलना और घायल न होना या तनी हुई रस्सी पर इस प्रकार सन्तुलन बनाकर चलना, कि जमीन पर गिरे भी नहीं और इस प्रकार से उस पार आ जा सके कहानी की निर्माण कौशल की एक विशेषता मानी जाती है।

3.3.3 मोहन राकेश

- आत्मप्रकाशन मनुष्य की प्रबल प्रवृत्ति है, वह नाटक, उपन्यास, कहानी के साथ-साथ निबंध में भी अभिव्यक्ति पाती है।

मोहन राकेश के समस्त सृजन पीठिका में उनका व्यक्तित्त्व प्रभावी बन गया है। गद्य की जिस विद्या की ओर वह उन्मुख हुए उसीमें उसने संपूर्ण जीवन के चित्रों को उकेर दिया है। आत्मप्रकाशन मनुष्य की प्रबल प्रवृत्ति है, वह नाटक, उपन्यास, कहानी के साथ-साथ निबंध में भी अभिव्यक्ति पाती है। निबंध में लेखक का व्यक्तित्व सर्वाधिक अहमियत रखता हैं। रचनाकार भले ही अपनी इच्छा से साहित्य में अपने व्यक्तित्व का प्रक्षेपण न करे; किन्तु वह अनजाने ही उसके सृजन में समावेश कर जाता है। उनके निबंध किसी एक वर्ग तक सीमित न रहकर शैली व विषय विविधता के कारण अनेक वर्ग के हो गए हैं।

3.3.3.1 मोहन राकेश की कथा समीक्षात्मक दृष्टि

1. **कला और जीवन का संबंधः**

मोहन राकेश के लिए, साहित्य और कला का उद्देश्य केवल मनोरंजन या सौंदर्य का आदान-प्रदान नहीं था, बल्कि यह जीवन के गहरे सवालों और समस्याओं को सामने लाने का एक साधन था। वे मानते थे कि साहित्य जीवन का प्रक्षिप्त रूप होता है, जिसमें समाज की सच्चाइयां और उसके भीतर की विद्यमान असमानताएँ उजागर होती हैं।

- साहित्य केवल बाहरी घटनाओं का विवरण नहीं होता, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर की जटिलताओं और तनावों का प्रतिबिंब भी है

2. **मानवता और मानसिकताः**

मोहन राकेश की आलोचना में मनुष्य के मानसिक संघर्षों और जीवन के दुरूह पहलुओं को बहुत महत्व दिया गया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कथा साहित्य में पात्रों के मानसिक संघर्षों, उनके भीतर के द्वंद्व और तात्कालिक समाज में उनके द्वारा उठाए गए सवालों को सही तरीके से चित्रित किया जाना चाहिए। उनका मानना था कि

साहित्य केवल बाहरी घटनाओं का विवरण नहीं होता, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर की जटिलताओं और तनावों का प्रतिबिंब भी होना चाहिए।

3. **संवेदनशीलता की आवश्यकता:**

मोहन राकेश का यह भी मानना था कि एक अच्छा समीक्षक उस कृति को पूरी संवेदनशीलता और समझ के साथ देखे। एक समीक्षक को लेखक की भावनाओं, उसकी मानसिक स्थिति और रचनात्मक उद्देश्यों को समझना चाहिए। वे आलोचना को केवल नकारात्मक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि रचनात्मक और उन्नति की दिशा में देखने के पक्षधर थे।

4. **समाज और साहित्य:**

- साहित्य समाज के संदर्भ में लिखा जाता है

उन्होंने यह भी समझाया कि साहित्य समाज के संदर्भ में लिखा जाता है, इसलिए किसी भी साहित्यिक कृति की समीक्षा में उस समाज की वास्तविकता और उसके भीतर के बदलावों को ध्यान में रखना चाहिए। वे यह मानते थे कि लेखक का कार्य केवल मनोरंजन करना नहीं है, बल्कि समाज की कमियों और विडंबनाओं को सामने लाना है।

5. **रचनात्मकता और व्यक्तित्व:**

- आलोचक को उसकी अद्वितीयता और रचनात्मकता को समझने की कोशिश करनी चाहिए

मोहन राकेश ने यह बताया कि एक अच्छे कथाकार को अपनी रचनात्मकता में स्वतंत्रता होनी चाहिए। आलोचना में वे लेखक के व्यक्तित्व और उसकी रचनात्मक स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए उसका मूल्यांकन करते थे। उनका कहना था कि किसी भी कृति की आलोचना करते समय आलोचक को उसकी अद्वितीयता और रचनात्मकता को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

3.3.4 आलोचक कमलेश्वर

- 'नई कहानी' सामान्य जनमानस से जुड़ी है।

कमलेश्वर जी ने 'नई कहानी' से संबंधित कई लेख लिखे। 'नई कहानी की भूमिका' में उन्होंने 'नई कहानी' के विविध आयामों को प्रस्तुत किया। 'नई कहानी' का सैद्धांतिक विवेचन एवं विश्लेषण इस आलोच्य कृति में दृष्टिगोचर होता है। इसमें उन्होंने प्राचीन कहानियों की विस्तृत विवेचना की है। इस कृति में नई कहानी से संबंधित नई घट नाएँ, नये क्षण, नये परिवेश आदि दर्शाए गए हैं। नई कहानी की विषय वस्तु पर भी प्रकाश डाला है। उन्होंने कहानी, पुरानी कहानी, समकालीन कहानी, लघु कहानी आदि पर भी विचार-विमर्श किया है। नई कहानी की भाषा की विशेषताओं पर भी विस्तृत विवेचना की गई है। नई कहानी की भाषा असाधारण ऊर्जा तथा असाध्य शक्ति है। 'नई कहानी' सामान्य जनमानस से जुड़ी है। इसलिए उसकी भाषा भी सहज, सरल, परिमार्जित है। आदमी-आदमी के रिश्ते, बदलते परिवेश, बदलती ज़िन्दगी, महानगरीय सभ्यता से घुसे विषाद, संत्रास, संघर्ष, आकांक्षाएँ आदि को उकेरने के लिए एक सीधी-साधी, पाठकों को ऊर्जा एवं शक्ति प्रदान करने वाली भाषा प्रयुक्त की गई है। कमलेश्वर जी ने 'सारिका' के 'मेरा पन्ना' में अपना संपादकीय वक्तव्य प्रस्तुत किया है। इसमें

साहित्यकारों के उत्तरदायित्व, कहानी की विभिन्न पहलुओं की पहचान, नई कहानी' पर विचार-विमर्श प्रस्तुत है।

3.3.4.1 नयी कहानी के आलोचक के रूप में कमलेश्वर का दृष्टिकोण

1. **वास्तविकता और जीवन के जटिल पहलुओं की ओर मुड़ना:**

कमलेश्वर ने नयी कहानी को वास्तविकता की ओर कदम बढ़ाने वाला आंदोलन माना। उनका मानना था कि पारंपरिक कहानी लेखन में आदर्शवाद और अतिशयोक्ति होती थी, जबकि नयी कहानी का उद्देश्य था जीवन की वास्तविकता, उसके गहरे पहलुओं और उसकी जटिलताओं को दिखाना। उन्होंने आलोचना की कि पुरानी कथाएँ समाज के सपनों और काल्पनिक संसार को दिखाती थीं, जबकि नयी कहानी ने समाज की विडंबनाओं, व्यक्तिगत संघर्षों, और मानवता के भटकाव को उकेरा।

2. **सामाजिक यथार्थवाद:**

कमलेश्वर नयी कहानी में सामाजिक यथार्थवाद के पक्षधर थे। वे यह मानते थे कि लेखक का काम समाज के वास्तविक परिवेश, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं को सामने लाना है। उनका यह विचार था कि कहानीकार को समाज में व्याप्त असमानता, शोषण, और हिंसा जैसी समस्याओं को सीधे और साफ-साफ उभारना चाहिए। उनके अनुसार, पुराने समय में लेखक यह डर रखते थे कि समाज की बुराइयों और कष्टों को उजागर करने से पाठक विचलित हो सकते हैं, लेकिन नयी कहानी में यह डर नहीं था।

▶ कमलेश्वर नयी कहानी में सामाजिक यथार्थवाद के पक्षधर थे

3. **पात्रों की जटिलता और उनके संघर्ष:**

कमलेश्वर के अनुसार, नयी कहानी में पात्रों का चित्रण अधिक जटिल और वास्तविक था। पारंपरिक कहानी में नायक आदर्श होते थे, लेकिन नयी कहानी में पात्रों को मानव स्वभाव के तमाम पहलुओं-उनकी कमजोरियों, संघर्षों, द्वंद्वों और भावनाओं के साथ प्रस्तुत किया जाता था। कमलेश्वर का मानना था कि यह पात्र अपनी असफलताओं, विफलताओं और व्यक्तिगत संघर्षों के बावजूद वास्तविक जीवन को दर्शाते थे। उनका कहना था कि जीवन की असलियत यही ह - संघर्ष और अनिश्चितता।

▶ साहित्य में केवल घटनाएँ और स्थितियाँ नहीं, बल्कि मानव मन और उसकी भावनाओं को समझना भी जरूरी है।

4. **संवेदनशीलता और मानसिकता का स्थान:**

कमलेश्वर ने नयी कहानी में केवल बाहरी घटनाओं को नहीं, बल्कि मानसिकता और संवेदनशीलता को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया। उनका यह मानना था कि साहित्य में केवल घटनाएँ और स्थितियाँ नहीं, बल्कि मानव मन और उसकी भावनाओं को समझना भी जरूरी है। नयी कहानी में लेखक को पात्रों के आंतरिक द्वंद्व, उनके मानसिक और भावनात्मक संघर्षों को समझने और उसे पाठकों के सामने लाने की कोशिश करनी चाहिए।

5. **भाषा और शिल्पः**

कमलेश्वर ने नयी कहानी के शिल्प को भी आलोचनीय दृष्टि से देखा। वे मानते थे कि यह शिल्प अधिक सहज, सीधे और समान्य जीवन से जुड़ा हुआ था। नयी कहानी में भाषा का प्रयोग अधिक स्पष्ट और प्राकृतिक था, जो पाठक को कहानी के साथ आसानी से जोड़ सके। इस भाषा में संपूर्णता और समानता थी, जो समाज के हर वर्ग के लिए समझ में आ सके।

3.3.5 निर्मल वर्मा

निर्मल वर्मा एक शब्द-सजग, भाषा-सजग कलाकर्मी थे। भाषा की किफ़ायतसारी के आधार पर वे प्रेमचंद के बाद शायद दूसरे बड़े साहित्यकार हैं। शब्दों को गंभीरता से लेने वाली उनकी यह आत्म-चेतना ही एक बड़े स्तर पर साहित्य में सार्थक भाषा प्रयोग की प्रतिबद्धता से जुड़ जाती है। इस रूप में, उनके हर लेखन की दृष्टि सर्वप्रथम एक सजग भाषा-दृष्टि है। उनकी साहित्यिक सोच भी यहीं से शुरू होती है- अर्थात, भाषा से। अतः, उनकी साहित्य-दृष्टि को समझने के लिए भी उनके भाषा-चिंतन से गुजरना नितांत जरूरी है।निर्मल वर्मा के मत में- 'इस आत्मखनन अथवा आत्म-अन्वेषण का ही सबसे सक्षम आयुध भाषा है। यह भाषा ही, उनके मत में, वह चीज है जिसमें अपना यथार्थ हम गढ़ते हैं, अपने को उसमें और उसमें स्वयं को परिभाषित करते हैं। यह मनुष्य की देह का अदृश्य अंग है, जो उसे आत्म-दृष्टि देता है भाषा और आत्म-बोध का यह सम्बन्ध मनुष्य को समस्त जीव-जंतुओं से अलग एक अद्वितीय श्रेणी में ला खड़ा कर देता है।

▶ भाषा की किफ़ायतसारी के आधार पर प्रेमचंद के बाद दूसरे बड़े साहित्यकार

उनके अनुसार, जिसे हम संस्कृति कहते हैं, उसकी पहचान महज उसके यथार्थ तक सीमित नहीं रहती, अपने स्वप्नों द्वारा भी वह अपनी विशेषता उजागर करती है, और इसकी बुनावट में भाषा का निर्णायक योगदान रहता है। शब्द में यदि स्वप्न का संकेत है तो स्मृति की छाया भी। इसीलिए, कोई भी भाषा, जब तक वह है, कभी मृत भाषा नहीं होती। यदि हमारे अतीत का सब कुछ मिट जाए तो भी भाषा बची रहती है, जिसके द्वारा एक समाज के सदस्य आपस में संवाद कर पाते हैं। वर्तमान में रहते हुए भी वे अवचेतन रूप में अपने अतीत से जुड़े रहते हैं, तथा अतीत, अदृश्य रूप में उनके वर्तमान में प्रवाहित होता रहता है।

▶ हर लेखन की दृष्टि सर्वप्रथम एक सजग भाषा-दृष्टि है।

3.3.5.1 नई कहानी और निर्मल वर्मा के विचार

1. **नई कहानी की विशेषताएँ**

निर्मल वर्मा का मानना था कि नई कहानी में पारंपरिक कथा लेखन से हटकर अदृश्य और आंतरिक संसार की ओर ध्यान दिया गया। उन्होंने इसे कथाकार की संवेदनशीलता और मानव मन के जटिलता के उद्घाटन के रूप में देखा। पारंपरिक कहानियों में अक्सर किसी समस्या का हल प्रस्तुत किया जाता था, जबकि नई कहानी में हल नहीं,

▶ नई कहानी में नायक का संघर्ष बाहरी नहीं, बल्कि भीतर का होता है

बल्कि समस्या के गहरे और जटिल पहलुओं को उकेरा जाता है। वर्मा के अनुसार, नई कहानी में नायक का संघर्ष बाहरी नहीं, बल्कि भीतर का होता है। यहां घटनाएँ और परिस्थितियाँ उतनी महत्वपूर्ण नहीं होतीं, जितना कि पात्रों की भीतरी दुनिया, उनकी असहमति और संघर्ष।

2. **व्यक्तित्व के द्वंद्व और मानसिकता:**

निर्मल वर्मा के लेखन में मानव मन के जटिल द्वंद्व और मनोविज्ञान को समझने का प्रयास था। उनका मानना था कि नई कहानी ने मनुष्य के अकेलेपन, असफलताओं और उसकी मानसिक स्थितियों को जिस गहराई से उकेरा, वह पारंपरिक कहानियों में न था। नई कहानी के पात्र वास्तविक और संवेदनशील होते थे, जो अपने आसपास के समाज और अपनी भावनाओं से जूझते थे।

3. **समाज और संस्कृति के बीच का द्वंद्व:**

▶ निर्मल वर्मा का लेखन संस्कारों और संवेदनाओं के बीच के द्वंद्व को भी प्रस्तुत करता है

निर्मल वर्मा का लेखन संस्कारों और संवेदनाओं के बीच के द्वंद्व को भी प्रस्तुत करता है। उन्होंने समाज की विद्यमान संरचनाओं और व्यक्तिगत संवेदनाओं के टकराव को बड़े प्रभावशाली तरीके से व्यक्त किया। वे मानते थे कि एक व्यक्ति, विशेषकर एक आधुनिक व्यक्ति, समाज से जुड़ा हुआ होते हुए भी अपनी व्यक्तिगत भावनाओं और संघर्षों में अलग-थलग महसूस करता है।

उनकी कहानियाँ इस संवेदनात्मक अंतर्विरोध को बहुत सूक्ष्मता से चित्रित करती थीं, जैसे कि एक व्यक्ति जो समाज के लिए जीता है, वही समाज उसके भीतर की संवेदनाओं को समझने में विफल रहता है। इस प्रकार, उनका लेखन समाज और व्यक्तिगत अनुभव के संवेदनशील मिलाजुला स्वरूप का संकेत था।

4. **स्मृति, अकेलापन और अस्तित्ववाद:**

निर्मल वर्मा के अनुसार, नई कहानी का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष अकेलापन और अस्तित्ववाद था। उनके पात्र अक्सर अपनी अवसादग्रस्त और अकेली स्थितियों का सामना करते थे। निर्मल वर्मा ने स्मृति, वियोग, और अस्थिरता को बहुत महत्वपूर्ण विषय माना। उनकी कहानियाँ मानव अस्तित्व के संघर्षों, यादों और अर्थहीनता के अहसास पर केंद्रित थीं।

5. **नई कहानी के शिल्प पर विचार:**

▶ नई कहानी के पात्र वास्तविक और संवेदनशील होते थे।

निर्मल वर्मा ने नयी कहानी के शिल्प पर भी गहरी आलोचनात्मक टिप्पणी की। उनके अनुसार, नई कहानी का शिल्प अधिक सूक्ष्म और गंभीर था, जिसमें वर्णन और संवेदनाओं का विस्तृत और यथार्थवादी चित्रण किया गया। उन्होंने पारंपरिक कहानी शिल्प के मुकाबले नई कहानी में प्रतीकवाद और अर्थपूर्ण खामोशी का महत्व बढ़ाया।

वे यह मानते थे कि कहानी में शब्दों का चुनाव, संवेदनात्मक अंतराल और निःशब्दता के तत्व, कहानी को अधिक गहरी और बहुविधता देने में मदद करते हैं। उनके अनुसार, यह शिल्प न केवल सामाजिक यथार्थ को, बल्कि व्यक्तिगत अस्तित्व और मानव संघर्ष के बीच के अंतराल को भी उभारता है।

3.3.6 नामवर सिंह

- सूक्ष्मदर्शिता और सहृदयता के साथ मार्क्सवादी आलोचना पद्धति का रूप प्रस्तुत करती हैं।

नवीन कहानी कला की समीक्षा प्रगतिवादी हिंदी आलोचना के एक समर्थ हस्ताक्षर के रूप में डॉ. नामवर सिंह का नाम लिया जाता है। उन्होंने आदिकालीन साहित्य से लेकर नए से नए हिंदी कवियों व लेखकों को अपनी आलोचना का विषय बनाया है। वे पृथ्वीराज रासो से लेकर मुक्तिबोध और धूमिल तक की लंबी और विशाल काव्य परंपरा को आत्मसात कर उसकी सम्यक समीक्षा करते हैं। इनके लेखन का आरंभ अपभ्रंश से होता है किंतु नयी कविता और समकालीन साहित्य पर भी सर्वाधिक सशक्त टिप्पणी करनेवालों में वे अग्रणी रहे।नामवर सिंह ने अपना आलोचकीय जीवन 'हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योगदान' से आरंभ किया था। इसमें अपभ्रंश साहित्य पर विचार करते हुए बीच-बीच में नामवर जी ने टिप्पणियाँ दी हैं, वे विचारपूर्ण एवं सुचिंतित हैं। वे सूक्ष्मदर्शिता और सहृदयता के साथ मार्क्सवादी आलोचना पद्धति का रूप प्रस्तुत करती हैं। इसमें अपभ्रंश साहित्य की कतिपय महत्वपूर्ण रचनाओं का परिचय देते हुए उनके सौंदर्य पक्षों का उद्घाटन किया गया है। उनके अनुसार भावधारा के विषय में अपभ्रंश से हिंदी का जहाँ केवल ऐतिहासिक संबंध है, वहाँ काव्य रूपों और छंदों के क्षेत्र में उस पर अपभ्रंश की गहरी छाप है।

- आत्म-संघर्ष की परिणति अंततः सामाजिक संघर्ष में होती है।

'छायावाद' नामक कृति में नामवर जी ने छायावाद की काव्यगत विशेषताओं को स्पष्ट करते हुए उसमें निहित सामाजिक यथार्थ का उद्घाटन किया। यह प्रगतिवादी आलोचना के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। अध्यायों में विभक्त इस कृति में विभिन्न अध्यायों के विवेच्य विषयों को सूचित करने के लिए जो शीर्षक दिए गए हैं, उनमें से अधिकांश छायावादी कवियों की काव्य-पंक्तियों के ही टुकड़े हैं। शीर्षकों से ही स्पष्ट है कि विवेचन में छायावादी काव्य वस्तु से सैद्धांतिक निष्कर्ष तक पहुँचा गया है। यहाँ पर गुण से नाम की ओर बढ़ा गया है तथा नामकरण की सार्थकता इस विशिष्ट काव्यधारा की काव्य-संपत्ति के आधार पर निश्चित की गयी है। किसी वाद पर हिंदी में इस वैज्ञानिक और निगमनात्मक ढंग से पहली बार विचार किया गया है। इसे रहस्यवाद, स्वच्छंदतावाद और छायावाद नाम से अभिहित किया गया है। इसमें छायावाद की विभिन्न विशेषताओं, रचनाओं, रचनाकारों का विधिवत विवेचन किया गया है।छायावाद की अन्यतम कृति 'कामायनी' की प्रतीकात्मकता एवं रूपकत्व पर नामवर सिंह ने विचार किया है। इन्होंने कामायनी के रूपकत्व के सामाजिक आयाम पर विचार करते हुए कहा है कि 'इसमें आधुनिक समस्याओं पर भी विचार किया गया है'। कामायनी में व्यंजित प्रतीकों को लेकर नामवर सिंह कहते हैं कि 'देवसंपन्नता का ध्वंस वस्तुतः हिंदू राजाओं और मुसलमान नवाबों तथा मुगल बादशाहों के विध्वंस का प्रतीक है। हिमसंस्कृति

प्राचीन जड़ता तो उषा नवजागरण की प्रतीक है। मनु देव-सभ्यता का प्रतीक है, कुमार प्रजातांत्रिक सभ्यता का। देवासुर संग्राम आत्मवाद एवं बुद्धिवाद के संघर्ष का प्रतीक है। इस प्रकार प्रसाद ने कामायनी में आधुनिक भारतीय सभ्यता के विविध पहलुओं का सजीव चित्रण किया है। यह भारत की आधुनिक सभ्यता का प्रतिनिधि महाकाव्य है। 'नामवर सिंह ने निराला की लंबी कविताओं 'सरोज स्मृति' और 'राम की शक्तिपूजा' का विश्लेषण अत्यंत सहृदय और भाषिक सर्जनात्मकता के स्तर पर किया है। कथा-साहित्य में प्रेमचंद तथा उनके समकालीनों ('प्रेमचंद और भारतीय समाज') के साथ ही साथ उन्होंने नई कविता के तर्ज पर नई कहानी ('कहानी : नई कहानी') के तमाम कथाकारों का भी सहानुभूति एवं संवेदना के धरातल पर विश्लेषण-मूल्यांकन किया है। सिद्धांत निरूपण संबंधी उनकी विशिष्ट प्रतिभा 'कविता के नए प्रतिमान' में दृष्टिगत होती है। इस पुस्तक के प्रथम खंड में उन्होंने प्रतिष्ठित काव्य प्रतिमानों की विस्तृत आलोचना करते हुए उनकी सीमाएँ बतायी हैं, तथा द्वितीय खंड में नई कविता के संदर्भ में काव्य-प्रतिमानों के प्रश्न को नए सिरे से उठाया गया है।'कविता के नए प्रतिमान' में नामवर जी ने मुक्तिबोध की प्रसिद्ध कविता 'अंधेरे में' की समीक्षा कर सबके लिए समीक्षा का द्वार खोल दिया। उनके अनुसार 'अंधेरे में' का मूल कथ्य अस्मिता की खोज है। अस्मिता की अभिव्यक्ति को परम अभिव्यक्ति से जोड़ते हुए नामवर जी ने कवि मुक्तिबोध के लिए अस्मिता की खोज को अभिव्यक्ति की खोज माना है। एक कवि के लिए परम अभिव्यक्ति ही अस्मिता है। मुक्तिबोध ने आत्मसंघर्ष के साथ-साथ बाह्य सामाजिक संघर्ष को भी स्वीकार किया है। आत्म-संघर्ष की परिणति अंततः सामाजिक संघर्ष में होती है। उन्होंने रामविलास शर्मा की 'नई कविता और अस्तित्ववाद' में व्यक्त मान्यताओं को चुनौती देते हुए मुक्तिबोध जैसे कवियों के साहित्यिक मूल्य को पुनर्स्थापित किया। परंपरा संबंधी रामविलास शर्मा की स्थापनाओं ('परंपरा का मूल्यांकन') से टकराने के क्रम में उन्होंने 'दूसरी परंपरा की खोज' का व्यवस्थित प्रयास किया।

▶ 'अंधेरे में' का मूल कथ्य अस्मिता की खोज है

नामवर सिंह की आलोचकीय ख्याति अपेक्षाकृत काव्य-आलोचना के क्षेत्र में अधिक रही। जिन काव्य-मूल्यों का प्रश्न उन्होंने उठाया, उनमें भावबोध से लेकर काव्यभाषा तक के स्तर तक काव्य-सृजन को एक सापेक्ष इकाई के रूप में देखने का प्रयास है जिसमें रचना के निर्माण में एक विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक परिवेश के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। उन्हें वाचिक परंपरा का मूर्धन्य आलोचक भी माना जाता है। सभा-गोष्ठियों में दिये गए उनके व्याख्यानों को ही पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवा दिया गया। 1959 के एक व्याख्यान में उनकी कही यह बात आज भी प्रासंगिक है, 'आधुनिक साहित्य जितना जटिल नहीं है, उससे कहीं अधिक उसकी जटिलता का प्रचार है। जिनके ऊपर इस भ्रम को दूर करने की जिम्मेदारी थी, उन्होंने भी इसे बढ़ाने में योग दिया।' यहां वे 'साधारणीकरण' की चर्चा करते हुए कहते हैं, 'नए आचार्यों ने इस शब्द को लेकर जाने कितनी शास्त्रीय बातों की उद्धरणी की, और नतीजा? विद्यार्थियों पर उनके आचार्यत्व की प्रतिष्ठा भले हो गई हो, नई कविता की एक भी जटिलता नहीं सुलझी।' नामवर सिंह ने हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन के संबंध में भी अपना प्रगतिशील दृष्टि

▶ वाचिक परंपरा का मूर्धन्य आलोचक।

कोण प्रस्तुत किया है। उन्होंने 'साहित्यिक इतिहास क्यों और कैसे?' निबंध में हिंदी साहित्य के इतिहास को फिर से लिखे जाने की आवश्यकता बताई है। 'इतिहास और आलोचना' के अंतर्गत उन्होंने 'व्यापकता और गहराई' जैसे महत्वपूर्ण काव्य-मूल्यों को परस्पर सहयोगी बताने का मौलिक साहस दिखाया जबकि इन दोनों को परस्पर विरोधी गुणों के रूप में स्वीकार किया गया था। देखा जाय तो नामवर सिंह प्रगतिशील आलोचना की ऐसी पद्धति विकसित करते हैं जो रामविलास शर्मा की स्थापनाओं से जूझते हुए उसका विस्तार भी करती है।

3.3.7 राजेंद्र यादव

- साहित्य के माध्यम से समाज की जटिलताओं और मानवता के विभिन्न पहलुओं को समझाया।

राजेंद्र यादव यह मानते थे कि हिंदी कहानी, कहानी की मूल विशेषता कहानीपन को भुलाकर अधिक से अधिक वर्णनात्मक होती जा रही है। इस व्यतिक्रम से कहानी ने न केवल अपने बंधे-बंधाए पाठक खोए हैं, बल्कि उसकी कसावट एवं प्रभाव में भी कमी आई है। प्रतिष्ठित कहानी-पत्रिका के संपादक की यह निराशा विचारणीय थी। इसके बावजूद 'हंस' अपनी सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रिका बनी थी, तो केवल अपने लेखों तथा उनसे भी अधिक राजेंद्र जी के संपादकीय के नाते उसमें ज्वलंत मुद्दों को पूरी बेबाकी और लेखकीय निष्ठा के साथ उठाते थे। जिस सामाजिक न्याय के प्रति 'हंस' समर्पित था, उसका ठोस संवैधानिक आधार था। एक संवैधानिक प्रतिबद्धता की ओर से आंखें मोड़ लेने का एकमात्र हथियार सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का हो सकता था। इसलिए जब-जब 'हंस' और राजेंद्र यादव पर उंगली उठी, मामला 'संस्कृति पर खतरा' बताया गया। इसके बावजूद उनके नेतृत्व में 'हंस' दमित अस्मिताओं के उभार के लिए निरंतर पहल करता रहा।स्त्री और दलित स्वाभिमान की लड़ाई को उसने हिंदी पट्टी पर सबसे बड़ा मंच दिया।राजेन्द्र यादव न केवल एक प्रख्यात कथाकार थे, बल्कि उन्होंने कथा समीक्षा में भी अपनी गहरी सोच और आलोचनात्मक दृष्टिकोण से साहित्य की समझ को विस्तार दिया। उनका आलोचनात्मक दृष्टिकोण सामाजिक, राजनीतिक, और मानसिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए गहरे साहित्यिक विश्लेषण पर आधारित था। राजेन्द्र यादव की कथा समीक्षा का उद्देश्य केवल कृतियों का गुणात्मक मूल्यांकन करना नहीं था, बल्कि उन्होंने साहित्य के माध्यम से समाज की जटिलताओं और मानवता के विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास किया। उनकी आलोचना में एक सामाजिक उद्देश्य और व्यक्तिगत संवेदनाओं का मिश्रण था।

3.3.7.1 राजेन्द्र यादव की कथा समीक्षा के प्रमुख विचार

1. **समाज की आलोचना और साहित्य**

राजेन्द्र यादव का मानना था कि कथा साहित्य केवल कला का रूप नहीं, बल्कि समाज का आईना भी है। वे साहित्य को समाज की वर्तमान वास्तविकताओं से जोड़ा करते थे। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि लेखक का काम समाज की कमजोरियों और विसंगतियों को सामने लाना है।

2. **नई कहानी के दृष्टिकोण की आलोचना**

राजेन्द्र यादव ने नई कहानी को एक सशक्त आंदोलन के रूप में स्वीकार किया, जो पारंपरिक कहानी लेखन से अलग था। नई कहानी ने वास्तविकता और सामाजिक यथार्थवाद की ओर एक नया कदम बढ़ाया था। हालांकि, उन्होंने नई कहानी की आलोचना भी की। उनका कहना था कि नई कहानी में पात्रों का आंतरिक द्वंद्व और भावनात्मक संघर्ष बहुत अधिक था, लेकिन कभी-कभी वह सामाजिक संदर्भ और समाज की परिस्थितियों से दूर हो जाते थे।

▶ वास्तविकता और सामाजिक यथार्थवाद की ओर एक नया कदम बढ़ाया।

3. **मानवीय संवेदनाओं और वास्तविकता का समावेश**

राजेन्द्र यादव की कथा समीक्षा में मानवीय संवेदनाओं को विशेष स्थान दिया गया है। वे मानते थे कि साहित्य का मुख्य उद्देश्य केवल सामाजिक या राजनीतिक संदेश देना नहीं होता, बल्कि पाठक को मानवीय दृष्टिकोण से जोड़ना भी होता है। उन्होंने यह देखा कि बहुत से लेखक समाज की समस्याओं का चित्रण करते हुए व्यक्तिगत संवेदनाओं और पात्रों के मनोविज्ञान से हट जाते हैं।

4. **कहानी में शिल्प और संरचना**

यादव की कथा समीक्षा में कहानी के शिल्प और संरचना पर भी काफी जोर दिया गया है। उन्होंने यह कहा कि कहानी में संरचना और प्रस्तुति का तरीका केवल मनोरंजन का नहीं, बल्कि पाठक को समाज, संस्कृति और अस्तित्व के गहरे पहलुओं की ओर सोचने के लिए प्रेरित करने का होना चाहिए।

3.3.8 भीष्म साहनी

भीष्म साहनी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद के नए कहानीकारों में अपना सर्वप्रमुख स्थान रखते हैं। भीष्म साहनी ने समाज से नवीन विषयों को ग्रहण किया और उन पर सृजन किया। यही कारण है कि वर्तमान समाज का कटु यथार्थवादी चित्र उनकी कहानियों में स्पष्टतः परिलक्षित होता है। भीष्म साहनी के सभी पात्र आज के प्राणी हैं। वे जीते जागते सजीव एवं विश्वसनीय हैं। इनके चरित्र कहीं-कहीं वर्ग का भी प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाई पड़ते हैं। इन चरित्रों का अपना व्यक्तित्व होता है, जिसे कहानीकार बिना किसी साधन का सहारा लिए ही सीधे सादे ढंग से मुखर कर देता है। इन चरित्रों में आज का बदलता हुआ पुरुष वर्ग भी है। यथार्थप्रिय होने के कारण वे वातावरण का ज्यों का त्यों वास्तविक रूप में प्रस्तुत कर देते हैं। आज का सब कुछ बहा ले जाने वाला तथाकथित उन्मेषपरक वातावरण इनके व्यंग्य का सबसे बड़ा लक्ष्य है। उनकी भाषा में सरल बोलचाल के शब्दों का प्रयुक्त होते हैं। यही कारण है कि उसमें अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी आदि भाषाओं के शब्द भी प्रयोग होते हैं।

▶ वर्तमान समाज का कटु यथार्थवादी चित्र

वर्तमानकालीन यह नगरीय जीवन का यथार्थ चित्रण, चहुँ ओर व्याप्त कुपरम्पराओं और नयी सभ्यता से उत्पन्न विसंगतियों पर करुणापरक व्यंग्य आदि भी उन्होने अपनी

▶ साहित्य का उद्देश्य मानवता की पहचान और संवेदनाओं का उत्थान

कहानियों का उद्देश्य बनाया है। साहनी की आलोचना दृष्टि विशेष रूप से नई कहानी आंदोलन और सामाजिक यथार्थवाद से प्रभावित थी, लेकिन उन्होंने लेखन के शिल्प और मानवीय दृष्टिकोण पर भी जोर दिया। वे मानते थे कि साहित्य का मुख्य उद्देश्य केवल समाज के सच को बयान करना नहीं, बल्कि उसमें मानवता की पहचान और संवेदनाओं का उत्थान भी करना चाहिए।

3.3.8.1भीष्म साहनी की कहानी आलोचना दृष्टि

1. **सामाजिक यथार्थवाद और समाज की विसंगतियाँ**

भीष्म साहनी ने अपने लेखन में सामाजिक यथार्थवाद पर गहरी टिप्पणी की। उनकी आलोचना और कहानियाँ समाज की वास्तविकताओं, खासकर सामाजिक असमानताओं, आर्थिक विषमताओं, और मानवाधिकारों के मुद्दों पर आधारित थीं। वे मानते थे कि साहित्यकार का कर्तव्य है कि वह समाज की सच्चाइयों को साफ और स्पष्ट रूप से उजागर करें, ताकि समाज में बदलाव के लिए जागरूकता उत्पन्न हो सके।

2. **मानवता और संवेदनाएँ**

भीष्म साहनी की आलोचना में मानवीय संवेदनाओं और भावनाओं को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। उनके लिए साहित्य का असली उद्देश्य मानवता को अभिव्यक्त करना था और समाज के हर व्यक्ति के भीतर की मनुष्यता को उजागर करना।

3. **कहानी का शिल्प और संरचना**

भीष्म साहनी का शिल्प सरल, प्रभावी और कला के अनुरूप था। वे मानते थे कि कहानी का शिल्प ही उसे सशक्त और प्रभावी बनाता है। उनकी कहानियों में संवेदनाओं और कथ्य का प्रस्तुति तरीका बहुत सीधा और प्रभावी था।

4. **धर्म, संस्कृति और राजनीति**

▶ सच्चाइयों को साफ और स्पष्ट रूप से उजागर करना

भीष्म साहनी ने अपनी कहानियों में धर्म, संस्कृति और राजनीति के प्रभावों का भी गहरा विश्लेषण किया। वे मानते थे कि धर्म और राजनीति मानवता की दिशा को विकृत कर सकते हैं, और साहित्य को इस विकृति का विरोध करना चाहिए। उनके अनुसार, धर्म और संस्कृति की सामाजिक संदर्भ में समाज में असमानता और शोषण के कारणों के रूप में आलोचना की जानी चाहिए।

5. **सामाजिक बदलाव और साहित्य**

भीष्म साहनी का मानना था कि साहित्य को सामाजिक बदलाव के लिए प्रेरित करना चाहिए। वे साहित्य को आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी माध्यम मानते थे।

3.3.9 कृष्णदत्त पालीवाल

'पालीवाल जी की आलोचना में अतिव्यापकता और अध्यापकीय प्रभाव' है।इससे आलोचक की गतिशीलता का पता चलता है और उसके पास अपने छात्रों से संवाद का जो अवसर है, जिससे विशुद्ध अलोचक वंचित है, उसका रचनात्मक उपयोग करने की उत्कंठा है। कृष्णदत्त पालीवाल को इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो, वे भक्तिकाल से लेकर उत्तर-आधुनिकतावाद तक की रचनाशीलता पर विचार करते हुए अपने आलोचना-वृत्त का निर्माण करते हैं। उनका यह आलोचना-वृत्त सामाजिक इतिहास, द्वंद्ववादी भौतिकवाद के द्वंद्व, मनोविश्लेषण, भारतीय और पश्चिमी काव्यशास्त्र की स्थापनाओं, कविता और गद्य की अधुनातन कसौटियों, भाषा-वैधानिक विन्यासों, नारी और दलित विमर्श की प्रतिषाओं और चिह्न-शास्त्रीय उठा-पठक से निर्मित हुआ है। इस आलोचना-वृत्त में वाल्मीकि, व्यास, पाणिनि, भरत, मम्मट, विश्वनाथ, आनंदवर्धन, प्लेटो, अरस्तू, लोंजाइनस, कॉलरिज, टी.एस. एलियटआदि के स्वर गूँजते हैं। इसमें बुद्ध, गाँधी, मार्क्स, अंबेडकर, जेपी, लोहिया का भास्वर नाद भी सुनाई देता है। अपनी साहित्यिक परंपरा का संदर्भ और स्वर तो मुखर है ही। पालीवाल जी का आलोचना-वृत्त पाठ और परंपरा की रेखाओं से उभरता है हिंदी की आलोचना परंपरा में तीन प्रकार के आलोचक मिलते हैं-विशुद्ध, रचनाकार, प्राध्यापक। पालीवाल जी प्राध्यापक आलोचक थे। महादेवी वर्मा की रचना-प्रक्रिया, मध्ययुगीन हिंदी-महाकाव्यों में नाटक, नया सृजन : नया बोध, यूनानी और रोमी काव्यशास्त्र, सर्वेश्वर और उनकी कविता, भवानी प्रसाद मिश्र का काव्य-संसार, आचार्य रामचंद शुक्ल का चिंतन-जगत, स्मृति-बिंब, हिंदी की सैद्धांतिक समीक्षा पर पाश्चात्य सैद्धांतिक समीक्षा का प्रभाव, अंतरंग साक्षात्कार, आधुनिक भारतीय नई कविता, समय से संवाद, सुमित्रानंदन पंत, डॉ. अंबेडकर और समाज व्यवस्था, सीय राममय सब जग जानी, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, सृजन की नई भूमिका, हिंदी-आलोचना के नए वैचारिक सरोकार, गिरिजाकुमार माथुर, जापान में कुछ दिन, डॉ. अंबेडकर भारतीय समाज और दलित साहित्य आदि आपकी प्रमुख रचनाएं है।

▶ पालीवाल जी प्राध्यापक आलोचक थे

उनके लेखन में नई कहानी आंदोलन की विशेषताएँ पाई जाती हैं, और उनकी आलोचना दृष्टि भी समाज और व्यक्ति के रिश्ते को गंभीरता से देखने की कोशिश करती है।

3.3.9.1 कृष्णदत्त पालीवाल की कथा समीक्षा और आलोचना दृष्टि

1. **सामाजिक यथार्थवाद और जीवन की जटिलताएँ**

पालीवाल की कहानियाँ सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित होती हैं, जो समाज की वास्तविकताओं, दुखों और संघर्षों को बिना किसी अतिशयोक्ति के दिखाती हैं। उनकी कहानियों में पारिवारिक संघर्ष, गरीबी, शोषण और मानवाधिकारों की समस्याओं को प्रमुखता से दिखाया गया है। वे मानते थे कि साहित्य का उद्देश्य केवल आंतरिक भावनाओं या कल्पना का चित्रण नहीं होना चाहिए, बल्कि सामाजिक सच्चाईयों को

▶ पालीवाल की कहानियाँ सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित होती हैं

न्यायपूर्ण तरीके से सामने लाना चाहिए।

2. **मानवता और संवेदनाएँ**

कृष्णदत्त पालीवाल की आलोचना में मानवीय संवेदनाएँ और भावनाओं को अहमियत दी गई है। उनकी कहानियों में पात्रों के बीच के संबंधों और भीतर के द्वंद्व का गहरा चित्रण किया जाता है। पालीवाल के अनुसार, कहानी का उद्देश्य केवल सामाजिक व्याख्यान देना नहीं, बल्कि व्यक्तिगत संवेदनाओं और जीवन के अनकहे पहलुओं को उजागर करना है।

3. **प्रस्तुतिकरण और शिल्प**

कृष्णदत्त पालीवाल ने अपने लेखन में कहानी के शिल्प को एक महत्वपूर्ण साधन माना है। उनकी कहानियाँ सामान्यतः साधारण भाषा में होती हैं, लेकिन उनमें गहरी संवेदनशीलता और दृश्यात्मकता होती है।

4. **व्यक्तिगत और सामाजिक संघर्षों के बीच संतुलन**

▶ सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित कहानियाँ

पालीवाल की आलोचना दृष्टि में व्यक्तिगत संघर्ष और सामाजिक संघर्ष के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। उनका कहना था कि साहित्य केवल व्यक्तिगत जीवन और भीतर के द्वंद्व पर आधारित नहीं हो सकता, बल्कि उसे समाज के बड़े सामाजिक संकटों और सामाजिक असमानताओं का भी चित्रण करना चाहिए।

5. **शक्तिशाली कथानक और पात्र**

कृष्णदत्त पालीवाल के अनुसार, किसी भी अच्छे साहित्य की पहचान इसके पात्रों और कथानक में छिपी होती है। वे मानते थे कि पात्रों की वास्तविकता और सजीवता ही कथा को प्रभावशाली बनाती है।

6. **नारी का स्थान और संघर्ष:**

पालीवाल की कथा समीक्षा में नारी के स्थान पर भी विचार किया गया है। उनकी कहानियों में नारी पात्रों के अधिकार, संघर्ष और सामाजिक भूमिका पर ज़ोर दिया गया है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

कहानी-समीक्षा एक ऐसी विधा है जिसमें हिंदी कहानी की गहराई से आलोचना की जाती है। इसमें कहानी के पात्रों, उनके संघर्षों, और उनके द्वारा प्रस्तुत समाजिक और मानसिक समस्याओं का विश्लेषण किया जाता है। शुरुआत में हिंदी कहानी की आलोचना ने अन्य साहित्यिक विधाओं जैसे काव्य, नाटक और समाजशास्त्र से प्रतिमान लिया। कहानी का उद्देश्य जीवन के यथार्थ को चित्रित करना होता है, जो इसे अन्य विधाओं से अलग करता है।

कहानी का निर्माण एक सटीक और कसे हुए ढांचे में किया जाता है, जिसमें हर शब्द और वाक्य का विशेष महत्व होता है। यह विधा जीवन के छोटे, महत्वपूर्ण क्षणों को चित्रित करके उनके गहरे अर्थ को उजागर करती है।आपने जो पाठ प्रस्तुत किया है, उसमें हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखकों और आलोचकों के दृष्टिकोणों का वर्णन किया गया है। इसमें निर्मल वर्मा, नामवर सिंह, राजेंद्र यादव, भीष्म साहनी, और कृष्णदत्त पालीवाल के आलोचनात्मक दृष्टिकोणों और लेखन शैलियों पर चर्चा की गई है। इन सभी आलोचकों और लेखकों की दृष्टि हिंदी साहित्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, और मानसिक पहलुओं को समझने में सहायक है। उनका दृष्टिकोण साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज और मानवता की गहरी समझ देने वाला माध्यम मानता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. हिंदी कहानी की आलोचना में अन्य साहित्यिक विधाओं से कौन से प्रतिमान लिए गए हैं?
2. नई कहानी आंदोलन में कमलेश्वर का दृष्टिकोण क्या था?
3. मोहन राकेश के साहित्यिक दृष्टिकोण को समझाइए।
4. 'सलाईस ऑफ लाइफ' शब्द का क्या अर्थ है और यह कहानी में कैसे लागू होता है?
5. नामवर सिंह की समीक्षा संबंधी विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
6. प्रतीक और बिंब में क्या अंतर है?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श - डॉ. सुधीश पचौरी
2. विभक्ति और विखंडन - डॉ. सुधीश पचौरी
3. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार - कृष्णदत्त पालीवाल
4. हिंदी समीक्षा: स्रोत एवं सूत्रधार - सत्यदेव मिश्र

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. Contemporary Literary and Cultural Theory -Pramod K Nayar
2. आलोचना से आगे - डॉ. सुधीश पचौरी
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना - रामविलास ार्मा
4. हिंदी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 4

नई समीक्षा-मिथक, फंतासी, कल्पना, प्रतीक, बिंब

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- नई समीक्षा की बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- मिथक को समझता है
- फंतासी से अवगत होता है
- कल्पना, प्रतीक आदि के बारे में समझता है

Background / पृष्ठभूमि

नई समीक्षा की शुरुआत 20वीं सदी के प्रारंभ में हुई, जब आलोचकों ने साहित्यिक कृतियों का विश्लेषण करते समय उनके बाहरी संदर्भों को अनदेखा किया और केवल काव्य के आंतरिक तत्त्वों पर ध्यान केंद्रित किया। इसका उद्देश्य रचनाओं के शिल्प, प्रतीक, रूपक और संरचना के माध्यम से साहित्यिक कृतियों को समझना था। इसके प्रमुख आलोचक सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गिरिजा कुमार माथुर, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती, नलिन विलोचन शर्मा, और अन्य महत्वपूर्ण आलोचक थे। इस धारा ने साहित्य के आंतरिक विश्लेषण के नए मूल्य विकसित किए, जिससे आलोचना की नई प्रणाली और भाषा का विकास हुआ।

Keywords / मुख्य बिन्दु

माइथोस', आख्यामूलक रचना, फैण्टेसिया, इमेज

Discussion / चर्चा

3.4.1 नयी समीक्षा

इस समीक्षा के अंतर्गत सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गिरिजा कुमार माथुर, शमशेर बहादुर सिंह, धर्मवीर भारती, नलिन विलोचन शर्मा, नेमिचंद्र जैन, लक्ष्मीकांत वर्मा इत्यादि प्रमुख हैं। इन तमाम आलोचकों के साथ-साथ कई अन्य

आलोचक भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं डॉ. जगदीश गुप्त, डॉ. विजयदेव नारायण साही, डॉ. शंभुनाथ सिंह, डॉ. बच्चन सिंह, डॉ. शिवप्रसाद सिंह, डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त, डॉ. देवीशंकर अवस्थी, डॉ. इंद्रनाथ मदान, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, डॉ. रमेश कुंतल मेघ आदि। इन नए आलोचकों द्वारा हिंदी आलोचना में साहित्य को जांचने परखने के लिए नए मूल्य विकसित हुए विश्लेषण की नयी प्रणाली बनी, नयी भाषा का विकास हुआ। नई समीक्षा (New Criticism) 20वीं सदी की एक प्रमुख साहित्यिक आलोचनात्मक धारा थी, जो विशेष रूप से अमेरिका और इंग्लैंड में प्रचलित हुई। इसके प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार हैं:

1. **काव्य और आत्मनिर्भरता**

नई समीक्षा के अनुसार, काव्य या साहित्यिक रचनाएँ अपने भीतर ही अर्थ और मूल्य रखती हैं। आलोचना के दौरान रचनाओं के बाहरी संदर्भ, जैसे लेखक की जीवनी, सामाजिक संदर्भ या ऐतिहासिक परिस्थितियों को नजरअंदाज किया जाता है। इसका उद्देश्य केवल पाठ्य और उसके भीतर के अर्थ पर ध्यान केंद्रित करना होता है।

2. **आंतरिक संरचना**

नई समीक्षा यह मानती है कि किसी काव्य की पूरी संरचना उसकी छुपी हुई अर्थवत्ता को प्रकट करने में मदद करती है। शिल्प, रूपक, प्रतीक, ध्वनि, लय आदि रूप से रचना के अर्थ को समझा जाता है।

3. **पाठक की भूमिका**

▶ नई समीक्षा के प्रमुख सिद्धांत

नई समीक्षा के अनुसार, आलोचक या पाठक का मुख्य कार्य रचना के भीतर के तत्वों को विश्लेषण करना और यह समझना है कि लेखक ने शब्दों और संरचनाओं का कैसे उपयोग किया है।

4. **एकात्मक काव्य**

नई समीक्षा का यह मानना था कि किसी काव्य की रचनात्मकता तभी पूरी होती है जब उसका प्रत्येक तत्व एक दूसरे से संबंधित हो। रचना का कोई भी हिस्सा असंगत या अव्याख्यायित नहीं होना चाहिए।

5. **अर्थ और अस्पष्टता**

नई समीक्षा में काव्य के अर्थ में बहुआयामिता को महत्वपूर्ण माना गया। इसका उद्देश्य यह था कि काव्य रचनाएँ अपने पाठक को विचार करने के लिए कई विकल्प देती हैं, और उन विकल्पों के माध्यम से कविता का गूढ़ अर्थ सामने आता है।

सारांश में, नई समीक्षा का मुख्य उद्देश्य यह था कि साहित्यिक कृति के भीतर ही उसके सभी अर्थ और उसकी सुंदरता छिपी होती है, और आलोचना में बाहरी संदर्भों को अनदेखा कर काव्य के भीतर के तत्त्वों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

3.4.2 मिथक

'मिथक' ग्रीक शब्द 'माइथोस' (Mythos) से बना है जिसका अर्थ है- 'मुख से निकला हुआ'। इसका सम्बन्ध सर्वप्रथम मौखिक रूप से कही जाने वाली कथाओं से बना। अरस्तू ने इसका प्रयोग कथानक, आख्यामूलक रचना या मनगढ़त कथा के लिए किया है। 17वीं-18वीं शताब्दी में मिथक का अभिप्राय सत्य से परे कपोल कल्पित कथाओं से था, लेकिन आज साहित्य में मिथकों के प्रयोग से यह स्पष्ट है कि वे मान्-व संस्कृति की विरासत हैं। सामूहिक अवचेतन से निर्मित जातीय स्मृतियों के चिह्न हैं।मिथक सर्जनात्मक कल्पना की कलात्मक सृष्टि है। मिथक किसी जाति अथवा समुदाय की रागात्मक चेष्टाओं का कथा रूप में प्रकाशन मात्र है। वह जनसाधारण के विश्वास और लोककथा की परम्परा की वस्तु है। मिथक के दो रूप हैं।

- ▶ मिथक सर्जनात्मक कल्पना की कलात्मक सृष्टि है

1. मौलिक अर्थात परम्परा से चले आ रहे,
2. कल्पना द्वारा रचित।

3.4.2.1 महत्व

भारतीय प्राचीन साहित्य में पुराणों की कथाएँ मिथक का ही दूसरा रूप हैं। शिव का विषपान, कामदेव को भस्म करना, गंगा का पृथ्वी पर उतरना आदि प्रसंग मिथक के ही प्रयोग हैं। जिन्हें रामायण, महाभारत तथा परवर्ती संस्कृत साहित्य में देखा जा सकता है। पाश्चात्य साहित्य में होमर का 'इलियट' और 'ओडिसी', मिल्टन का 'पैराडाइजलास्ट', शेक्सीपियर का 'किंगलियार' तथा 'हेमलेट' इसके उदाहरण हैं क्ष हिन्दी साहित्य में 'प्रसाद' की 'कामायनी' तथा धर्मवीर भारती का 'अन्धायुग' मिथक प्रयोग की विशिष्ट रचनाएँ हैं। मिथक साहित्य में सरसता लाते हैं। वहीं गहन आदर्शों और विचारों की अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम भी हैं।वर्तमान साहित्य में मिथक रचना को अलंकृत करने में कम अवचेतन को प्रकाश में लाने की अनुभूति को प्रत्यक्ष करने का कलात्मक साधन बनता जा रहा है।

- ▶ हिन्दी साहित्य में 'प्रसाद' की 'कामायनी' तथा धर्मवीर भारती का 'अन्धायुग' मिथक प्रयोग की विशिष्ट रचनाएँ हैं

3.4.3 फंतासी

अंग्रेजी का 'फेंटेसी' शब्द ग्रीक भाषा के 'फैण्टेसिया' से उत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है- अवास्तविक या अमूर्त को दृश्य बनाना या कल्पनात्मक दृश्यों का बिम्बात्मक चित्रण। विश्व साहित्य कोश के अनुसार, 'फैण्टेसी की क्रियाशीलता में ऐसा वातावरण या चरित्र उपस्थित होते हैं जो मनुष्य जीवन की सामान्य परिस्थितियों में असम्भव माने जाते हैं'। फ्रायड के अनुसार फैण्टेसी की प्रेरक शक्तियों में अतृप्त इच्छाओं का प्रेरक स्थान है। फ्रायड का विश्वास था कि फैण्टेसी में दिवास्वप्नों को कवि कलात्मक रूप प्रदान करता है। एडलर तथा युंग ने भी फैण्टेसी पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। युंग के अनुसार फैण्टेसी मुक्त साहचर्य है और इसमें स्वच्छन्दतापूर्वक असंगत बिम्ब एकत्र होते हैं। उपर्युक्त मनोवैज्ञानिकों ने फैण्टेसी को एक काल्पनिक और स्वायत्त क्षेत्र बताते

- ▶ फेंटेसी हमारे विचार और चिन्तन से प्रभावित और नियंत्रित है

हुए उसकी तुलना स्वप्न से की है, किन्तु क्रिस्टोफर काडविल का मानना है कि स्वप्न की भाँति फैण्टेसी का कोई स्वायत्त संसार नहीं होता, अपितु स्वप्नों में जो विचार या भावनाएँ आती हैं, उनका सम्बन्ध बाह्य जगत से अवश्य होता है। अशोक चक्रधर का यह कथन इसी तथ्य को समर्थन करता है- 'फैंटेसी का न केवल सामाजिक रूप होता है, बल्कि वह बहुत दूर तक हमारे विचार और चिन्तन से प्रभावित और नियंत्रित होती है।'

फैंटेसी के संदर्भ में मुक्तिबोध का दृष्टिकोण यथार्थ पर आधारित है। उनकी प्रमुख स्थापनाएँ इस प्रकार हैं-

1. फैंटेसी में एक भावात्मक उद्देश्य समाया रहता है। उसमें एक संवेदनात्मक दिशा रहती है। यह दिशा और उद्देश्य फैण्टेसी का प्राण है।
2. फैंटेसी के रूप में जो कथा प्रस्तुत होती है और कथा के अन्तर्गत जो पात्र, चरित्र और कार्य प्रस्तुत होते हैं, वे सब प्रतीक होते हैं- वास्तविक जीवन तथ्यों के।
3. फैंटेसी में कलाकार का व्यक्तित्व प्राथमिक है। फैण्टेसी में उसके इच्छित विश्वासों का सन्निवेश हो जाता है और व्यक्ति की कुछ मूलभूत कमजोरियों या कमियों की भी मनोवैज्ञानिक मानसिक पूर्ति हो जाती है।मुक्तिबोध की कविता में फैंटेसी का प्रयोग एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति के लिए हुआ है। वहाँ पर फैंटेसी केवल भावावादी शिल्प के रूप में ही नहीं, बल्कि यथार्थ के विभिन्न आयामों को व्यक्त करती है।

▶ फैंटेसी भाववादी शिल्प और यथार्थ के विभिन्न आयामों को व्यक्त करती है।

3.4.4 कल्पना

संस्कृत काव्याचार्यों ने कल्पना का सीधा विवेचन न करके 'नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा' अथवा 'अपूर्व वस्तु निर्माण क्षमा प्रज्ञा' को ही कल्पना कहा है। कालरिज के अनुसार, 'कल्पना वह शक्ति है जिसके द्वारा मस्तिष्क में बिम्बों का निर्माण होता है'। रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में, 'जो वस्तु हमसे अलग है, हमसे दूर प्रतीति होती है, उसकी मूर्ति मन में लाकर उसके सामीप्य का अनुभव करना उपासना है। साहित्य वाले इसे भावना कहते हैं और आजकल के लोग कल्पना। जिस प्रकार भक्ति के लिए ध्यान और उपासना आवश्यक है, उसी प्रकार भावों के प्रवर्तन के लिए भावना या कल्पना अपेक्षित है। स्पष्ट है कि साहित्य में कल्पना का विशिष्ट महत्व है। रामचन्द्र शुक्ल ने कल्पना के दो रूप माने हैं -

▶ कालरिज - 'कल्पना वह शक्ति है जिसके द्वारा मस्तिष्क में बिम्बों का निर्माण होता है।'

(अ) विधायक कल्पना अर्थात कवि की कल्पना प्रतिभा।

(आ) ग्राहक कल्पना - अर्थात कवि कल्पना द्वारा उभारे बिम्ब को ग्रहण करने की पाठक की सामर्थ्य।

3.4.4.1 कल्पना का महत्व

काव्य में कल्पना का अनिवार्य महत्व है। क्रोचे के अनुसार, 'कल्पना के माध्यम से ही मानव सौन्दर्यानुभूति करता है'। यह एक ऐसी विधायिनी एवं सृजनात्मक शक्ति है

▶ क्रोचे - 'कल्पना के माध्यम से ही मानव सौन्दर्यानुभूति करता है'।

जो मूर्त को अमूर्त कर देती है। भाषा-शैली को अधिक व्यंजक, मार्मिक और चमत्कारपूर्ण बनाने में कल्पना ही कार्य करती है।

3.4.5 प्रतीक

प्रतीक शब्द का अर्थ है- संकेत चिह्न, प्रतिरूप आदि। किसी अदृश्य वस्तु या भाव को स्पष्ट करने के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, उसे ही प्रतीक कहते हैं। प्रतीक में नए अर्थों की उद्भावना भी सम्भव होती है। इस प्रकार 'प्रतीयते अनेन इति प्रतीके' अर्थात जिससे किसी वस्तु की प्रतीति हो, वही प्रतीक है। जैसे 'काहे री नलिनी तू कुम्हलानी' पंक्ति में 'नलिनी' (कमल) जीवात्मा का प्रतीक है। डॉ. भगीरथ मिश्र की प्रतीक की परिभाषा में उसकी विशेषता भी स्पष्ट हो जाती है। 'अपने रूप, गुण, कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत भाव, वस्तु, विचार, क्रिया-कलाप, देश जाति या संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है, वह प्रतीक कहलाता है। 'स्पष्ट है कि प्रतीक प्रत्येक स्थिति में अन्य अर्थ की व्यंजना करता है, जो प्रत्यक्ष अनुभव से नितान्त भिन्न होता है। पाश्चात्य काव्यशास्त्र में भी प्रतीक के संदर्भ में पर्याप्त चिन्तन मिलता है। आर्चिबल्ड मैक्लिश के अनुसार, 'एक वस्तु के लिए दूसरी का प्रयोग किया जाना प्रतीक नहीं होता, प्रतीक होता है दोनों के सम्बन्ध को केन्द्र में ला पाना।' (A Symbol is always is focus of relationship) पी. गार्डनर का कहना है, 'प्रतीक उसे कहते हैं जो देखने या सुनने में किसी विचार, भावना या अनुभव को व्यक्त करता है, जो केवल बुद्धि या कल्पना से ग्राह्य हो, उसकी ऐसी व्याख्या कर देना कि आँखों के सामने आ जाए।'

▶ किसी अदृश्य वस्तु या भाव को स्पष्ट करने के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वही प्रतीक है।

3.4.5.1 प्रतीकों का वर्गीकरण

प्रमुख प्रतीक इस प्रकार हैं-

▶ प्रमुख प्रतीकः भावोत्प्रेरक, विचारोत्पादक, वैयक्तिक, परम्परागत मौलिक, प्राकृतिक

1. भावोत्प्रेरक प्रतीक - कमल, चन्द्रमा।
2. विचारोत्पादक प्रतीक - रावण, जयचन्द्र।
3. वैयक्तिक प्रतीक - माली, कलियाँ, पराग, मधु, रेत।
4. परम्परागत प्रतीक - बिन्दी, सिन्दूर, राखी, पगड़ी।
5. मौलिक प्रतीक - जैसे नई कविता के अनेक प्रतीक मौलिक हैं।
6. प्राकृतिक प्रतीक - प्रकृति से लिए गए समस्त प्रतीक।

3.4.6 बिम्ब

'बिम्ब' अंग्रेजी शब्द 'इमेज' (Image) का रूपान्तर है। भारतीय काव्यशास्त्र में बिम्ब सम्बन्धी चिन्तन सादृश्य विधान के रूप में मिलता है। वस्तुतः 'बिम्ब' और 'बिम्बवाद' पाश्चात्य स्वच्छन्दतावादी कवियों की देन है जिसके प्रवर्तक टी. ई. ह्यूम हैं. उनके

अनुसार, 'यदि कल्पना की मूल शक्ति है तो उस शक्ति का मुख्य कार्य बिम्ब विधान है'। कालरिज ने बिम्ब को 'शब्दों द्वारा निर्मित ऐन्द्रिक चित्र' माना है जो प्रायः विशेषण, उपमा, रूपक आदि पर आधारित होता है तथा जो कवि के तीव्र भावावेश को पाठक तक सम्प्रेषित करता है। सी. डी. लेविस बिम्ब को 'भावात्मक शब्द चित्र' मानते हैं। इस प्रकार 'बिम्ब' किसी अमूर्त का शब्द निर्मित भावचित्र है।

बिम्ब में तीन प्रमुख तत्व हैं -

1. कल्पना
2. भाव
3. ऐन्द्रिकता

▶ 'बिम्ब' अंग्रेज़ी शब्द 'इमेज' (Image) का रूपान्तर है।

कल्पना के द्वारा बिंबों का निर्माण होता है जो किसी अमूर्त भाव या विचार को इस प्रकार सजीव मूर्त रूप देते हैं कि उसे हम अपनी इन्द्रियों के द्वारा अनुभव कर सकते हैं। बिम्ब में ऐन्द्रिकता का विशेष महत्व है।

3.4.6.1 बिम्ब का महत्व

▶ भावों और अनुभूतियों के मूर्त चित्रण अथवा बिम्ब विधान से रसानुभूति की प्रक्रिया सरल और प्रभावी ढंग से होती है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में, 'कविता में अर्थग्रहण मात्र से काम नहीं चलता, विम्ब ग्रहण भी अपेक्षित होता है'। बिंब ग्रहण के माध्यम से सहृदय पाठक रसानुभूति कर सकता है। बिम्ब का महत्व चित्रात्मक भाषा में है। सुमित्रानन्दन पंत भी कविता के लिए चित्र भाषा की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए कहते हैं, 'उसके शब्द सरवर होने चाहिए जो बोलते हों, जो अपने भाव को अपनी ही ध्वनि में, आँखों के सामने चित्रित कर सकें, जो झंकार में चित्र, चित्र में झंकार हों।' वस्तुतः चित्र भाषा से ही चित्र या मूर्त भाव-चित्र उभरता है और यह कार्य काव्य में बिम्ब द्वारा ही सम्भव होता है। इतना ही नहीं रसानुभूति में भी बिम्बों की भूमिका महत्वपूर्ण है। केवल अर्थग्रहण से ही रसानुभूति नहीं होती, बल्कि भावों और अनुभूतियों के मूर्त चित्रण अर्थात बिम्ब विधान से रसानुभूति की प्रक्रिया सरल और प्रभावी ढंग से होती है। कवि अपने हृदय के भावों को बिम्ब के माध्यम से मूर्त रूप देता है। इससे कवि की रसानुभूति बिम्बों के द्वारा सम्प्रेषित होती है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'नई समीक्षा' (New Criticism) 20वीं शताब्दी की एक प्रमुख साहित्यिक आलोचनात्मक धारा थी, जो विशेष रूप से अमेरिका और इंग्लैंड में विकसित हुई। इस सिद्धांत के अनुसार, साहित्यिक रचनाओं का मूल्य और अर्थ केवल रचनाओं के भीतर निहित होते हैं, न कि उनके बाहरी संदर्भों (जैसे लेखक का जीवन, समाज या ऐतिहासिक पृष्ठभूमि)। नई समीक्षा साहित्य के भीतर शिल्प, रूपक, प्रतीक और संरचना पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके साथ-साथ 'मिथक', 'फैंटेसी', 'कल्पना', 'प्रतीक', और 'बिम्ब' जैसे तत्वों का प्रयोग साहित्य में गहरे अर्थ और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य की गद्य विधाओं में आलोचना एक प्रमुख विधा है। समकालीन हिंदी आलोचना का उद्देश्य केवल साहित्यिक कृतियों का मूल्यांकन करना नहीं है, बल्कि समाज, संस्कृति, राजनीति और साहित्य के बीच के जटिल संबंधों को समझना है। यह आलोचना पाठक को एक नया दृष्टिकोण देने का प्रयास करती है, जो केवल कला के बजाय साहित्य की सामाजिक और राजनीतिक भूमिका को भी उजागर करती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. नई समीक्षा के सिद्धांतों पर चर्चा करें और उनके महत्व को स्पष्ट करें।
2. मिथक का अर्थ और उसके प्रयोग को साहित्यिक दृष्टिकोण से समझाएँ।
3. फैंटेसी और कल्पना के बीच अंतर बताएं और इनका साहित्यिक रचनाओं में महत्व स्पष्ट करें।
4. प्रतीक और बिम्ब के बीच अंतर स्पष्ट करें और साहित्य में उनके उपयोग की आवश्यकता बताएँ।
5. नई समीक्षा के दृष्टिकोण से कविता के आंतरिक संरचना का विश्लेषण कैसे किया जाता है?
6. नई समीक्षा के अंतर्गत, 'काव्य और आत्मनिर्भरता' के सिद्धांत पर चर्चा करें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श - डॉ. सुधीश पचौरी
2. विभक्ति और विखंडन - डॉ. सुधीश पचौरी
3. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार - कृष्णदत्त पालीवाल
4. हिंदी समीक्षा: स्रोत एवं सूत्रधार - सत्यदेव मिश्र

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. Contemporary Literary and Cultural Theory -Pramod K Nayar
2. आलोचना से आगे - डॉ. सुधीश पचौरी
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना - रामविलासा शर्मा
4. हिंदी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 04

समकालीन हिन्दी आलोचना

Block Content

Unit 1: आधुनिक साहित्य और नयी कविता के आलोचक-नामवर सिंह, इन्द्रनाथ मदान, मुक्तिबोध

Unit 2: बच्चन सिंह, अज्ञेय

Unit 3: मलयज, रमेश कुंतल, नेमीचंद्र जैन

Unit 4: मैनेजर पांडेय, सुधीश पचौरी

इकाई 1

आधुनिक साहित्य और नयी कविता के आलोचक-नामवर सिंह, इन्द्रनाथ मदान, मुक्तिबोध

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- समकालीन हिंदी आलोचना से परिचय प्राप्त करता है
- आधुनिक साहित्य और नई कविता की आलोचना पद्धति को समझता है
- विभिन्न आलोचकों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

आधुनिक साहित्य और नई कविता के आलोचक हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, क्योंकि इन आलोचकों ने न केवल काव्यशास्त्र की नई दिशा दी, बल्कि समाज, राजनीति और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को साहित्य से जोड़ा। वे साहित्य को केवल रचनात्मकता के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक, आध्यात्मिक और मानसिक विकास के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखते थे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

समकालीन आलोचना, नई समीक्षा, आलोचक, यथार्थवादी दृष्टि, सामाजिक दृष्टिकोण

Discussion / चर्चा

समकालीन आलोचना साहित्य के गहरे और विविध आयामों को समझने की कोशिश करती है और साहित्य को केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति से परे, सामाजिक, मानसिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक संदर्भ में देखने का प्रयास करती है। समकालीन आलोचना में कई प्रमुख प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती हैं, जो साहित्य और समाज के बदलते परिप्रेक्ष्य को समझने में मदद करती हैं। ये प्रवृत्तियाँ साहित्य की नई दिशा, शैलियों और समाज के विभिन्न पहलुओं पर विचार करती हैं।

4.1.1 समकालीन आलोचना की मुख्य प्रवृत्तियाँ

समकालीन आलोचना की मुख्य प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं:

1. **सांस्कृतिक आलोचना**

सांस्कृतिक आलोचना साहित्य को समाज और संस्कृति के व्यापक संदर्भ में देखने की कोशिश करती है। इसमें लेखक के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ, उसकी मानसिकता और जीवन दृष्टि पर विचार किया जाता है।

2. **सामाजिक आलोचना**

यह आलोचना साहित्य को समाज के विभिन्न पहलुओं से जोड़कर देखती है। इसमें समाज में व्याप्त असमानताएँ, शोषण, धार्मिक भेदभाव और जातिवाद आदि पर विचार किया जाता है। आलोचक यह समझने की कोशिश करते हैं कि साहित्य समाज की इन समस्याओं को कैसे व्यक्त करता है और लेखक का सामाजिक दायित्व क्या है।

3. **फेमिनिस्ट आलोचना**

फेमिनिस्ट आलोचना साहित्य को लिंग आधारित दृष्टिकोण से देखने की कोशिश करती है। यह विशेष रूप से महिलाओं की स्थिति, उनके अधिकारों और समाज में उनकी भूमिका पर ध्यान केंद्रित करती है।

हिंदी साहित्य में यह आलोचना महिलाओं की आवाज़, उनके संघर्ष और शोषण को सामने लाने का प्रयास करती है, जैसे महाश्वेता देवी और मैत्रेयी पुष्पा के लेखन में।

4. **मार्क्सवादी आलोचना**

मार्क्सवादी आलोचना साहित्य को समाज की आर्थिक संरचनाओं और वर्ग संघर्ष के संदर्भ में देखती है। यह समझने की कोशिश करती है कि साहित्य कैसे सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को प्रकट करता है। साहित्य के भीतर वर्ग, संपत्ति, श्रमिक और पूँजीपति के बीच संबंधों को देखने का यह एक तरीका है, और प्रभात कुमार चंगोड़ी जैसे आलोचकों ने इसे बारीकी से व्यक्त किया।

5. **सिद्धांतात्मक आलोचना**

इस प्रवृत्ति में साहित्य के विभिन्न सिद्धांतों, जैसे पोस्टस्ट्रक्चरलिज़म, नारीवादी सिद्धांत, आधुनिकता और पोस्टमॉडर्निज़म के आधार पर आलोचना की जाती है। यह आलोचना साहित्य को एक निश्चित सिद्धांत के माध्यम से समझने का प्रयास करती है, जैसे टॉडरॉव और लीन फेल्डमैन की विचारधारा।

6. **पोस्टकॉलोनियल आलोचना**

यह आलोचना उपनिवेशवाद के बाद के समय में उत्पन्न होने वाली सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान की समस्याओं पर आधारित है। इसमें उपनिवेशी देशों की संस्कृति,

भाषा और इतिहास की पुनः व्याख्या की जाती है। गौरव शर्मा जैसे आलोचकों ने साहित्य में उपनिवेशवाद के प्रभाव और उसकी विरासत को समझने की कोशिश की है।

7. **धार्मिक आलोचना**

धार्मिक आलोचना साहित्य में धार्मिक विषयों और उसके प्रभावों की समीक्षा करती है। यह आलोचना यह देखती है कि साहित्य में धार्मिक दृष्टिकोण और मूल्य किस तरह प्रकट होते हैं, और लेखक का धार्मिक दृष्टिकोण किस हद तक साहित्य पर प्रभाव डालता है।

8. **मानवाधिकार आलोचना**

यह आलोचना साहित्य में मानवाधिकारों और न्याय की बात करती है, और यह साहित्य को मानवता और स्वतंत्रता के सवालों से जोड़कर देखती है। इसका उद्देश्य उन मुद्दों पर प्रकाश डालना है, जो मानवाधिकारों के उल्लंघन से संबंधित होते हैं, जैसे समानता, स्वतंत्रता और शोषण।

9. **साइकोएनालिटिक आलोचना**

▶ समकालीन आलोचना साहित्य को सामाजिक, मानसिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक संदर्भ में देखने का प्रयास करती है।

यह आलोचना मनोविज्ञान और मानव चेतना के सिद्धांतों पर आधारित होती है। यह यह देखती है कि लेखक के मानसिक और भावनात्मक विकास को साहित्य में कैसे चित्रित किया गया है। फ्रायड और जंग जैसे मनोवैज्ञानिकों के सिद्धांतों का उपयोग कर, आलोचक साहित्य में मानसिक अवस्थाओं, यौन प्रवृत्तियों और व्यक्तिगत संघर्षों की व्याख्या करते हैं।

इन सभी प्रवृत्तियों के द्वारा समकालीन आलोचना साहित्य के गहरे और विविध आयामों को समझने की कोशिश करती है और साहित्य को केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति से परे, सामाजिक, मानसिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भ में देखने का प्रयास करती है।

4.1.2 आधुनिक हिंदी साहित्य और नई कविता के आलोचक

नई कविता के मुख्य आलोचक

आधुनिक साहित्य और नई कविता के आलोचक साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि वे साहित्यिक प्रवृत्तियों, शैलियों और विचारों की पहचान और विश्लेषण करते हैं। आधुनिक साहित्य और नई कविता को आलोचनात्मक दृष्टि से समझने में इन आलोचकों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है, जिन्होंने साहित्य को केवल कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज, राजनीति और मानसिकता के संदर्भ में भी देखा।

यहाँ पर हम आधुनिक साहित्य और नई कविता के कुछ प्रमुख आलोचकों पर चर्चा करेंगे जिन्होंने साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर गहरी चिंतन-मनन किया।

4.1.3 नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि

नामवर सिंह का नई कविता के प्रति दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली रहा है। नामवर सिंह, जो हिंदी साहित्य के प्रमुख आलोचक और सिद्धांतकार हैं, ने नई कविता के उदय के समय इसका गहरा विश्लेषण किया और उसे समकालीन साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में समझने की कोशिश की। नामवर सिंह ने नई कविता को साहसिक और यथार्थवादी कविता के रूप में देखा, जो पुराने शास्त्रीय रूपों और विचारधाराओं से अलग थी। वे इसे एक ऐसे साहित्यिक आंदोलन के रूप में मानते थे, जो परंपराओं से टूटकर समाज के नए यथार्थ को प्रस्तुत करता था। नई कविता ने शिल्प और भाषा के स्तर पर एक नया मोड़ लिया, और नामवर सिंह ने इसे यथार्थवाद और समाजशास्त्र से जुड़ा हुआ देखा। नामवर सिंह ने नई कविता के शिल्प को अत्यधिक महत्व दिया, लेकिन वे यह मानते थे कि शिल्प की इन नई विशेषताओं के बावजूद कविता को गहरी अनुभूति और सार्थकता की आवश्यकता है। वे नई कविता के शिल्पगत प्रयोगों का स्वागत करते हुए भी, इसे कभी-कभी व्यक्तिगत और अत्यधिक विश्लेषणात्मक होने की ओर इशारा करते थे। उनके अनुसार, नई कविता में कुछ कवियों ने शब्दों और रूपों के प्रयोग में अत्यधिक प्रयोगात्मकता दिखाई, जो कविता के आध्यात्मिक और भावनात्मक पहलू को कमजोर कर सकते थे। नामवर सिंह ने नई कविता को एक सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से भी देखा। उनके अनुसार, यह कविता यथार्थ के प्रति एक गहरी प्रतिबद्धता व्यक्त करती थी और समकालीन समाज की समस्याओं - जैसे वर्ग संघर्ष, शोषण और असमानता - को रचनात्मक रूप में सामने लाती थी। वे यह मानते थे कि नई कविता ने समाज और राजनीति की जटिलताओं को उजागर करने के लिए कविता को विषयवस्तु और प्रकृति के स्तर पर नया रूप दिया था।

▶ नई कविता यथार्थ के प्रति एक गहरी प्रतिबद्धता व्यक्त करती थी

नामवर सिंह नई कविता को पूरी तरह से पारंपरिक काव्यधारा से तोड़कर एक नया दिशा देने वाला मानते थे, लेकिन वे यह भी मानते थे कि यह कविता अपनी जड़ों से पूरी तरह से विच्छिन्न नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि नई कविता में परंपरा से विद्रोह तो था, लेकिन वह अवधारणाओं और विचारधाराओं में नवीनता लेकर आई थी, जो भविष्य के काव्य लेखन के लिए महत्वपूर्ण था। इस तरह, नामवर सिंह ने नई कविता को एक क्रांतिकारी और महत्वपूर्ण साहित्यिक आंदोलन के रूप में स्वीकार किया।

▶ नई कविता अवधारणाओं और विचारधाराओं में नवीनता लेकर आई थी

4.1.4 डॉ. इंद्रनाथ मदान की समीक्षा दृष्टि

हिंदी साहित्य में समीक्षा को एक नया आयाम देने वाले समीक्षकों में उल्लेखनीय नाम है डॉ. इंद्रनाथ मदान। उन्होंने नई कविता को समकालीन साहित्य की एक बड़ी काव्यधारा के रूप में देखा, जो पुराने काव्य रूपों और शैली की तुलना में अधिक जागरूक, प्रायोगिक और समाजिक वास्तविकताओं से जुड़ी हुई थी।

मदान ने नई कविता को आधुनिकता, व्यक्तिवाद और सामाजिक चेतना से प्रभावित बताया। वे इसे एक ऐसे साहित्यिक आंदोलन के रूप में मानते थे, जो सामाजिक और

राजनीतिक बदलावों का साक्षात्कार करता है और वर्तमान समय की जटिलताओं और अनिश्चितताओं को व्यक्त करने का प्रयास करता है। उन्होंने नई कविता के काव्य भाषा और रूप में बदलाव को स्वीकार किया, जो शास्त्रीय और पारंपरिक रूपों से बाहर था और उसमें अधिक नयापन, व्यंग्य और विद्रोह की भावना थी।

नई कविता के लेखकों ने परंपरागत काव्य शैली को तोड़ा और जीवन के बेतहाशा पक्षों को उजागर किया, जैसे कि जीवन की दुःखद स्थितियाँ, व्यक्तिगत संघर्ष और अस्मिता के सवाल। इंद्रनाथ मदान के अनुसार, नई कविता ने हिंदी कविता को एक नए दिशा में ढाला, जिसमें विचारों की गहराई, भावनाओं का खुलापन और व्यक्तिगत अनुभव की अहमियत बढ़ी। वह नई कविता को एक क्रांतिकारी कदम मानते थे, जो परंपरा से हटकर आधुनिक यथार्थ को कविता के रूप में प्रस्तुत करता था। उनका आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रायः विचारधारात्मक और ऐतिहासिक था, जिसमें वे साहित्य को समाज और राजनीति से जोड़कर देखते थे। उनके आलोचनात्मक कार्यों में 'हिंदी कविता की परंपरा' और 'साहित्य और समाज' जैसी चर्चाएँ शामिल हैं, जो उनके गहरे समाजशास्त्रीय और साहित्यिक समझ को दर्शाती हैं।उनकी आलोचना साहित्य के शास्त्रीय दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि जीवन और समाज के प्रत्यक्ष अनुभवों से जुड़ी हुई होती थी।

▶ आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रायः विचारधारात्मक और ऐतिहासिक था।

4.1.5 गजानन माधव मुक्तिबोध और कविता संबंधी विचार

मुक्तिबोध हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण कवि और आलोचक थे, जिनका योगदान नई कविता के आंदोलन में बेहद महत्वपूर्ण रहा है। उनकी कविताओं में नई कविता के शिल्प और विचारधारा की कई प्रमुख विशेषताएँ उभरकर आती हैं। मुक्तिबोध का काव्य बोध गहरे सामाजिक यथार्थ, आध्यात्मिक संघर्ष और मानवता के संकट से जुड़ा हुआ था। मुक्तिबोध ने नई कविता को समाज के वास्तविक यथार्थ से जोड़कर देखा। उनकी कविता में शोषण, सामाजिक असमानता, धार्मिक पाखंड, और मानव अस्तित्व के संघर्ष का गहरा चित्रण मिलता है। उनका मानना था कि कविता को केवल निजी अनुभवों तक सीमित नहीं रखा जा सकता, बल्कि इसे समाज के विकृत पहलुओं को भी उजागर करना चाहिए। उनकी कविताओं में सामाजिक विडंबनाओं का तीखा आलोचनात्मक स्वर है।

▶ मुक्तिबोध का काव्य बोध गहरे सामाजिक यथार्थ, आध्यात्मिक संघर्ष, और मानवता के संकट से जुड़ा हुआ था।

मुक्तिबोध के अनुसार, नई कविता का उद्देश्य केवल काव्यात्मक रूप में सौंदर्य की तलाश करना नहीं था, बल्कि कविता का मुख्य कार्य समाज के यथार्थको सामने लाना था। वे मानते थे कि कविता में जीवन के गहरे प्रश्नों को व्यक्त किया जाना चाहिए, जैसे अधिकारों की लड़ाई, वर्ग संघर्ष, और व्यक्ति की स्वतंत्रता। वे मानते थे कि कविता जागरूकता पैदा करने और नवीन दृष्टिकोण देने का एक माध्यम है। उनकी आलोचनाओं में सामाजिक आलोचना, वर्ग संघर्ष और आध्यात्मिक चिंतनको प्रमुखता मिली। उनका मानना था कि कविता में संदेह, निराशा और अंधकार की वास्तविकताएँ प्रकट करनी चाहिए।

- कविता का उद्देश्य साहित्यिक सौंदर्य के अलावा समाज के काले पक्ष को उजागर करना और उसे चुनौती देना था

उनकी प्रमुख आलोचनात्मक कृतियाँ कविता के नए प्रतिमान और आधुनिक हिंदी कविता का रूप पर आधारित हैं। मुक्तिबोध की कविता में नई कविता के शिल्प की प्रमुख विशेषताएँ जैसे अवधारणात्मकता, नई भाषा और स्वच्छंदता देखी जाती हैं। मुक्तिबोध नई कविता के कवियों में प्रमुख रूप से उभरे और उन्होंने कविता के उद्देश्य को समाज की आलोचना और आध्यात्मिक साक्षात्कार के रूप में परिभाषित किया। उनकी कविताओं में सामाजिक यथार्थ, आध्यात्मिक चिंता और व्यक्तिगत अवसाद की गहरी चिंताओं का चित्रण किया गया है। मुक्तिबोध की कविता का उद्देश्य न केवल साहित्यिक सौंदर्य था, बल्कि वह समाज के काले पक्ष को उजागर करना और उसे चुनौती देना था। नई कविता को उनके योगदान से गहरी सोच, आधुनिकता और सामाजिक जागरूकता मिली।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

समकालीन आलोचना साहित्य समाज, संस्कृति, राजनीति और मानसिकता के संदर्भ में साहित्य का विश्लेषण करती है। यह साहित्य को केवल कला के रूप में नहीं, बल्कि समाज की समस्याओं, असमानताओं, और बदलावों से जोड़कर देखती है। इसमें प्रमुख प्रवृत्तियाँ जैसे सांस्कृतिक आलोचना, सामाजिक आलोचना, फेमिनिस्ट आलोचना, मार्क्सवादी आलोचना, और पोस्टकॉलोनियल आलोचना शामिल हैं। इन प्रवृत्तियों के जरिए साहित्य को समाज के यथार्थ, वर्ग संघर्ष, महिलाओं के अधिकार, और उपनिवेशवाद के प्रभावों के दृष्टिकोण से देखा जाता है। इसके अलावा, नई कविता के आलोचक जैसे नामवर सिंह और मुक्तिबोध ने कविता को समाज और राजनीति के संदर्भ में विश्लेषित किया, जिससे साहित्य में गहरी सामाजिक जागरूकता और आधुनिकता आई।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. समकालीन आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियों के महत्व को लिखिए।
2. नई कविता के आलोचकों की आलोचनात्मक दृष्टिकोण पर चर्चा कीजिए ?
3. मार्क्सवादी आलोचना और फेमिनिस्ट आलोचना दृष्टिकोण के बीच के अंतर को स्पष्ट करें।
4. सांस्कृतिक आलोचना और सामाजिक आलोचना में प्रमुख अंतर को स्पष्ट कीजिए ?
5. पोस्टकॉलोनियल आलोचना के तहत उपनिवेशवाद के प्रभावों और विरासत पर विचार कीजिए

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श - डॉ. सुधीश पचौरी
2. विभक्ति और विखंडन - डॉ. सुधीश पचौरी
3. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार - कृष्णदत्त पालीवाल
4. हिंदी समीक्षा: स्रोत एवं सूत्रधार - सत्यदेव मिश्र

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. Contemporary Literary and Cultural Theory -Pramod K Nayar
2. आलोचना से आगे - डॉ. सुधीश पचौरी
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना - रामविलास शर्मा
4. हिंदी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

बच्चन सिंह, अज्ञेय

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- बच्चन सिंह के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- अज्ञेय के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- बच्चन सिंह की आलोचना और उनकी दृष्टि को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

नई कविता हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण काव्य आंदोलन है, जो 1950-60 के दशक में उभरा। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य पारंपरिक काव्य शिल्प और विचारधारा से हटकर कुछ नया करना था। नई कविता में शिल्प, भाषा और विचारधारा के स्तर पर नवीनता लाने की कोशिश की गई। इस समय के कवि अपनी कविता में व्यक्तिगत भावनाओं, अस्तित्ववादी चिंताओं और समाज के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करने में रुचि रखते थे।

नई कविता का जन्म ऐसे समय में हुआ जब भारतीय समाज में बदलाव आ रहे थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद समाज में कई तरह की सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियाँ सामने आ रही थीं, और साहित्यकार इन पर विचार कर रहे थे। कविता अब केवल आदर्श और सौंदर्य के संदर्भ में नहीं देखी जा रही थी, बल्कि उसे समाज की समस्याओं और यथार्थ के प्रतिवेदन के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा था।

Keywords / मुख्य बिन्दु

नई कविता, आंतरिक भावनाओं, व्यक्तिगत संवेदनाओं

Discussion / चर्चा

4.2.1 बच्चन सिंह की आलोचनात्मक दृष्टि

▶ किसी कविता की सामाजिक प्रासंगिकता और बौद्धिक गंभीरता का मूल्यांकन व्यक्तिगत अभिव्यक्ति, समाज और संस्कृति के संदर्भ में करना चाहिए।

बच्चन सिंह को नई कविता के प्रभावशाली आलोचकों में से एक माने जाते हैं। उनका साहित्यिक दृष्टिकोण नई कविता की बुनियादी प्रवृत्तियों के साथ एक सामंजस्य स्थापित करता है, लेकिन साथ ही वे इस पर एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी रखते थे। उनका मानना था कि नई कविता में आंतरिक भावनाओं, व्यक्तिगत संवेदनाओं, और अस्तित्व के सवालों को बेहतर ढंग से व्यक्त किया जा रहा था, लेकिन कभी-कभी यह कविता सामाजिक संदर्भों से कटकर केवल व्यक्तिगत आस्थाओं या अस्तित्ववादी चिंताओं तक सिमट कर रह जाती थी। बच्चन सिंह के लिए, कविता एक गहरी समझ और जीवन के सत्य को व्यक्त करने का माध्यम थी, और वे यह मानते थे कि किसी कविता की सामाजिक प्रासंगिकता और बौद्धिक गंभीरता का मूल्यांकन उसे केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति के संदर्भ में करना चाहिए। नई कविता में वे उन कवियों की सराहना करते थे जो शाब्दिक रूप से नवीनता लाने के साथ-साथ समाज के यथार्थ से भी जुड़ने का प्रयास करते थे, लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि किसी काव्यप्रवृत्ति का अति प्रयोग उसे एक हद तक सीमित भी कर सकता है।

इस प्रकार, बच्चन सिंह की आलोचना और उनकी दृष्टि नई कविता को न केवल एक रचनात्मक मुक्ति के रूप में देखती थी, बल्कि उसे सामाजिक और बौद्धिक सरोकारों से भी जोड़ती थी, जिससे कविता अपने वास्तविक उद्देश्य को हासिल कर सके। बच्चन सिंह की समीक्षा दृष्टि गहन अध्ययन मनन के कारण निर्मल है। समकालीन आलोचना की चुनौती में 'गोदान', 'झूठा-सच', 'नदी के द्वीप' आदि का विवेचना उनकी गहरी अंतर्दृष्टि और साहित्यिक समझ का प्रमाण है। वे सैद्धांतिक लेखन के क्षेत्र में जाने जाते थे।

▶ बच्चन सिंह की आलोचना नई कविता को रचनात्मक मुक्ति के साथ, सामाजिक और बौद्धिक सरोकारों से भी जोड़ती थी

बच्चन सिंह की प्रमुख रचनाएं:

- आलोचक और आलोचना
- क्रांतिकारी कवि निराला
- नया साहित्य, आलोचना की चुनौती
- हिन्दी नाटक
- रीतिकालीन कवियों की प्रेम-व्यंजना
- बिहारी का नया मूल्यांकन
- आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीज शब्द
- साहित्य का समाजशास्त्र और रूपवाद
- आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास
- भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन आदि।

4.2.2 सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

- अज्ञेय ने नई कविता को समाज और समय की वास्तविकताओं को व्यक्त करने का एक माध्यम माना।

अज्ञेय हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि और आलोचक थे, जो नई कविता के आंदोलन के साथ जुड़े हुए थे। वे न केवल नई कविता के समर्थक थे, बल्कि इसके आलोचक भी थे। अज्ञेय की कविता में नई कविता के तमाम बुनियादी तत्व और विचारधाराएँ देखने को मिलती हैं, और उनका काव्यात्मक दृष्टिकोण इस काव्यधारा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। नई कविता का आंदोलन 1950-60 के दशक में उभरा, और इसे हिंदी साहित्य में एक नई दिशा के रूप में देखा गया। यह काव्यधारा शिल्प, विचारधारा और भाषिक प्रयोग में नए दृष्टिकोणों के साथ सामने आई। अज्ञेय ने इस आंदोलन को रचनात्मक, नवीन, और वर्तमान समय की सामाजिक-राजनीतिक समस्याओं से जोड़ा। उन्होंने कविता को व्यक्तिगत अनुभव और सामाजिक चेतना के बीच संतुलित किया।अज्ञेय ने नई कविता को समाज और समय की वास्तविकताओं को व्यक्त करने का एक माध्यम माना। उनकी कविता में सामाजिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक समस्याओं का गहरा चित्रण होता है। वे मानते थे कि कविता को केवल भावनाओं या कल्पनाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि उसे समाज के यथार्थ, नैतिकता और अधिकारों की जटिलताओं को सामने लाना चाहिए। अज्ञेय का कहना था कि कविता को न केवल समाज की आंतरिक समस्याओं से परिचित कराना चाहिए, बल्कि उसे व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर परिवर्तन की दिशा में भी प्रेरित करना चाहिए।अज्ञेय ने नई कविता के शिल्प और संरचना में प्रयोग किया। वे शिल्प को अवधारणात्मकता, विचार की गहराई और प्रतीकों के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। उन्होंने कविता के पारंपरिक रूपों को चुनौती दी और नई संरचनाओं, वैकल्पिक रूपों और ध्वन्यात्मक प्रयोग की ओर कदम बढ़ाया।

- नई कविता को समाज और व्यक्ति के बीच का सांस्कृतिक पुल बनाया

अज्ञेय ने नई कविता को समाज और व्यक्ति के बीच का सांस्कृतिक पुल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अज्ञेय की आलोचना में गहरी सामाजिक चेतना, आध्यात्मिक विचार, और रचनात्मक स्वतंत्रता का समावेश मिलता है, जो उन्हें नई कविता के एक महत्त्वपूर्ण कवि और विचारक के रूप में स्थापित करता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

बच्चन सिंह और सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' दोनों ही हिंदी साहित्य में नई कविता के महत्वपूर्ण आलोचक और कवि माने जाते हैं। बच्चन सिंह का साहित्यिक दृष्टिकोण नई कविता की प्रवृत्तियों से सामंजस्यपूर्ण था, लेकिन वे इसे केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं मानते थे। उनका मानना था कि कविता का समाज और संस्कृति से जुड़ाव होना चाहिए, ताकि वह अपनी सामाजिक प्रासंगिकता और बौद्धिक गंभीरता को सिद्ध कर सके। बच्चन सिंह ने कविता की सामाजिक भूमिका को महत्वपूर्ण माना और इसकी समीक्षा करते समय समाज और संस्कृति को ध्यान में रखा।

वहीं अज्ञेय ने भी नई कविता के आंदोलन को समकालीन सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं से जोड़ा। उन्होंने कविता को केवल व्यक्तिगत भावनाओं या कल्पनाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज के यथार्थ, नैतिकता, और अधिकारों की जटिलताओं के साथ जोड़ा। वे कविता के शिल्प और संरचना में नवीनता के पक्षधर थे और पारंपरिक रूपों को चुनौती दी। अज्ञेय ने नई कविता को समाज और व्यक्ति के बीच एक सांस्कृतिक पुल बनाने का प्रयास किया, जिससे कविता का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी सशक्त हो।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. बच्चन सिंह की आलोचना दृष्टि को स्पष्ट करें और बताएँ कि उन्होंने नई कविता को किस प्रकार समाज और संस्कृति से जोड़ा?
2. अज्ञेय की कविता के शिल्प और संरचना में प्रयोग को समझाएँ।
3. नई कविता के संदर्भ में बच्चन सिंह और अज्ञेय के दृष्टिकोण में क्या समानताएँ हैं?
4. 'नई कविता समाज और व्यक्ति के बीच एक सांस्कृतिक पुल बनाती ह' - इस कथन पर चर्चा कीजिए।
5. बच्चन सिंह की प्रमुख रचनाओं के माध्यम से उनकी आलोचनात्मक दृष्टि का विश्लेषण कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श - डॉ. सुधीश पचौरी
2. विभक्ति और विखंडन - डॉ. सुधीश पचौरी
3. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार - कृष्णदत्त पालीवाल
4. हिंदी समीक्षा: स्रोत एवं सूत्रधार - सत्यदेव मिश्र

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. Contemporary Literary and Cultural Theory -Pramod K Nayar
2. आलोचना से आगे - डॉ. सुधीश पचौरी
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना - रामविलास शर्मा
4. हिंदी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

मलयज, रमेश कुंतल, नेमीचंद्र जैन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- नई कविता और आलोचना का संबंध समझता है
- मलयज की आलोचना दृष्टि को समझता है
- नई कविता के बारे में विभिन्न आलोचकों के दृष्टिकोण को जानता है
- काव्यशास्त्र और सामाजिक संदर्भ में कविता को देखने की समझ विकसित करता है

Background / पृष्ठभूमि

नई कविता एक काव्य आंदोलन था, जो 1950-60 के दशक में हिंदी साहित्य में उभरा। इस आंदोलन ने पारंपरिक काव्य रूपों और शिल्प को चुनौती दी और कविता को नए, व्यक्तिगत और गहरे अनुभवों का माध्यम बनाया। नई कविता में कवियों ने अपनी आंतरिक भावनाओं, मानसिक संघर्षों और अस्तित्ववादी चिंताओं को व्यक्त किया। यह काव्यधारा केवल व्यक्तिगत अनुभवों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें समाज, संस्कृति और राजनीति की जटिलताओं को भी समाहित किया गया था।

मलयज, रमेश कुंतल मेघ, और नेमीचंद्र जैन जैसे आलोचकों ने नई कविता पर अपनी आलोचनात्मक दृष्टि प्रस्तुत की। मलयज ने इसे एक रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में देखा, जहाँ आलोचना और कविता दोनों एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। वे कविता और आलोचना के संबंध को बहुत गहराई से समझते थे। वहीं, रमेश कुंतल मेघ ने इसे समाज और जीवन के गहरे सवालों को उजागर करने वाला आंदोलन माना। दूसरी ओर, नेमीचंद्र जैन ने इसे व्यक्तिवाद और आत्ममुग्धता की ओर झुका हुआ पाया और उन्होंने इसके समाज और संस्कृति से जुड़े संदर्भों पर सवाल उठाए।

Keywords / मुख्य बिन्दु

विचारोत्तेजक लेखनी, रचना-प्रक्रिया, सौन्दर्य मीमांसा

Discussion / चर्चा

4.3.1 मलयज

▶ 'कविता आत्मसाक्षात्कार है, और आलोचना कविता से साक्षात्कार'

मलयज संवेदनशील होने के साथ-साथ एक गंभीर आलोचक भी हैं। उन्होंने अपनी विचारोत्तेजक लेखनी द्वारा आलोचना के दोनों पक्षों(सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक आलोचना) को समृद्ध किया है। मलयज की आलोचना दृष्टि शास्त्रीय अथवा विशुद्ध अकादमिक आलोचक से भिन्न है। उनकी दृष्टि में 'कविता आत्मसाक्षात्कार है, और आलोचना कविता से साक्षात्कार।' कवि के रूप में मलयज जितने उम्दा और संवेदनशील हैं, उतना ही उनका आलोचना-कर्म गंभीरतापरक और उल्लेखनीय माना जाता है। यहाँ उनके आलोचना-कर्म का विश्लेषण किया जा रहा है। जब हम मलयज के आलोचना कर्म पर विहंगम दृष्टि डालते हैं तो ज्ञात होता है कि उन्होंने आलोचना के दोनों पक्षों (सैद्धान्तिक और व्यावहारिक) से संबन्धित महत्वपूर्ण कार्य किया है। हिंदी आलोचना के क्षेत्र में उनके इस अमूल्य योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। मलयज ने साहित्य (पद्य और गद्य) की रचना-प्रक्रिया, सौन्दर्य मीमांसा, वस्तु और रूप, साहित्यकार की ईमानदारी तथा आलोचना-प्रक्रिया आदि के साथ-साथ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, अज्ञेय, निराला, विपिन कुमार अग्रवाल, प्रभाकर माचवे इत्यादि के साहित्य का भी मूल्यांकन किया है। मलयज आलोचना कर्म को जिंदा होने के एहसास से जोड़कर देखते हैं। उनके शब्दों में- "आलोचना लिखना मेरे लिए उतना ही जिंदा काम है, जितना कि कविता लिखना, आलोचना भी उतनी ही लिखने की कोशिश करता हूँ जो मुझे जिंदा होने का एहसास दिलाए और जिंदा चीजों के विषय में मैं एकबारगी शुरुआत नहीं कर पाता हूँ, एक झिझक, एक सभ्रम अपने आप को तोलने का भाव मन में होता है जैसे मैं किसी निजी और पवित्र वस्तु को छूने जा रहा हूँ।" अतः स्पष्ट है कि मलयज एक उत्कृष्ट साहित्यिक हैं। वे आलोचना को भी कविता की भाँति पवित्र वस्तु मानते हैं। मलयज आलोचना को भी रचना मानने के पक्ष में हैं। उन्होंने सैद्धान्तिक आलोचना को 'मीमांसात्मक आलोचना' तथा व्यावहारिक आलोचना को 'रचनात्मक आलोचना' की संज्ञा दी है।

आलोचना को कविता के विपरीत, उल्टा अथवा विरोधी मानना पूर्णतः असंगत है क्योंकि आलोचना कविता की प्रतिद्वन्द्वी नहीं बल्कि समानान्तर संसार है। मलयज कविता और आलोचना के मध्य के संधिसूत्र को समझाते हुए कहते हैं- "कविता कुछ भी सिद्ध नहीं करती, सिवाय एक अनुभव को रचने के। आलोचना कुछ भी प्रमाणित नहीं करती, सिवाय उस रचे हुए अनुभव को व्यापक अर्थ विस्तार देने के। अर्थ का एक व्यापक संसार है, जिसमें वह अनुभव है और उस अनुभव में कविता है और आलोचना भी। अनुभव ही कविता को आलोचना से जोड़ता है, पर कविता में इससे जुड़ने की अनुभूति है और आलोचना में विचार।" यहाँ मलयज ने कितने सरल, सहज ढंग से कविता व आलोचना के अन्तःसम्बन्धों को स्पष्ट कर दिया है। सचमुच यह मलयज की

वैचारिकी का अद्वितीय उदाहरण है। मलयज ने जीवनानुभवों को कविता में रचा, और उन्हें विस्तार दिया आलोचना में। अतः उनके लिए आलोचना-कर्म रचनात्मक अनुभव का पुनप्रेकाशन है। मलयज ने काव्य-भाषा पर बहुत ही बारीकी के साथ विचार-विमर्श किया है। काव्य-भाषा से संबन्धित उन्होंने कई लेख लिखे हैं- (1) काव्यभाषा का इकहरापन (2) नया रचनाकार : अभिव्यक्ति की समझ (3) बिम्ब कविता। ये तीनों लेख उनकी आलोचनात्मक पुस्तक 'कविता से साक्षात्कार' (1979) ई. में संकलित हैं। इनके अतिरिक्त भी उन्होंने काव्यभाषा से संबन्धित कई महत्वपूर्ण लेख और लम्बी टिप्पणियाँ अपनी डायरी में की हैं। द्विवेदी युग की काव्य भाषा के संदर्भ में वे लिखते हैं- 'द्विवेदी युग की भाषा बहिर्मुखी है, पर सामाजिक नहीं, क्योंकि उसमें कवि की अपनी सामाजिकता के साथ दूसरे व्यक्ति की सामाजिकता का दखल नहीं है। कवि देश की दुर्दशा पर चाहे विलाप करे, चाहे पश्चिमी तौर-तरीकों पर विलाप करे या समाज की कुरीतियों पर विलाप करे। सब में वह अपनी ही लाठी हाँकता है। ... अपने दृष्टिकोण पर खड़ा होकर बाहर को भीतर समेटता है। कुल मिलाकर इस युग में लेखन आदर्शवादी और उद्देश्यपरक था।' भाषा, सौन्दर्य, रूचि और अनुभव सँजोने वाला तंत्र उनके बुनियादी विश्लेषण के आधार रहे हैं। मलयज के व्यापक चिंतन क्षेत्र में नये भावबोध के अतिरिक्त नये-नये संदर्भों में मानव-जीवन और संवेदनाओं की व्याख्या तो समाहित है ही, साथ ही उसमें इतिहास के प्रति दायित्व बोध तथा आज के जीवन सत्य को, आज ही के संदर्भों में देखने का प्रयास भी अंतर्निहित है।

- आलोचना दृष्टि समाज और साहित्य से जुड़े बुनियादी प्रश्नों से टकराती है

मलयज एक प्रतिभावान कवि-आलोचक हैं और उनकी आलोचना दृष्टि अपने समय, समाज और साहित्य से जुड़े बुनियादी प्रश्नों से टकराती है एवं काफ़ी हद तक उनका निराकरण करने का भी प्रयास करती है। मलयज की आलोचना दृष्टि अत्यंत पैनी है। उनकी दृष्टि साहित्य, साहित्यकार, समकालीन परिस्थितियों के साथ-साथ उस पूरी परंपरा के प्रति भी सचेत होकर देखती है जिससे उस रचना तथा रचनाकार को रचनात्मकता की खाद प्राप्त हुई है।

4.3.2 रमेश कुंतल मेघ

- काव्य की अनुभूति, विषयवस्तु और शिल्प में एक नवीन प्रयोग

रमेश कुंतल मेघ, जो हिंदी कविता के एक प्रमुख कवि और आलोचक हैं, वे नई कविता के विकास और उसकी विशिष्टताओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए। वे नई कविता को एक ऐसे काव्य आंदोलन के रूप में देखते थे, जिसमें परंपरागत काव्य रूपों और शिल्पों से अलग होकर एक नई दिशा की ओर कदम बढ़ाया गया था। नई कविता को लेकर रमेश कुंतल मेघ का दृष्टिकोण यह था कि यह काव्यधारा काव्य की अनुभूति, विषयवस्तु और शिल्प में एक नवीन प्रयोग थी। उन्होंने इसे न केवल व्यक्तिवाद और बौद्धिकता से जुड़ी कविता माना, बल्कि यह भी कहा कि इसमें जीवन की जटिलताओं और समाज की विसंगतियों का गहरा चित्रण था। इस नई कविता में जीवन के गहरे प्रश्न, मनुष्य की आंतरिक संघर्ष और सामाजिक यथार्थ को प्राथमिकता दी गई थी।

मेघ के अनुसार, नई कविता ने पुराने काव्य रूपों, जैसे छंद, अलंकार और रूपक से मुक्त होकर कविता को एक अधिक अभिव्यक्तिपूर्ण और व्यक्तिपरक माध्यम बना दिया। उन्होंने यह भी माना कि नई कविता में अंधकार, विसंगति, आत्मालोचना और अराजकता के तत्व प्रमुख थे। यह कविता आंदोलन विशेष रूप से उन समयों की तात्कालिक परिस्थितियों और अवसादपूर्ण समाज के प्रभाव से प्रेरित था।उनके लिए नई कविता की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि यह अपने भीतर आध्यात्मिक और सामाजिक दोनों प्रकार की खोज को समाहित करती थी। वे मानते थे कि यह कविता उस समय के विद्रोह, असंतोष और बदलाव की ज़रूरत को व्यक्त करती थी, जो साहित्यिक और सामाजिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण था।

▶ नई कविता विद्रोह, असंतोष, और बदलाव की ज़रूरत को व्यक्त करती थी, जो साहित्यिक और सामाजिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण था।

कुल मिलाकर, रमेश कुंतल मेघ ने नई कविता को एक यथार्थवादी, क्रांतिकारी और समाजिक बदलाव की आवश्यकता से जुड़ा हुआ साहित्यिक आंदोलन माना, जो उस समय की सामाजिक परिस्थितियों और मनोवैज्ञानिक प्रभावों को सटीक रूप से चित्रित करता था।

4.3.3 नेमीचन्द्र जैन

नई कविता में व्यक्तिवाद, आत्म-अभिव्यक्ति और अस्तित्ववादी चिंताओं का उभार हुआ, और पुराने काव्य रूपों से परे जाकर काव्यशास्त्र की पारंपरिक धारा को चुनौती दी गई। लेकिन, जैसे-जैसे यह प्रवृत्ति फैलने लगी, इसके कुछ पहलुओं पर आलोचना भी शुरू हुई, जिसमें नेमीचन्द्र जैन ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नेमीचन्द्र जैन की आलोचना दृष्टि में नई कविता को लेकर कुछ महत्वपूर्ण चिंताएँ थीं:

▶ साहित्य का उद्देश्य केवल अपने अस्तित्व की खोज नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति की वास्तविकताओं का उद्घाटन भी होना चाहिए।

1. **व्यक्तिवाद और आत्ममुग्धता**

नई कविता की प्रमुख विशेषता थी कि यह कवि के आंतरिक अनुभव, मानसिक द्वंद्व, और व्यक्तिगत संवेदनाओं को प्राथमिकता देती थी। जैन ने इसे आलोचना की क्योंकि उन्हें लगता था कि यह व्यक्तिवादिता कभी-कभी समाज और सृजन के उच्च उद्देश्य से कटकर केवल व्यक्तिगत आस्था और आत्ममुग्धता तक सिमट कर रह जाती है। उनका मानना था कि साहित्य का उद्देश्य केवल अपने अस्तित्व की खोज नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति की वास्तविकताओं का उद्घाटन भी होना चाहिए।

▶ साहित्य समाज का दर्पण होता है और उसे समाज से कट कर नहीं देखा जा सकता।

2. **सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों से दूरी:**

नई कविता में कविता के शिल्प और रूप के प्रयोग पर विशेष ध्यान दिया गया था, लेकिन जैन के अनुसार इसमें समाजिक संदर्भों और वास्तविकताओं की कमी थी। वे यह मानते थे कि कविता को केवल एक व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के रूप में नहीं देखा जा सकता। उसे समाज, संस्कृति और मानवीय संबंधों के संदर्भ में भी आंका जाना चाहिए। जैन का यह दृष्टिकोण था कि साहित्य समाज का दर्पण होता है और उसे समाज से कट कर नहीं देखा जा सकता।

3. आध्यात्मिक और काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण

नेमीचन्द्र जैन की आलोचना में यह भी था कि नई कविता में आध्यात्मिक गहराई और काव्यशास्त्रीय नियमों की कमी थी। वे भारतीय काव्यशास्त्र और शास्त्रीय सिद्धांतों का समर्थन करते थे और मानते थे कि एक अच्छी कविता में शिल्प, रस, अलंकार और शैली का संतुलन होना चाहिए। उन्होंने यह माना कि नई कविता में इन तत्वों की अनदेखी कभी-कभी कविता को मात्र आत्म-अभिव्यक्ति का एक माध्यम बना देती है, जिसमें गहरी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संवेदनाओं का अभाव होता है।

▶ एक अच्छी कविता में शिल्प, रस, अलंकार और शैली का संतुलन होना चाहिए।

4. काव्यशास्त्र की भूमिका

जैन के अनुसार, कविता का मूल्यांकन केवल भावनाओं की अभिव्यक्ति से नहीं किया जा सकता। उनके लिए कविता एक शास्त्र के रूप में थी, जिसमें काव्यशास्त्र के नियमों का पालन महत्वपूर्ण था। नई कविता में जैन को यह कमी महसूस हुई कि उसमें काव्यशास्त्र के साथ-साथ साहित्यिक विधाओं की गहरी समझ का अभाव था। वे मानते थे कि कविता को केवल अनुभवों के माध्यम से नहीं, बल्कि गहरे विचार और विश्लेषण के साथ भी देखा जाना चाहिए।

▶ कविता को केवल अनुभवों के माध्यम से नहीं, बल्कि गहरे विचार और विश्लेषण के साथ भी देखा जाना चाहिए।

5. प्रकृति और काव्यशास्त्र

जैन ने साहित्य में प्रकृति के चित्रण और उसके सांस्कृतिक संदर्भ पर भी सवाल उठाए। नई कविता के कुछ उदाहरणों में, प्रकृति या बाहरी विश्व को अधिक गहन और प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त किया गया था, लेकिन जैन के अनुसार, यह चित्रण कभी-कभी अर्थहीन प्रतीकवाद में बदल जाता था, जो कविता को केवल बौद्धिक व्यायाम बना देता था।

▶ साहित्य का वास्तविक उद्देश्य समाज और संस्कृति की गहरी समझ को सामने लाना है, न कि केवल व्यक्तिगत संवेदनाओं को व्यक्त करना।

नेमीचन्द्र जैन की आलोचना नई कविता को अत्यधिक व्यक्तिगत, आत्ममुग्ध और समाज से कटकर देखती थी। वे कविता को न केवल भावनात्मक और शिल्पात्मक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़कर देखने के पक्षधर थे। उनका यह भी मानना था कि साहित्य का वास्तविक उद्देश्य समाज और संस्कृति की गहरी समझ को सामने लाना है, न कि केवल व्यक्तिगत संवेदनाओं को व्यक्त करना। इस दृष्टिकोण से, जैन की आलोचना ने नई कविता की सीमाओं और संभावनाओं को परखा और उसे समाज के व्यापक संदर्भ में देखने की आवश्यकता को रेखांकित किया।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

मलयज, हिंदी साहित्य के एक प्रमुख कवि और आलोचक हैं, जिन्होंने आलोचना के दोनों पक्षों (सैद्धांतिक और व्यावहारिक) को समृद्ध किया है। वे कविता और आलोचना के रिश्ते को बहुत ही गहरे और संवेदनशील तरीके

से समझते थे। उनके अनुसार, कविता आत्मसाक्षात्कार है और आलोचना कविता से साक्षात्कार है। वे आलोचना को भी एक रचनात्मक प्रक्रिया मानते थे और इसे कविता के समान ही पवित्र समझते थे। मलयज ने काव्य-भाषा, साहित्यकार की ईमानदारी और आचार्य रामचंद्र शुक्ल, अज्ञेय, निराला जैसे साहित्यकारों के साहित्य का भी मूल्यांकन किया। उनकी आलोचना दृष्टि ने साहित्य के शास्त्रीय और आधुनिक दृष्टिकोण को जोड़ने का प्रयास किया और वे साहित्य को सामाजिक संदर्भ में देखने के पक्षधर थे।

रमेश कुंतल मेघ ने नई कविता को एक यथार्थवादी, क्रांतिकारी साहित्यिक आंदोलन के रूप में देखा जो समाज की विसंगतियों और जीवन की जटिलताओं को व्यक्त करता था। उन्होंने इसे एक व्यक्तिवाद और बौद्धिकता से जुड़ी कविता माना जो समाज के बदलाव की आवश्यकता को भी दर्शाता है।

नेमीचंद्र जैन ने नई कविता पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया और इसे व्यक्तिवाद और आत्ममुग्धता की ओर झुका हुआ पाया। उन्होंने इस पर सवाल उठाया कि नई कविता समाज और सांस्कृतिक संदर्भों से कटकर केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों तक सीमित रह जाती है। उनका मानना था कि साहित्य का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत अस्तित्व की खोज नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति की वास्तविकताओं का उद्घाटन करना होना चाहिए।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. मलयज की आलोचना दृष्टि में कविता और आलोचना के संबंध को समझाइए।
2. रमेश कुंतल मेघ के अनुसार नई कविता की विशेषताएँ क्या हैं?
3. नेमीचंद्र जैन की आलोचना दृष्टि में नई कविता को लेकर किस प्रकार की चिंताएँ थीं?
4. मलयज ने साहित्य की रचना-प्रक्रिया, सौंदर्य मीमांसा और आलोचना-प्रक्रिया पर क्या विचार व्यक्त किए हैं?
5. नई कविता के आंदोलन की आलोचना करते हुए नेमीचंद्र जैन के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. उत्तर आधुनिक साहित्यिक विमर्श - डॉ. सुधीश पचौरी
2. विभक्ति और विखंडन - डॉ. सुधीश पचौरी
3. हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार - कृष्णदत्त पालीवाल
4. हिंदी समीक्षा: स्रोत एवं सूत्रधार - सत्यदेव मिश्र

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. Contemporary Literary and Cultural Theory -Pramod K Nayar
2. आलोचना से आगे - डॉ. सुधीश पचौरी
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना - रामविलास ार्मा
4. हिंदी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 4

मैनेजर पांडेय, सुधीश पचौरी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- मैनेजर पांडेय और सुधीश पचौरी की आलोचनात्मक दृष्टियों को समझता है
- साहित्य और समाज के गहरे संबंध को जानता है
- साहित्य के इतिहास और वर्तमान के आपसी संबंध को समझने में सहायता मिलता है
- साहित्य और संस्कृति के बारे में एक समग्र दृष्टिकोण प्राप्त करता है।
- समीक्षा और आलोचना के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के विचार को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

यह अध्याय हिंदी साहित्य के दो प्रमुख आलोचकों, मैनेजर पांडेय और सुधीश पचौरी के आलोचनात्मक दृष्टि कोणों पर आधारित है। दोनों ने साहित्य की आलोचना में समाज, संस्कृति और इतिहास को गहरे तरीके से जोड़ा। पांडेय जी ने साहित्य को एक सामाजिक और विचारधारात्मक संघर्ष का हिस्सा माना और इतिहास तथा साहित्येतिहास को जोड़कर साहित्य का विश्लेषण किया। वहीं, पचौरी जी ने साहित्य को सिर्फ व्यक्तिगत अनुभव का परिणाम नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति से जुड़ा हुआ माना। उनके अनुसार, साहित्य का उद्देश्य सामाजिक समस्याओं को उजागर करना है, और आलोचना का कार्य साहित्य और समाज के बीच संवाद स्थापित करना है। इन आलोचकों के कार्यों ने हिंदी साहित्य की आलोचना को एक नया दृष्टिकोण और दिशा दी है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

समाजोन्मुख सर्जनात्मकता, सृजनात्मक आलोचना

Discussion / चर्चा

4.4.1 मैनेजर पांडेय

मैनेजर पांडेय हिन्दी के यशस्वी मार्क्सवादी आलोचक हैं। उनकी आलोचना में साहित्य और जीवन के जुड़ने की संवेदनशीलता तथा आत्मीयता गहरे स्तर पर मौजूद

है। इसलिए पांडय जी की आलोचना में समाजोन्मुख सर्जनात्मकता सम्भव हुई है और अपनी आलोचना में उन्होंने विषय को समग्रता में पकड़ने की कोशिश की है। आलोचना करने के लिए आलोचना से कुछ अपेक्षाएँ भी की जाती हैं। इन अपेक्षाओं के बारे में उनका कहना है 'मैं ऐसा समझता हूँ कि अच्छी आलोचना लिखने के लिए रचना की समझ के साथ-साथ समाज भी आवश्यक है, जिससे वह रचना पैदा हुई है'। मार्क्सवादी आलोचक के धार के रूप में गिने जाने वाले मैनेजर पांडेय जी को आलोचना के क्षेत्र में आने के लिए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. रामविलास शर्मा और बाद में नामवर सिंह से प्रेरणा मिली। स्वयं पांडेय जी का मानना है कि आलोचना समाज के बीच अन्तःसम्बन्धों का माध्यम होकर ही सामाजिक बदलाव का साधन हो सकती है। आगे चलकर वे साहित्यालोचना में इतिहास को भी अंतर्भुत करते हैं।

▶ अच्छी आलोचना लिखने के लिए रचना की समझ के साथ-साथ समाज भी आवश्यक है, जिससे वह रचना पैदा हुई है।

▶ आलोचना को रचना कर्म की तरह ही एक सामाजिक कर्म और विचारधारात्मक संघर्ष का साधन माना

मार्क्सवादी आलोचक पांडेय जी की आलोचनात्मक सृजनशीलता की आरम्भिक प्रति छवि उनकी पुस्तक 'शब्द और कर्म' में देखी जा सकती है। इसमें लेखक ने आलोचना को रचना कर्म की तरह ही एक सामाजिक कर्म और विचारधारात्मक संघर्ष का साधन मानकर दूसरे सामाजिक व्यवहारों और विचारों से उसके गहरे सम्बन्ध पर बार-बार बल दिया है।

'आलोचना की सामाजिकता' पुस्तक में वे सामाजिकता के जिस प्रश्न को रचनात्मक साहित्य के मूल्यांकन का प्रमुख आधार बनाते हैं, उसी प्रश्न को आलोचना और चिन्तन के मूल्यांकन का भी प्रमुख आधार मानते हैं। लेखक का पूँजीवाद के विरुद्ध प्रतिरोधी आलोचनात्मक रूप इसमें स्पष्ट दिखाई देता है।वर्तमान में जबकि सम्पूर्ण विश्व भूमंडलीकरण के दौर में है और साहित्य, कला, संस्कृति तथा उसके पक्षधर बुद्धिजीवियों पर चौतरफा हमले हो रहे हैं। ऐसे समय में 'साहित्य और इतिहास दृष्टि' पुस्तक समाज और साहित्य के आपसी सम्बन्ध को सुदृढ़ता प्रदान करती है। पांडेय जी साहित्येतिहास सम्बन्धी जो ढाँचा निर्मित करते हैं, उसमें रचना, इतिहास, इतिहासबोध और वर्तमान से उसके सम्बन्ध का बोध शामिल है।

▶ साहित्येतिहास सम्बन्धी जो ढाँचा निर्मित करते हैं, उसमें रचना, इतिहास, इतिहासबोध और वर्तमान से उसके सम्बन्ध का बोध शामिल है।

आलोचनात्मक पुस्तक 'साहित्य और इतिहास दृष्टि' से मार्क्सवादी धारा की निर्देश आलोचनात्मक कृति है। हिन्दी साहित्य क्षेत्र में यह साहित्य इतिहास की परंपरा का वस्तुवादी परिक्षण का चमकदार व्यावहारिक निदर्शन तथा लेखक की इतिहास दृष्टि का श्रेष्ठ नमूना है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि उनकी आलोचनात्मक पद्धति ऐतिहासिक समाजशास्त्रीय रही है। मैनेजर पांडेय अपने आलोचनात्मक लेखन के क्रम में कई सेद्धान्तिक स्थापनाएँ भी प्रस्तुत करते हैं। यह सारी मशक्कत अन्होंने मार्क्सवादी की वैचारिक पृष्ठभूमि पर दृढ़ता से पाँव टिकाकर की है। इतिहास और साहित्येतिहास का पुनरुत्थानवादियों की जागीर नहीं बनने देना चाहते हैं तो हमें पांडेय जी के रचनात्मक प्रयासों को आगे भी जारी रखने की जरूरत है।पांडेय जी का आलोचनात्मक साहित्य हिन्दी में सृजनात्मक आलोचना का जीव प्रमाण है। उनके आलोचनात्मक लेखन में वैचारिक नवीनता है। विभिन्न दृष्टिकोणों से साहित्य तथा साहित्य तथा साहित्येत्तर

सिद्धान्तों पर चर्चा करते हैं। कृति को सम्पूर्णता में देखने का उनका आग्रह प्रशंसनीय है।

4.4.2 सुधीश पचौरी का आलोचनात्मक दृष्टिकोण

सुधीश पचौरी का योगदान हिंदी साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण माना जाता है, और वे आधुनिक हिंदी आलोचना के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक हैं। सुधीश पचौरी ने साहित्यिक आलोचना की दिशा को नया मोड़ दिया और साहित्य की गहरी समझ को आम पाठकों तक पहुँचाया।

सुधीश पचौरी का आलोचनात्मक दृष्टिकोण:

1. **वास्तविकता और सामाजिक संदर्भ:**

- साहित्य केवल व्यक्तिगत अनुभव या कल्पना का परिणाम नहीं हैं।

पचौरी की आलोचना में अक्सर साहित्य को समाज और संस्कृति से जोड़कर देखा जाता है। वे मानते थे कि साहित्य केवल व्यक्तिगत अनुभव या कल्पना का परिणाम नहीं होता, बल्कि वह सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ से प्रभावित होता है। वे साहित्य में व्याप्त सामाजिक यथार्थ को महत्वपूर्ण मानते थे और उसे आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखते थे।

2. **साहित्य का उद्देश्य**

- साहित्य का मुख्य उद्देश्य सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं पर प्रकाश डालना है

पचौरी के अनुसार, साहित्य का मुख्य उद्देश्य सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओं पर प्रकाश डालना है। वे यह मानते थे कि साहित्य केवल सौंदर्य और आनंद के लिए नहीं, बल्कि समाज को जागरूक और संवेदनशील बनाने के लिए भी होना चाहिए।

3. **आलोचना का बहुआयामी दृष्टिकोण**

- सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आयामों पर भी गहराई से विचार

पचौरी का आलोचनात्मक दृष्टिकोण एक बहुआयामी और समग्र दृष्टिकोण था। वे न केवल साहित्य के शिल्प और रचनात्मकता पर ध्यान देते थे, बल्कि उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आयामों पर भी गहराई से विचार करते थे।

4. **पारंपरिक आलोचना से परे**

- साहित्य को एक सामाजिक और सांस्कृतिक दस्तावेज़ के रूप में देखते थे

सुधीश पचौरी पारंपरिक आलोचना के तरीकों से कुछ हद तक परे थे। वे साहित्य को केवल एक शिल्पात्मक कृति के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक दस्तावेज़ के रूप में भी देखते थे। इस दृष्टिकोण ने उन्हें साहित्य आलोचना में एक अलग स्थान दिलाया।

5. **साहित्यिक और सांस्कृतिक संवाद**

- आलोचना का उद्देश्य साहित्य और समाज के बीच गहरे संवाद की संभावना को उजागर करना

पचौरी का आलोचनात्मक कार्य केवल साहित्य तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने साहित्य को समाज और संस्कृति के व्यापक संदर्भ में समझने का प्रयास किया। उनकी आलोचना का उद्देश्य साहित्य और समाज के बीच गहरे संवाद की संभावना को उजागर करना था।

▶ विभिन्न विषयों पर पचास से अधिक किताबे लिखे

सुधीश पचौरी की आलोचना के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों में हिंदी साहित्य की परंपरा, काव्यशास्त्र और आलोचना और कविता के काव्यशास्त्र शामिल हैं। इन कार्यों में पचौरी ने हिंदी साहित्य की शास्त्रीय और आधुनिक प्रवृत्तियों का विस्तृत विश्लेषण किया है। सुधीश पचौरी विभिन्न विषयों पर, पचास से भी अधिक किताबें लिख चुके हैं। इनकी प्रमुख किताबों में 'कविता का अंत', 'दूरदर्शन की भूमिका', 'दूरदर्शन : स्वायत्तता और स्वतंत्रता', 'विकास से बाज़ार तक', 'मीडिया और साहित्य', 'टीवी टाइम्स', 'साहित्य का उत्तरकाण्ड', 'स्त्री देह के विमर्श', 'आलोचना से आगे', मीडिया, जनतन्त्र और आतंकवाद, मीडिया की परख आदि शामिल हैं।सुधीश पचौरी का आलोचनात्मक कार्य न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज और संस्कृति के गहरे अध्ययन के रूप में भी उनका योगदान अविस्मरणीय है। उनका यह दृष्टिकोण आज भी हिंदी साहित्य की आलोचना के क्षेत्र में एक मार्गदर्शक के रूप में काम करता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

नई कविता के आलोचकों ने इसे विचार और शिल्प के स्तर पर अवधारणात्मक और सामाजिक रूप से समृद्ध किया। इन आलोचकों ने साहित्य को साहित्यिक पारंपरिकताओं से बाहर निकालकर समाज, संस्कृति, राजनीति और मनुष्यता के सवालों से जोड़ा। उन्होंने नई कविता के शिल्प और सामाजिक संदर्भों में गहरी सोच और प्रयोग की ओर ध्यान केंद्रित किया। इन आलोचकों के माध्यम से नई कविता और आधुनिक साहित्य ने अपने अस्तित्व को एक सशक्त और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से स्थापित किया।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. नामवर सिंह की नई कविता संबंधी मान्यताओं पर टिप्पणी लिखिए।
2. इन्द्रनाथ मदान की आलोचना दृष्टि का परिचय दीजिए।
3. समकालीन हिंदी आलोचना के क्षेत्र में नेमीचंद्र जैन के योगदान पर प्रकाश डालिए।
4. समकालीन आलोचना पद्धति का परिचय दीजिए।
5. मैनेजर पांडेय की आलोचना दृष्टि की समीक्षा कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. Contemporary Literary And Cultural Theory -Pramod K Nayar
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना - रामविलास शर्मा
3. हिंदी समीक्षा: स्रोत एवं सूत्रधार - सत्यदेव मिश्र
4. हिंदी आलोचना - विश्वनाथ त्रिपाठी

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. विभक्ति और विखंडन - डॉ. सुधीश पचौरी
2. हिंदी आलोचना का विकास - नंद किशोर नौसैनिक
3. आलोचना और आलोचक-बच्चन सिंह
4. आलोचना से आगे - डॉ. सुधीश पचौरी

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

MODEL QUESTION PAPER SETS

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg. No : .....

Name : …….....

Model Question Paper- Set-I

POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS

M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

THIRD SEMESTER -M23HD02DC- हिन्दी आलोचना साहित्य

CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours Maximum Mark: 70

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. आलोचना के भेदों का परिचय दीजिए।
2. भारतेंदु युगीन अन्य आलोचकों का परिचय दीजिए।
3. बिम्बवाद का परिचय दीजिए।
4. हिंदी के प्रमुख स्वच्छंदतावादी आलोचकों का परिचय दीजिए।
5. मार्क्सवादी आलोचना क्या है? इसे सरल शब्दों में समझाइए।
6. प्रेमचंद ने 'प्रगतिशील लेखक संघ' के अधिवेशन में क्या कहा था?
7. समकालीन आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियों के महत्व को लिखिए।
8. नई कविता के संदर्भ में बच्चन सिंह और अज्ञेय के दृष्टिकोण में क्या समानताएँ है?

(5X2 = 10 Marks)

SECTION - B

II किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. नेमीचंद जैन की आलोचना दृष्टि में नई कविता को लेकर किस प्रकार की चिंताएँ थी?
10. 'नई कविता समाज और व्यक्ति के बीच एक सांस्कृतिक पुल बनाती हैं' इस कथन पर चर्चा कीजिए।
11. मनोविश्लेषणवादी आलोचना की सैद्धांतिक अवधारणा क्या है?
12. नामवर सिंह की समीक्षा संबंधी विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
13. सैद्धांतिक समीक्षा पर लेख तैयार कीजिए।

14. भारतेंदु युगीन आलोचना पर लेख तैयार कीजिए।

15. हिन्दी आलोचना साहित्य की विकास यात्रा का परिचय दीजिए।

16. मार्क्सवादी आलोचना और फेमिनिस्ट आलोचना दृष्टिकोण के बीच के अंतर को स्पष्ट करें।

17. बच्चन सिंह की प्रमुख स्वनाओं के माध्यम से उनकी आलोचनात्मक दृष्टि का विश्लेषण कीजिए।

(6X5 = 30 Marks)

SECTION - C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

18. मार्क्सवादी आलोचकों के प्रमुख सिद्धांतों के बारे में बताइए।

19. नई कविता के आलोचकों की आलोचनात्मक दृष्टिकोण पर चर्चा कीजिए।

20. ऐतिहासिक आलोचना पर लेख तैयार कीजिए।

21. आलोचना के स्वरूप का परिचय देते हुए उसकी विभिन्न परिभाषाएँ लिखिए।

(2X15 = 30 Marks)

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg. No : .....
Name : …….....

Model Question Paper- Set-II

POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS
M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE
THIRD SEMESTER -M23HD02DC- हिन्दी आलोचना साहित्य

CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours Maximum Mark: 70

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. द्विवेदी युगीन आलोचकों का परिचय दीजिए।
2. आलोचक में किन किन गुणों का होना आवश्यक माना गया है?
3. हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक आलोचकों का परिचय दीजिए।
4. प्रतीकवाद का परिचय दीजिए।
5. प्रतीक और बिंब में क्या अंतर है?
6. मोहन राकेश के साहित्यिक दृष्टिकोण को समझाइए।
7. रमेश कुंतल मेघ के अनुसार नई कविता की विशेषताएँ क्या है?
8. समकालीन आलोचना पद्धति का परिचय दीजिए।

(5X2 = 10 Marks)

SECTION - B

II किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. मार्क्सवादी आलोचना के भेदों का परिचय दीजिए।
10. द्विवेदी युगीन आलोचना की प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए।
11. स्वच्छंदतावादी काव्यालोचना की प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए।

12. शुक्ल युगीन आलोचना की शैलियों का परिचय दीजिए।

13. मनोविश्लेषणात्मक आलोचना में 'ओडिपस कॉम्प्लेक्स' का क्या स्थान है?

14. नई कहानी आंदोलन में कमलेश्वर का दृष्टिकोण क्या था?

15. सांस्कृतिक आलोचना और सामाजिक आलोचना में प्रमुख अंतर को स्पष्ट कीजिए

16. इन्द्रनाथ मदान की आलोचना दृष्टि का परिचय दीजिए।

17. हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में ऐतिहासिक आलोचना का स्थान निर्धारित कीजिए।

(6X5 = 30 Marks)

SECTION - C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

18. हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में भारतेंदु हरिश्चंद्र का स्थान निर्धारित कीजिए।

19. समालोचना के विकास में छायावादी कवियों के योगदान पर लेख तैयार कीजिए।

20. फैंटेसी और कल्पना के बीच अंतर बताएँ और इनका साहित्यिक रचनाओं में महत्व स्पष्ट करें।

21. बच्चन सिंह की आलोचना दृष्टि को स्पष्ट करे और बताएँ कि उन्होंने नई कविता को किस प्रकार समाज और संस्कृति से जोड़ा?

(2X15 = 30 Marks)

NO TO DRUGS തിരിച്ചിറങ്ങാൻ പ്രയാസമാണ്

ആരോഗ്യ കുടുംബക്ഷേമ വകുപ്പ്, കേരള സർക്കാർ

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

हिन्दी आलोचना साहित्य

Course Code: M23HD02DE

SGOU

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

ISBN 978-81-985080-3-4

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841